तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा की मासिक पत्रिका

वर्ष- 10, अंक- 3, फरवरी 2022 , मूल्य-15 रु

schooleducationharyana.gov.in | shikshasaarthi@gmail.com

नई शिक्षा नीति करेगी साकार
ज्ञान, योग्यता और रोज़गार

सरस्वती वंदना

जयति मातु तुम हो वरदानी ।
सब जग पूजे मुनि, जन, ज्ञानी ।।
नित्य करूँ तेरा वंदन माता ।
तुम ही हमारी भाग्य विधाता।।

प्रेम भाव के दीप जलायें।
ज्ञान सदा जग में फैलायें।।
बने जगत में भारत प्यारा।
जग में सुंदर देश हमारा ।।

हर मन होगा जग में पावन ।
सदा जगत होवे मनभावन ।।
राग द्वेष जब सब मिट जायें।
तब सुख मानव मन में पाये ।।

गोपाल कौशल भोजवाल
नागदा, जिला धार, मध्यप्रदेश

तमसो मा ज्योतिर्गमय
शिक्षा सारथी
फरवरी 2022

प्रधान संरक्षक
मनोहर लाल
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संरक्षक
कँवर पाल
शिक्षामंत्री, हरियाणा

मुख्य संपादक
डॉ. महावीर सिंह
अतिरिक्त मुख्य सचिव,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

संपादकीय परामर्श मंडल
डॉ. जे. गणेशन
महानिदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा
एवं
राज्य परियोजना निदेशक,
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद

डॉ.अंशज सिंह
निदेशक,
मौलिक शिक्षा, हरियाणा

सम्वर्तक सिंह
अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन-1)
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

संपादक
डॉ. देवियानी सिंह

उप-संपादक
डॉ. प्रदीप राठौर

डिजाइन एवं प्रिंटिंग
हरियाणा संवाद सोसायटी

मूल्य: 15 रुपये, **वार्षिक**: 150 रुपये

Published & Printed by Dilbag Singh on behalf of President, Shiksha Lok Society-cum-Director General Secondary Education, Haryana. Published from office of Director General Secondary Education, Haryana, Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5, Panchkula.

Printed by M/ s. J.K. Offset Graphic Pvt. Ltd. at its printing press B-278, Okhla, Industrial Area, Phase -I,
New Delhi-110020

Editor: Dr. Deviyani Singh.

"सूर्य और चंद्रमा के बीच में कोई तुलना नहीं है। जब जिसका वक्त आता है तब वह चमकता है।"

» 2025 तक लागू कर देंगे राष्ट्रीय शिक्षा नीति : मुख्यमंत्री 5
» राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू करने की तैयारियों में जुटा विद्यालय शिक्षा विभाग 6
» जोर-शोर से चल रहा है राज्य पाठ्यक्रम ढाँचे के विकास का कार्य 9
» एक बार फिर विश्व गुरु बनने की राह पर भारत 11
» राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 उज्ज्वल भविष्य की उड़ान 12
» राष्ट्रीय शिक्षा नीति : परखें अपना ज्ञान 14
» टिक्कर ताल की वादियों में एडवेंचर गतिविधियाँ 15
» नवाचारी शिक्षा की प्रेरणादायी पुस्तकः तोत्तो-चान 18
» अनेक उपलब्धियाँ जुड़ी हैं सोनीपत के सिसाना स्कूल के नाम 20
» खेल-खेल में विज्ञान 24
» नौनिहालों को सुरक्षित माहौल देने की कवायद 28
» हिंदी प्राध्यापक चावला ने तैयार की डिजिटल ई-व्याकरण 29
» विलक्षण प्रतिभा का धनी है आनंद 30
» बनाये रखें सकारात्मकता 31
» Art & Craft Essential for Overall development of children 32
» Life through the Eyes of a Mathematician 35
» Practices and Challenges for ICT in Education 36
» To Thee I Salute, O Holy Sun 39
» Guru Ravidas : A Great Inspiration for Students 40
» The Mountain Temple 41
» Teacher Trainings -A Value Addition Learning... 42
» Compendium of Academic Courses After +2 44
» I'm Dust 47
» Amazing Facts 48
» General Quiz 49
» आपके पत्र 50

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है।
यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।

वैश्विक परिदृश्य आधारित शिक्षा नीति

काल कोई भी रहा हो, ज्ञान का महत्त्व सदैव रहा है। वर्तमान शताब्दी तो ज्ञान की ही शताब्दी है। आज वही सफल है जो अपने ज्ञान का लोहा मनवाने में सफल है। ऐसे लोग ही किसी देश के असली संसाधन हैं। यह स्वयं सिद्ध है कि किसी देश का विकास वहाँ की शिक्षा-व्यवस्था पर निर्भर करता है। अतएव तेज़ी से बदलते वैश्विक स्तर के अनुरूप शिक्षा-नीति में बदलाव लाना भी वक्त की माँग बन गई थी।

देश की शिक्षा नीति में परिवर्तन को 35 वर्षों के उपरांत स्वीकृति मिली है। यह परिवर्तन प्रारंभिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक में किया गया है। इस नीति के आने से देश और समाज में एक क्रांतिकारी परिवर्तन की संभावना को देखा जा रहा है। पाठ्यक्रम से आगे जाकर विद्यार्थियों की विश्लेषणात्मक सोच को विकसित करने पर बल दिया गया है, विशेष संकाय चुनने के दबाव को समाप्त किया गया है, आरंभिक कक्षाओं से ही विद्यार्थियों को वोकेशनल एक्सपोज़र देने से युवा ज़िंदगी के लिए बेहतर ढंग से तैयार हो सकेंगे। साथ ही देश में ही मनपसंद रोज़गार पाने में सक्षम बनेंगे।

प्रदेश ने इस दिशा में तैयारियाँ आरंभ कर दी हैं। विभिन्न कमेटियाँ समयबद्ध और योजनाबद्ध ढंग से कार्य कर रही हैं। अन्य राज्य भले ही नई शिक्षा नीति को 2030 में लागू करें, लेकिन हरियाणा ने तो पाँच वर्ष पूर्व लागू करने के लिए कमर कस ली है। नई शिक्षा नीति के लिए प्रदेश की तैयारियों की विशद जानकारी प्रस्तुत अंक के माध्यम से दी जा रही है। आइये, पूरे मन से इस नीति का स्वागत करें। 'शिक्षा सारथी' आपकी शिक्षण यात्रा में सदैव आपके साथ है। आपके विचारों, नवाचारों व प्रतिक्रियाओं की हमें सदैव प्रतीक्षा रहती है।

-संपादक

2025 तक लागू कर देंगे राष्ट्रीय शिक्षा नीति : मुख्यमंत्री

इसे लागू करने की समयावधि 2030 तक है, लेकिन हरियाणा इस लक्ष्य को पाँच वर्ष पहले ही हासिल करेगा

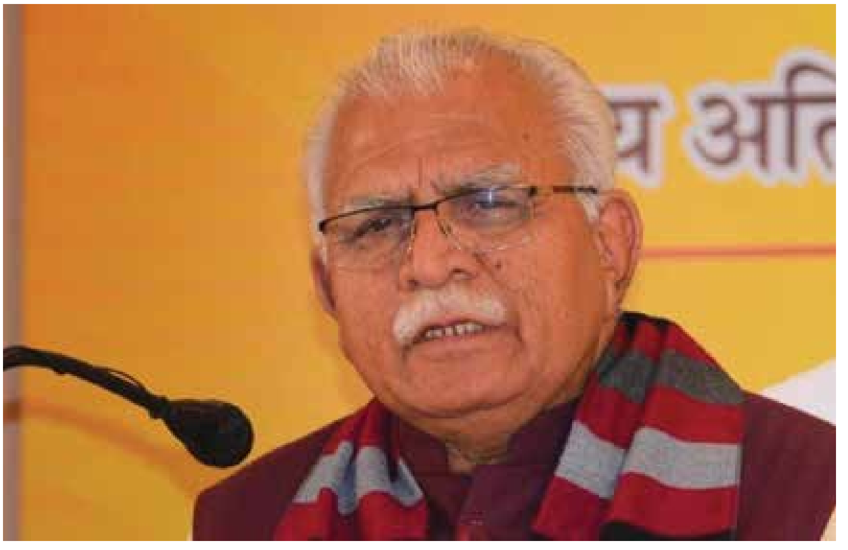

डॉ. प्रदीप राठौर

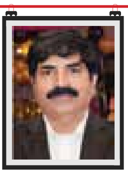

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी)-2020, 21वीं सदी में क्रांतिकारी बदलाव लाने वाली है। इस नीति में शिक्षा एवं रोज़गार के साथ-साथ विद्यार्थियों को संस्कारवान और स्वाबलंबी बनाना है। विद्यार्थी जब तक स्वाभिमानी और स्वावलंबन नहीं होगा, तब तक वह आत्मनिर्भर नहीं बन सकता और भारत का पुनः विश्व गुरु बनने का सपना साकार नहीं हो सकता। इसलिए युवाओं को स्वाभिमान और स्वावलंबी तथा भारतीय बोध का ज्ञान देकर उन्हें शिक्षित करना इस शिक्षा-नीति का मुख्य उद्देश्य है। उक्त विचार मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के औपचारिक लोकार्पण कार्यक्रम में व्यक्त किए।

उन्होंने कहा कि हरियाणा में इस नीति के सफल क्रियान्वयन हेतु प्रदेश में ड्रॉपआउट दर कम करके प्रत्येक बच्चे को स्कूल तक लाया जाएगा, ताकि शिशु अवस्था से ही उसके सर्वांगीण विकास पर जोर दिया जा सके। उन्होंने कहा कि आज़ादी के समय लार्ड मैकाले की वह शिक्षा पद्धति तीन आर : राइटिंग, रीडिंग और अरिथमेटिक पर केन्द्रित थी, जो एक नागरिक का संपूर्ण विकास करने वाली नहीं थी। आज 21वीं सदी में आजादी के 75 साल के बाद देश को एक ऐसी शिक्षा नीति की आवश्यकता है जिससे युवा पीढ़ी शिक्षित तो बने ही, साथ ही उसमें राष्ट्रीयता की भावना भी पैदा हो। इसी उद्देश्य से केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 बनाई है।

उन्होंने कहा कि हरियाणा जिस प्रकार खेलों में सबसे आगे है, उसी प्रकार शिक्षा में भी हरियाणा को अग्रणी बनाना है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करके छात्रों को ज्ञान, कौशल और मूल्यों के साथ सशक्त बनाने के उद्देश्य से हरियाणा में नई शिक्षा नीति को लागू करने के लिए आधारभूत ढाँचा पहले ही तैयार किया गया। इसके बलबूते इस शिक्षा-नीति को वर्ष 2025 तक पूरी तरह लागू किया जाएगा। हालांकि इसको लागू करने की समयावधि 2030 तक है, लेकिन हरियाणा इस लक्ष्य को पाँच वर्ष पहले ही हासिल कर लेगा।

हरियाणा सरकार स्कूलों में ड्रॉपआउट दर कम करके प्रत्येक बच्चे को ट्रैक करेगी। इसके लिए राज्य सरकार द्वारा शुरू की गई परिवार पहचान-पत्र योजना के तहत पंजीकृत हर परिवार के सदस्य का डाटा विश्लेषण किया जाएगा, ताकि प्रत्येक बच्चे को ट्रैक किया जा सके और किसी कारणवश स्कूल में न आने वाले बच्चों को स्कूलों में दाखिला दिलाया जा सके।

उन्होंने कहा कि शिक्षा के लिए सबसे पहले पर्याप्त आधारभूत ढाँचा होना बहुत जरूरी है। इस दिशा में हरियाणा में न केवल पर्याप्त स्कूल कॉलेज हैं, बल्कि विभिन्न विषयों की विशेषज्ञता से युक्त विश्वविद्यालय व विश्वस्तरीय शिक्षण संस्थान भी हैं। उन्होंने कहा कि राज्य में हर विद्यार्थी के घर से 2 से 3 किलोमीटर दूरी के भीतर एक स्कूल अवश्य है। इसी प्रकार हर 20 किलोमीटर के दायरे में कॉलेज उपलब्ध है। फिर भी कहीं कोई कमी महसूस हुई, तो राज्य सरकार तुरंत उसे पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि नई शिक्षा नीति के अनुरूप प्रदेश में प्लेवे स्कूल खोले जा रहे हैं ताकि नई शिक्षा नीति में निहित तीन साल की आयु से बच्चे की शिक्षा आरंभ की जा सके। निजी स्कूलों की तर्ज पर सुविधाएँ और अंग्रेजी में शिक्षा देने के लिए नये संस्कृति मॉडल स्कूल खोले हैं। साथ ही इंग्लिश मीडियम बैग फ्री स्कूल बनाये जा रहे हैं।

श्री मनोहर लाल ने कहा कि प्रदेश में ऐसे शिक्षण संस्थान तैयार किये जा रहे हैं, जिनमें नन्हे बच्चे की केजी कक्षा से युवा विद्यार्थी की पीजी कक्षा तक की शिक्षा प्रदान की जाएगी। हम प्रारंभ में ऐसे चार विश्वविद्यालयों में यह व्यवस्था करने जा रहे हैं।

उन्होंने कहा कि सरकार ने स्कूल से लेकर विश्वविद्यालय तक की शिक्षा को कौशल के साथ जोड़ा है। स्कूलों में एनएसक्यूएफ, कॉलेजों में पहल योजना, विश्वविद्यालयों में इन्क्यूबेशन सेंटर और तकनीकी संस्थानों में उद्योगों की जरूरत के अनुसार प्रशिक्षण के लिए उद्योगों के साथ एमओयू जैसे कारगर कदम उठाये गये हैं।

उन्होंने कहा कि नई शिक्षा नीति का एक अन्य लक्ष्य छठी कक्षा से ही बच्चों को प्रोफेशनल और स्किल की शिक्षा देना है। हरियाणा में हमने स्कूलों में ही बच्चों को विभिन्न कौशलों में निपुण बनाने की व्यवस्था की है। कौशल विकास के लिए हरियाणा सरकार ने एक अलग विश्वविद्यालय श्री विश्वकर्मा कौशल विश्वविद्यालय खोला है।

उन्होंने कहा कि राजकीय विद्यालयों के होनहार विद्यार्थियों के लिए सुपर-100 कार्यक्रम शुरू किया गया है। इस कार्यक्रम से प्रशिक्षित विद्यार्थी लगातार जेईई तथा नीट परीक्षा में बेहतरीन प्रदर्शन कर रहे हैं। अन्य राज्य भी हमारी इस पहल का अनुकरण कर रहे हैं। भविष्य में इस कार्यक्रम को और अधिक विस्तार दिया जाएगा।

- drpradeeprathore@gmail.com

राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू करने की तैयारियों में जी-जान से जुटा विद्यालय शिक्षा विभाग

प्रमोद कुमार

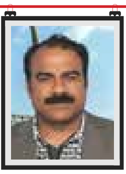

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की अनुपालना- भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय द्वारा जारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 को हरियाणा राज्य संपूर्ण रूप से लागू कर रहा है। शिक्षा के सार्वभौमीकरण के लिये शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 की भाँति निःशुल्क शिक्षा के दायरे को भी बढ़ाया गया है तथा इसका लाभ अब कक्षा 9वीं से 12वीं तक के सभी श्रेणियों/वर्गों के विद्यार्थियों तक पहुँचेगा। ऐसी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा जो 21 वीं सदी की आवश्यकताओं को पूरा करे तथा अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर उपलब्ध अवसरों में भारत की भागीदारी में वृद्धि करे, इसके लिए समुचित प्रबंध किए जा रहे हैं। प्रदेश के विद्यार्थी अन्तरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा में भाग लें और उसमें सफलता अर्जित करें, इसके लिए निःशुल्क समुचित प्रबंध राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के माध्यम से किए जाएँगे। माता-पिता पर पड़ने वाले आर्थिक बोझ को कम किया गया है ताकि बिना आर्थिक भेदभाव के प्रत्येक बच्चा शिक्षा के दायरे में आ सके।

जैसा कि हम सभी जानते हैं 34 वर्षों के उपरान्त आई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 जो नये भारत को अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार होने की सीढ़ी है, जिसमें सांस्कृतिक मूल्यों को पूरा सम्मान दिया गया है, जो बाल-केन्द्रित है, शिक्षा तथा शिक्षक एवं छात्र के अनुकूल है, उसमें इस प्रकार के प्रावधान किये गये हैं कि आर्थिक, सामाजिक तौर पर लाभ से वंचित समूह की शिक्षा में भागीदारी बढ़े, ड्रॉपआउट दर कम हो, लड़कियों की शिक्षा में भागीदारी बढ़े, लाभ से वंचित वर्ग, कमजोर वर्ग, हाशिया पर रहे लोग जिसे श्री दीनदयाल उपाध्याय अन्तिम व्यक्ति कहते हैं, उसी अन्त्योदय के कल्याण के लिए यह शिक्षा नीति-2020 बनाई गई है। इसमें लक्ष्य निर्धारित किया गया है कि विद्यार्थी बीच में शिक्षा न छोड़ें तथा न केवल स्कूली शिक्षा अपितु कॉलेज की शिक्षा भी पूरी करें। इसमें पूर्व प्राथमिक शिक्षा से बारहवीं तक की शिक्षा जो अब 12 वर्ष की अपेक्षा 15 वर्ष की हो गई है तथा 6 वर्ष से 14 वर्ष के दायरे से बढ़ाकर 3 वर्ष से 18 वर्ष की हो गई है। अब इस दायरे को बढ़ाकर पहली से बारहवीं कक्षा के सभी विद्यार्थियों के लिए किया जा रहा है तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 को सम्पूर्ण रूप से लागू करने की दिशा में प्रयास आरम्भ कर दिये हैं।

स्पेशल एजुकेशन ज़ोन तथा जेंडर इनक्लूसन फंड-

शिक्षा में पिछड़े क्षेत्रों, ऐसे क्षेत्र जहाँ अनुसूचित जाति की संख्या बहुतायत में है, ऐसे क्षेत्र जहाँ महिला साक्षरता दर कम है, ऐसे क्षेत्र जहाँ पर प्रवासी मजदूरों की संख्या अधिक है, अर्बन स्लम, इन बिन्दुओं के आधार पर ऐसे खण्डों की पहचान की जाएगी तथा प्रथम चरण में प्रदेश के 19 खण्डों को चुना जा रहा है। वहाँ इन्हें स्पेशल एजुकेशन ज़ोन (एसईजेड) के दायरे में लाया जाएगा तथा यहाँ पर ऐसे प्रोजैक्ट चलाये जाएँगे जो दाखिला वृद्धि में प्रोत्साहन दें। विद्यार्थी, विशेषकर लड़कियों के स्कूल में ठहराव भी बढ़ेंगे, वे अगली कक्षा में दाखिला लेंगी। ड्रॉपआउट रेट शून्य बनाने के लिए वित्तीय प्रोत्साहन भी माता-पिता को दिया जाएगा जिसमें प्रत्येक छात्रा को पहले से दी जा रही विशेष स्कॉलरशिप, निःशुल्क हकदारियों के अतिरिक्त मासिक प्रोत्साहन राशि भी दी जाएगी जिसके लिए जेंडर इनक्लूसन फंड का निर्माण किया जाएगा। इस

फंड में से प्रत्येक मास प्रोत्साहन राशि छात्रा के बैंक खाते में डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर के माध्यम से जारी की जाएगी।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा का प्रबन्ध -

विभाग द्वारा महिला एवं बाल विकास विभाग (डब्ल्यूसीडी) के साथ साँझी योजना बना ली गई है। डब्ल्यूसीडी विभाग, मौलिक शिक्षा विभाग के साथ एससीईआरटी गुरुग्राम को राज्य शैक्षणिक प्राधिकरण होने के नाते प्रशिक्षण, पाठ्यक्रम निर्माण, पाठ्य-पुस्तक निर्माण का कार्य दिया गया है।

राज्य में ईसीसीई निम्न पाँच चरणों में लागू की जाएगी-

प्रथम चरण- ऐसे सभी विद्यालय जिनमें डब्ल्यूसीडी विभाग के आँगनवाड़ी केन्द्र हैं तथा उसकी संचालिका के पास पूर्व प्राथमिक कक्षाओं को पढ़ाने के लिए समुचित शैक्षणिक योग्यता है। ऐसे 1000 केन्द्रों का चयन करके इसी वर्ष से ईसीसीई आरम्भ किया जा रहा है।

दूसरा चरण- ऐसे सभी विद्यालय जहाँ कैम्पस में ही आँगनवाड़ी हैं, उनकी संचालिकाओं को समुचित शैक्षणिक योग्यता प्रदान करके ईसीसीई को लागू किया जाएगा। इसके लिए अगले 2 वर्षों में कार्य किया जाएगा।

तीसरा चरण- ऐसे आँगनवाड़ी केन्द्र जो स्कूल प्रांगण में स्थित नहीं हैं, उन्हें बदलकर स्कूलों में लाया जाएगा तथा संचालिका को क्रमांक-2 के अनुसार प्रशिक्षण दिया जाएगा। इसे 2026 तक किया जाएगा।

चौथा चरण- सभी विद्यालय (8400 प्राथमिक विद्यालय) जो अब भी शेष बचेंगे, वहाँ विद्यालय शिक्षा विभाग अपने प्ले स्कूल चलायेगा। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि विद्यार्थी पाँच वर्ष की आयु प्राप्त करने के बाद स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा प्रस्तावित विशेष पूर्व प्राथमिक कक्षा (बचपनशाला, अंकुर) आदि में पढ़ेगा।

पाँचवा चरण- इसमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुसार जिस बाल-वाटिका का उल्लेख किया गया है वह सरकार के विद्यालयों में, पीआरटी अध्यापकों के माध्यम से 5 वर्ष से अधिक आयुवर्ग के विद्यार्थियों के लिए की जाएगी। डब्ल्यूसीडी विभाग के आँगनवाड़ी केन्द्रों में पूर्व प्राथमिक शिक्षा केवल 2 वर्ष की होगी।

बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान-

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अध्याय-2 के अनुसार सीखने के लिए एक तात्कालिक आवश्यकता एवं पूर्व शर्त अर्थात फाउंडेशन लिटरेसी एंड न्यूमेरेसी मिशन जिसे वर्ष 2021 से ही आरम्भ करके 2025 तक इस लक्ष्य को प्राप्त किया जाना है। इस विषय पर भी राज्य द्वारा समुचित कार्यवाही कर ली गई है, धरातल पर इस योजना को उतारने के लिए अतिरिक्त वित्तीय व्यवस्था कर दी गई है तथा इस वर्ष से ही इस पर कार्य आरम्भ कर दिया जाएगा। इस सन्दर्भ में शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार द्वारा 'बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के कार्यान्वयन के लिए दिशा-निर्देश' बना लिये गये हैं। संस्थायें-एससीईआरटी, सीएसएफ, एलएलएफ, सम्पर्क फाउंडेशन तथा शैक्षणिक शाखा कार्य कर रही हैं। एनसीईआरटी द्वारा बनाए गए लर्निंग आउटकम के आधार पर आगामी कार्यवाही की जा रही है। अप्रैल, 2022 से 'निपुण हरियाणा' स्कूल स्तर पर आरम्भ हो रहा है जिसके लिये 40,000 अध्यापकों का प्रशिक्षण आरम्भ हो गया है। वांछित पठन-पाठन सामग्री, मूल्यांकन, पर्यवेक्षण, जन जागरण के साथ वांछित आईईसी तथा आईसीटी पर कार्य हो रहा है।

अप्रैल-2022 से स्कूल स्तर पर आरम्भ हो जाएगा 'निपुण हरियाणा' कार्यक्रम

राष्ट्रीय स्तर पर निपुण भारत कार्यक्रम का आरम्भ 5 जुलाई, 2021 को माननीय प्रधानमंत्री महोदय द्वारा किया गया है। इसकी निरन्तरता में 31 जुलाई को राज्य में माननीय मुख्यमंत्री महोदय द्वारा 'निपुण हरियाणा' आरम्भ कर दिया गया है। केन्द्र सरकार द्वारा 2026-27 तक कक्षा तीसरी तक के प्रत्येक विद्यार्थी को भाषा (पढ़ना, लिखना, बोलना, सुनना) सभी चारों कौशलों में दक्षता तथा गणित में सामान्य व्यवहार गणित जिसमें गिनती, पहाड़े, जोड़, घटाव, गुणा, भाग, समय, दूरी, आकार के साथ-साथ पैसे का लेनदेन आदि बारे समुचित ज्ञान जिसे आधारभूत भाषायी एवं गणितीय साक्षरता कहा जा रहा है, उपलब्ध कराना है। इस मामले में राज्य द्वारा व्यापक तैयारी कर ली गई है। अप्रैल, 2022 से 'निपुण हरियाणा' स्कूल स्तर पर आरम्भ हो रहा है जिसके लिये 40,000 अध्यापकों का प्रशिक्षण आरम्भ हो गया है। वांछित पठन-पाठन सामग्री, मूल्यांकन, पर्यवेक्षण, जन-जागरण के साथ वांछित आईईसी तथा आईसीटी पर कार्य हो रहा है। राज्य द्वारा एफएलएन के लक्ष्यों को 2025 तक प्राप्त करना है एवं इसमें अंग्रेज़ी भाषा का अतिरिक्त शिक्षण भी शामिल किया गया है। हमारे प्रयास 2017 में आरंभ हो गए थे। हमने राज्य में 'सक्षम' कार्यक्रम इसी उद्देश्य से चलाया था।

सम्वर्तक सिंह
अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन-1)
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

मानक निर्धारण कार्यक्रम-

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की अनुपालना में अध्याय-8 के अनुसार स्कूली शिक्षा के लिए मानक निर्धारण तैयार किया जाना है जिसके लिए राज्य द्वारा इस क्षेत्र में अन्य राज्यों को अपनी विशेषज्ञता प्रदान कर चुकी अन्तरराष्ट्रीय संस्था 'रीच टू टीच' के साथ एमओयू कर लिया गया है, जिसके द्वारा राज्य के 14,000 से अधिक सरकारी तथा 9,000 निजी विद्यालयों के मानक निर्धारण का कार्य आरम्भ किया जा रहा है।

ड्राफ्ट स्टेट करिकुलम फ्रेमवर्क (एससीएफ)-

राज्य द्वारा इस सन्दर्भ में व्यापक योजना बना ली गई है। एससीईआरटी गुरुग्राम के निदेशक की अध्यक्षता वाली कमेटी द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की अनुपालना में स्कूल शिक्षा के लिए राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा बनाने की प्रक्रिया आरम्भ कर दी गई

है जो राष्ट्रीय शिक्षा अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी), नई दिल्ली के मार्गदर्शन में की जा रही है जिसमें पोजीशन पेपर आदि लिखने का कार्य सम्पन्न हो गया है। हालांकि हमारे द्वारा पूरी कार्यवाही कर ली गई है, परंतु अप्रैल-2022 में नए करिकुलम को लागू करने की संभावना नहीं है। इसलिए इसे एनसीईआरटी तथा भारत सरकार से स्वीकृति उपरांत लागू किया जाएगा।

विद्यालयों के बुनियादी ढाँचे के मुद्दे, शिक्षक प्रशिक्षण और शून्य ड्रॉपआउट सुनिश्चित करना-

राज्य द्वारा इस क्षेत्र में अनेक प्रयाय किये जा रहे हैं। स्कूलों में समुचित मात्रा में कमरे तथा फर्नीचर उपलब्ध करवाया जा रहा है। चरणबद्ध तरीके से योजना अनुसार कार्य हो रहा है। नये स्कूल बनाये जा रहे हैं तथा स्कूलों को स्तरोन्नत किया जा रहा है। राजकीय मॉडल संस्कृति स्कूलों की स्थापना हो रही है। गुणवत्ता संवर्धन के लिये अध्यापक प्रशिक्षण हो रहे हैं। विशेष साक्षात्कार से चयनित अध्यापक इन विद्यालयों में लगाये जा रहे हैं। स्कूलों में सुपर-100 जैसे कार्यक्रम के माध्यम से जेईई, आईआईटी, नीट आदि की तैयारियाँ करवाई जा रही हैं। 'बुनियाद' जैसे महत्त्वाकांक्षी कार्यक्रम का आरंभ इसी वर्ष किया जा रहा है जिसके तहत हर जिले में दो केंद्र बनाए गए हैं जिसमें साइंस के उत्कृष्ट विद्यार्थियों को कक्षा नौवीं से जेईई, नीट की तैयारी के साथ-साथ एनटीएसई, केवीपीवाय तथा विभिन्न साइंस ओलंपियाड की तैयारी की जाएगी। राज्य में एनडीए की परीक्षा तथा एसएसबी की तैयारी की महत्वकांक्षी योजना सुपर-100 एनडीए आरंभ कर दी गई है। मुख्यमंत्री दूरवर्ती शिक्षा कार्यक्रम, कोविड-19 के दौरान संचालित किया गया है। 'अवसर' मोबाइल एप, संपर्क मोबाइल एप विद्यार्थियों की गुणवत्ता संवर्धन में सहायक हो रहे हैं। कक्षा 9वीं से 12वीं के 8 लाख विद्यार्थियों को टेबलेट देने का कार्य आरंभ हो गया है। इसी वर्ष कक्षा 9वीं तथा 11वीं के बच्चों को अच्छे ब्रांड के टेबलेट दिये जा रहे हैं। ड्रॉपआउट रोकने के लिये प्रत्येक विद्यार्थी के आधार नम्बर से जुड़े छात्र पंजीकरण संख्या (एसआरएन) के साथ छात्र ट्रैकिंग सिस्टम बनाया जा रहा है। राज्य में 1418 प्राथमिक संस्कृति मॉडल विद्यालय 'बैग फ्री स्कूल' बनाए गए हैं। 137 मॉडल स्कूल बनाए हैं, जिन्हें सीबीएसई बोर्ड से हिंदी अंग्रेजी माध्यम से चलाया जा रहा है। 1000 प्ले स्कूल बनाए गए हैं तथा 1415 क्लस्टर विद्यालयों की स्थापना की गई है, जिनमें साइंस विंग स्थापित किए जा रहे हैं ताकि राज्य में साइंस पढ़ने वाले बच्चों की संख्या को दो गुणा किया जा सके।

एनईपी के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए कुछ अन्य कदम -

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की अनुपालना में ऐसी व्यवस्था की जा रही है जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी के पास अध्यापक हो। अध्यापक रेशनलाइजेशन हो रहा है, हरियाणा के अध्यापकों के लिये बनाई गई ऑनलाइन स्थानान्तरण नीति अन्य राज्यों द्वारा अपनाई जा रही है। राज्य में स्कूल शिक्षा में लगने वाले प्रत्येक अध्यापक पीआरटी, टीजीटी तथा पीजीटी के लिए एच-टैट अनिवार्य है ताकि समुचित क्षमता वाले, उत्कृष्ट योग्यता वाले अध्यापक चयनित हों। अध्यापकों की गुणवत्ता संवर्धन के लिये प्रत्येक स्तर पर प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं जिसमें निष्ठा 1.0 से लेकर 3.0 तक ऑनलाइन तथा अनेक ऑफलाइन कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। हरियाणा लोक-प्रशासन संस्थान यानी हिपा के माध्यम से भी प्रशिक्षण दिये जा रहे हैं। विद्यार्थी 21वीं सदी के कौशलों को ग्रहण करें जिसमें व्यावसायिक एक्सपोजर और कौशल, डिजिटल साक्षरता, कोडिंग और कम्प्यूटेशनल चिंतन, तर्क के साथ-साथ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डिज़ाइन मेकिंग, हॉलिस्टिक हेल्थ, डेटा साइंस आदि उपलब्ध करवाने के लिये इन्क्यूबेशन सेंटर स्थापित किये जा रहे हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति की योजना, निर्माण, क्रियान्वयन सभी पहलुओं पर माननीय मुख्यमंत्री एवं शिक्षामंत्री व्यक्तिगत रुचि ले रहे हैं। एनईपी-2020 के लिए स्कूल शिक्षा विभाग के विभिन्न 10 बिंदुओं पर राज्य स्तरीय कमेटियाँ बनी है जिनमें विभिन्न विशेषज्ञों तथा सभी हितधारकों के सहयोग से राज्य का प्रस्ताव बनाया गया है। एक कमेटी शिक्षामंत्री महोदय की अध्यक्षता में बनी है, जो अपनी सिफारिशें मुख्यमंत्री महोदय को प्रस्तुत करेगी।

राज्य द्वारा नीतिगत फैसला लिया गया है कि 2025 से 4 वर्षीय बीएड योग्यता वाले अध्यापकों की भर्ती की जाएगी तथा पूरी शिक्षा नीति को 2025 तक लागू कर दिया जाएगा। राज्य अपनी पूरी तैयारी के साथ आगे बढ़ रहा है। शिक्षा पर होने वाले खर्च को निवेश मानकर किया जा रहा है ताकि प्रदेश के विद्यार्थी न केवल राष्ट्र में अपितु अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर उपलब्ध अवसरों में अपनी भागीदारी बढ़ा सकें।

राज्य सरकार का यह निरन्तर प्रयास है कि राज्य में राष्ट्रीय शिक्षा नीति की समुचित अनुपालना हो, निर्धारित समय से पहले हो तथा देश में सबसे बेहतर प्रावधान बनाये जायें जिसका अनुसरण अन्य राज्यों द्वारा भी किया जाए।

कार्यक्रम अधिकारी
माध्यमिक शिक्षा विभाग, हरियाणा

जोर-शोर से चल रहा है राज्य पाठ्यक्रम ढाँचे के विकास का कार्य

एससीईआरटी को सौंपी गई है जिम्मेदारी

डॉ. शिवानी कौशिक

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने निम्नलिखित चार राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढाँचे (एनसीएफ) के विकास की सिफारिश की है-

1. बचपन की देखभाल और शिक्षा पर राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा
2. स्कूली शिक्षा पर राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा
3. शिक्षक शिक्षा पर राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा
4. प्रौढ़ शिक्षा पर राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा

शिक्षा मंत्रालय (एमओई) और एनसीईआरटी द्वारा अंतिम रूप दी गई रणनीति के अनुसार, यह निर्णय लिया गया है कि व्यापक परामर्श के माध्यम से देश भर से स्थानीय और स्वदेशी फ्लेवर को शामिल और एकीकृत करके एनसीएफ तैयार किया जाना चाहिए। इस उद्देश्य के लिए, यह निर्णय लिया गया है कि इन चारों पाठ्यक्रमों को पहले राज्यों द्वारा विकसित किया जाना है और फिर इसे एनसीएफ की तैयारी में फीड किया जा सकता है। चार एनसीएफ को अंतिम रूप देने के बाद, राज्य/संघ शासित प्रदेश अपने क्षेत्रों में उनके कार्यान्वयन के लिए एनसीएफ की अंतिम सिफारिशों से इनपुट को अपनाकर/अनुकूलित करके अपने राज्य पाठ्यचर्या ढाँचे को अंतिम रूप देंगे।

एनसीएफ के विकास के लिए प्रमुख सिफारिशें-

- 5+3+3+4 पाठ्यचर्या और शैक्षणिक ढाँचा
- बचपन की देखभाल और शिक्षा
- मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता योग्यता आधारित शिक्षा
- कोई कठिन पृथक्करण नहीं
- पाठ्यचर्या को मूल अनिवार्यता में कम करना
- प्रारंभिक स्तर पर कक्षा 3, 5 और 8 में सीखने के स्तर को बेंचमार्क करना
- व्यावसायिक शिक्षा की पुनर्कल्पना करना
- मूल कौशल और सामग्री की पहचान
- बहुभाषावाद

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के विकास के लिए एक व्यवस्थित प्रक्रिया का पालन किया जाता है। सभी राज्य जिला स्तरीय परामर्श और मोबाइल ऐप सर्वेक्षण के माध्यम से अपने नागरिकों की राय को ध्यान में रखते हुए इन रूपरेखाओं को विकसित करेंगे। इन प्रतिक्रियाओं को एक टेक-प्लेटफॉर्म (www.ncf.ncert.gov.in) पर रिकॉर्ड किया जाएगा और सभी राज्यों को इन सभी पाठ्यक्रमों को टेक प्लेटफॉर्म पर अपलोड करना होगा। इस प्रक्रिया में दिए गए क्रम में निम्नलिखित गतिविधियाँ शामिल होंगी-

1. सभी चार एससीएफ पर जिला स्तरीय परामर्श बैठकें
2. एससीएफ के चारों विषयों पर मोबाइल ऐप सर्वेक्षण
3. पच्चीस विषयों पर स्थिति पत्रों (पोजीशन पेपर) का विकास (एनसीईआरटी द्वारा सभी राज्यों को दिया गया)
4. चार राज्य पाठ्यचर्या ढाँचों का विकास

राज्य पाठ्यचर्या ढाँचे के विकास पर हरियाणा राज्य द्वारा उठाए गए कदमः

एससीईआरटी हरियाणा को चार राज्य पाठ्यचर्या

ढांचे को विकसित करने का काम सौंपा गया है। दो नोडल अधिकारी और एक राज्य तकनीकी समन्वयक तकनीकी सहायता टीम के साथ पूरी प्रक्रिया का समन्वय कर रहे हैं। राज्य स्तर पर निम्नलिखित कदम उठाए गए हैं-

1. एनसीईआरटी द्वारा राज्य तकनीकी टीम का उन्मुखीकरण-

एनसीईआरटी द्वारा 27-28 दिसंबर, 2021 को टेक-प्लेटफॉर्म पर एक अभिविन्यास कार्यक्रम-सह-हैंड्स-ऑन प्रशिक्षण आयोजित किया गया था। राज्य तकनीकी टीम में राज्य नोडल अधिकारी, राज्य तकनीकी समन्वयक, दो जिला समन्वयक, एक प्रोग्रामर और एक डाटा एंट्री ऑपरेटर शामिल हैं।

2. जिला नोडल अधिकारी एवं जिला समन्वयक का उन्मुखीकरण-

जिला नोडल अधिकारी (डाइट प्रिंसिपल/डीईओ) और जिला तकनीकी समन्वयकों (प्रत्येक डाइट से नामांकित) का उन्मुखीकरण 11-13 जनवरी, 2022 को ऑनलाइन मोड के माध्यम से आयोजित किया गया था। परामर्श बैठक के सदस्यों को जोड़ने, बैठकें करने, उपस्थिति अद्यतन करने और परामर्श रिपोर्ट तैयार करने के सभी चरणों के बारे में समन्वयकों को समझाया गया। मोबाइल एप सर्वे की प्रक्रिया के बारे में भी बताया गया।

3. जिला स्तरीय परामर्श बैठकें-

जिला टीमों को जिला स्तरीय परामर्श बैठकें (कम से कम 2 प्रति एससीएफ) आयोजित करनी होती हैं और दिए गए प्रश्नों (टेक-प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध) पर चर्चा करनी होती है। प्रत्येक जिले द्वारा प्रतिक्रियाओं को टेक-प्लेटफॉर्म पर अपलोड किया जाना है। सभी चार विषयों के परामर्श समूहों में माता-पिता/अभिभावक, छात्र (स्कूल/उच्च शिक्षा संस्थानों से), विषय विशेषज्ञ, विद्वान, स्थानीय समुदाय के सदस्य, कार्यकर्ता, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, गैर-साक्षर, नव-साक्षर आदि शामिल होने चाहिए।

4. मोबाइल ऐप सर्वे-

एससीएफ सर्वेक्षण नामक मोबाइल ऐप का उपयोग करके किया जाना है, जिसे पंजीकृत सर्वेक्षक प्ले स्टोर से डाउनलोड कर सकते हैं। टेक-प्लेटफॉर्म पर प्रति जिले 15 सर्वेक्षकों का चयन और पंजीकरण किया गया है। प्रत्येक सर्वेक्षक को 10 उत्तरदाताओं तक पहुँचना होता है। उत्तरदाताओं में माता-पिता/अभिभावक, छात्र (स्कूल/उच्च शिक्षा संस्थानों से), विषय विशेषज्ञ, विद्वान, स्थानीय समुदाय के सदस्य, कार्यकर्ता, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, गैर-साक्षर, नव-साक्षर आदि शामिल होंगे।

सभी जिला समन्वयकों ने 20-22 जनवरी, 2022 तक सर्वेयर प्रशिक्षण आयोजित किया। हरियाणा के सभी जिलों में 3 फरवरी, 2022 से मोबाइल ऐप सर्वेक्षण शुरू हुआ।

5. 25 राज्य फोकस समूह समितियों का गठन-

पोजीशन पेपर के प्रत्येक विषय के साथ एक डाइट जुड़ी है और 10-12 सदस्यों की एक टीम गठित की गई है। प्रत्येक दल ने पोजीशन पेपर के विकास के लिए 2-3 बैठकें की गई हैं। सभी जिला टीमों ने जिला स्तरीय परामर्श बैठक व मोबाइल ऐप सर्वे की प्रक्रिया शुरू कर

व्यवस्थित सुधार
स्कूली शिक्षा और उच्च शिक्षा के बीच संबंध
कौशल आधारित शिक्षा के लिए प्रणालीगत प्रतिक्रिया
परीक्षा सुधार और समग्र प्रगति कार्ड
स्कूल-समुदाय संबंध (एचपीसी)
माध्यमिक कक्षाओं में विषयों के चयन में लचीलापन
संसाधन संगठनों को मजबूत बनाना
पाठ्यपुस्तक डिजाइन और विकास

राज्य ने स्थिति पत्रों (पोजीशन पेपर) के 25 विषयों पर 25 फोकस समूहों का गठन किया है-

क्रमांक	पाठ्यचर्या और शिक्षाशास्त्र संबंधी (12)
1.	शिक्षा का दर्शन
2.	पूर्व-विद्यालय शिक्षा और मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता
3.	पाठ्यचर्या और शिक्षाशास्त्र
क.	समग्र, आनंददायक और आकर्षक पाठ्यचर्या और शिक्षाशास्त्र
ख.	स्कूल पाठ्यक्रमः राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय शोध
ग.	21वीं सदी में स्कूली शिक्षा के लिए नए पाठ्यचर्या क्षेत्रः मुद्दे और प्रणालीगत आवश्यकताएँ
4.	सामाजिक विज्ञान में शिक्षा
5.	व्यावसायिक शिक्षा
6.	कला शिक्षा
7.	विज्ञान- शिक्षा
8.	गणित शिक्षा और कम्प्यूटेशनल सोच
9.	भाषा शिक्षा
10.	पर्यावरण शिक्षा
11.	स्वास्थ्य और वैल-बीइंग
12.	परीक्षा और समग्र प्रगति कार्ड में सुधार
क्रॉस कटिंग थीम्स (5)	
1.	भारत का ज्ञान
2.	मूल्य शिक्षा
3.	समावेशी शिक्षा
4.	लिंग शिक्षा
5.	स्कूली शिक्षा के लिए शैक्षिक प्रौद्योगिकी
एनईपी, 2020 के अन्य महत्त्वपूर्ण क्षेत्र (8)	
1.	शिक्षक-शिक्षा
2.	स्कूलों के लिए मार्गदर्शन और परामर्श
3.	स्कूल शासन और नेतृत्व
4.	गुणवत्तापूर्ण पाठ्य और गैर-पाठ्य सामग्री का प्रकाशनः मुद्दे, चुनौतियाँ और आगे की राह
5.	स्कूली शिक्षा और उच्च शिक्षा के बीच संबंध
6.	स्कूली शिक्षा के वैकल्पिक तरीके
7.	शिक्षा में समुदाय की उभरती भूमिका
8.	प्रौढ़ शिक्षा

दी है। एससीएफ के विकास के लिए एससीईआरटी टेक टीम द्वारा सभी जिला टीमों की समीक्षा बैठकें आयोजित की जा रही हैं। राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा को राष्ट्रीय स्तर पर अंतिम रूप दी गई प्रक्रिया के अनुसार अंतिम रूप दिया जाएगा।

विषय विशेषज्ञ, रीप सेल, एससीईआरटी हरियाणा
(राज्य तकनीकी समन्वयक एससीएफ)

एक बार फिर विश्व गुरु बनने की राह पर भारत

धर्म सिंह गहली

लंबे अर्से बाद भारत ने अपनी राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन का ऐतिहासिक फैसला लिया है। संसार में शायद भारत ही एक ऐसा देश होगा जिसमें नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति को तैयार करने के लिए छात्रों, अभिभावकों, विशेषज्ञों, शिक्षाविदों, राजनीतिज्ञों और ग्राम समितियों के दो लाख से अधिक लोगों की राय ली गई हो। क्लर्क पैदा करने वाली मैकाले की शिक्षा नीति का अंधानुसरण त्याग कर ही शिक्षा के नये आयामों को प्राप्त किया जा सकता है। नई शिक्षा नीति का सूत्रपात करने में हरियाणा एक अग्रणी राज्य की भूमिका निभाने जा रहा है। हरियाणा के मुख्यमंत्री 2025 तक हरियाणा में इस नीति को लागू करने की घोषणा कर चुके हैं। नई शिक्षा नीति पढ़े-लिखे बेरोजगारों की बढ़ती संख्या पर अंकुश लगाकर व्यावसायिक व कौशल आधारित शिक्षा के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करके, उनके ज्ञान कौशल व मूल्यों को बढ़ाकर उनकी रोज़गार क्षमता को बढ़ाएगी। अब इतिहास पढ़ने वाला छात्र जीव विज्ञान भी पढ़ सकेगा। नई शिक्षा नीति बहुविषयक शिक्षा पर आधारित होगी इसमें छात्र अपनी मनपसंद के कोई भी विषय चुन सकेगा। जिससे अपनी योग्यता, पसंद व सुविधा के अनुसार विषय का चुनाव करने पर परिणाम अवश्य ही सकारात्मक होंगे। महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए उच्चतर शिक्षा में उनकी भागीदारी को 32 प्रतिशत से बढ़ा कर 50 प्रतिशत किया जाएगा। इसके लिए और अधिक महिला कॉलेज खोले जाएँगे। प्रत्येक 20 किमी के दायरे में एक कॉलेज होगा। इस नीति में व्यावसायिक व कौशलयुक्त शिक्षा पर बल देना एक अच्छी बात है, क्योंकि कौशल विकास के बल पर ही किसी विषय में दक्षता हासिल की जा सकती है।

नई शिक्षा नीति में पाँचवीं कक्षा तक का बच्चा स्थानीय भाषा में शिक्षा अर्जित करेगा। इससे वह विषय को आसानी से समझ व सीख सकेगा और अपने भावों की अभिव्यक्ति में संकोच नहीं करेगा। क्षेत्रीय भाषा में पढ़ने से छात्र अंग्रेज़ी की दासता से बाहर आकर अधिक आज़ादी उत्साह और गर्व के साथ विषय-वस्तु को ग्रहण कर सकेगा। हरियाणा में विश्वकर्मा कौशल विश्वविद्यालय स्थापित किया जा चुका है। यहाँ छात्रों को उनकी पसंद के अनुरूप विभिन्न कौशलों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। नई शिक्षा नीति के तहत तीन वर्ष के बच्चों को पूर्व प्राथमिक कक्षा में नामांकन किया जाएगा। यह शिक्षा आँगनवाड़ी केंद्रों के माध्यम से प्लेवे स्कूल के द्वारा दी जाएगी। यह अनौपचारिक शिक्षा खेल व गतिविधियों पर आधारित होगी, जिससे बच्चा बिना किसी भय से खेल-खेल में ही शिक्षा ग्रहण करेगा। आँगनवाड़ी वर्कर, शिक्षकों व सुपरवाइजरों को मौका दिया जाएगा। ड्रॉपआउट दर 2025 तक शून्य किया जाएगा। ड्रॉपआट बच्चों को मुख्यधारा में लाने के लिए नामांकन पर बल दिया जाएगा। इसके लिए प्रत्येक बच्चे की ट्रेकिंग करने में उनकी माताओं व अभिभावकों, शिक्षकों व समुदाय का सहयोग लिया जाएगा। नई शिक्षा नीति पर आधारित और अधिक मॉडल संस्कृति स्कूल खोलने की आवश्यकता है। हरियाणा में नई शिक्षा नीति के बहुत सारे पहलू पहले से ही लागू हैं, जैसे- बैग फ्री शनिवार, जॉयफुल गतिविधियाँ, ईको क्लब, एडवेंचर भ्रमण, MAT, PTM, निष्ठा आदि। ऑनलाइन ट्रांस्फर शिक्षकों के लिए वरदान साबित हो रही है।

नई शिक्षा नीति राष्ट्रीयता, नैतिकता, संस्कृति, रोज़गार व व्यवसाय उत्पन्न करने वाली होगी। देश में नालंदा जैसी बहुत सारी शिक्षण संस्थाएँ होंगी, जहाँ छात्रों को स्वर्ग जैसी अनुभूति होगी। ऐसी संस्थाओं में शिक्षा ग्रहण करके छात्र गर्व का अनुभव करेंगे। यदि इस शिक्षा नीति को ठीक प्रकार से क्रियान्वित किया जाता है और यह अपने उद्देश्य की प्राप्ति में सफल होती है तो वह दिन दूर नहीं जब भारत एक बार पुनः विश्व गुरु बनकर संसार का मार्ग प्रशस्त करेगा।

रसायन विज्ञान प्रवक्ता
राकवमा विद्यालय, दुलोठ अहीर
जिला- महेंद्रगढ़, हरियाणा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020
उज्ज्वल भविष्य की उड़ान

सुरेंद्र बंसल

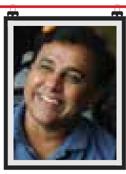

स्वामी विवेकानंद ने कहा था, 'जनता को शिक्षित बनाओ और उनका सर्वांगीण विकास करो... तभी राष्ट्र का विकास संभव है।'

आज़ादी के बाद के 75 वर्षों में एक देश के रूप में हमने औद्योगिक उत्पादन, विविध सेवा क्षेत्र, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियों के विस्तार, परमाणु हथियार और संयंत्रों के विकास से लेकर सबसे नई उपलब्धि, कोरोना वायरस के खिलाफ स्वदेशी वैक्सीन तैयार करने तक उल्लेखनीय प्रगति की है। इन उपलब्धियों ने हमें दुनिया में एक महत्वपूर्ण आर्थिक शक्ति के तौर पर स्थापित भी किया है। हाल में की गईं भविष्यवाणियाँ यह संकेत भी दे रही हैं कि 2030-2032 तक भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था (10 ट्रिलियन) बन जाएगा। इस अर्थव्यवस्था का यह लक्ष्य केवल प्राकृतिक संसाधनों की मदद से हासिल नहीं हो सकता, इसमें अहम भूमिका ज्ञान के जरिए विकसित संसाधनों की भी होगी।

शिक्षा क्षेत्र के स्वरूप में आमूल-चूल सुधार करने के लिए वर्तमान सरकार ने एक व्यापक राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एनईपी-2020) पेश की। शिक्षा प्रणाली का यह एक ऐसा रूप है जो भारतीय पारम्परिक ज्ञान पर केंद्रित है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली स्नातकों में अनुसंधान के लिए रुचि, या उसके लिए उपयुक्त माहौल तैयार करने में विफल रही है, जिससे नए पेटेंट हासिल करने और ज्ञानवर्धक किताबों के प्रकाशनों में हम लगातार पिछड़ते रहे हैं। इन सब बिंदुओं पर ध्यान देते हुए एक नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एनईपी-2020) तैयार हुई। आशा है कि यह पिछली शिक्षा नीतियों की सारी कमियों को दूर कर देश के उज्ज्वल भविष्य का मार्ग प्रशस्त करेगी।

संभावित चुनौतियाँ

एनईपी-2020 के वादे निश्चित रूप से महत्त्वाकांक्षी हैं इसके माध्यम से हम रोज़गार की दिशा में उज्ज्वल

भविष्य की शुरुआत कर रहे हैं। प्रत्येक नीति के साथ चुनौती केवल एक ही रहती है कि वह अनुशासित ढंग से लागू हो।

अड़चनों भरा रास्ता

हमारी प्राथमिक शिक्षा प्रणाली उपयुक्त संसाधनों के अभाव के साथ-साथ प्रशिक्षित शिक्षकों की भारी कमी से जूझ रही है। ऐसे में हाई स्कूल स्तर पर विभिन्न व्यावसायिक विषय संबंधी अपेक्षित प्रशिक्षण उपलब्ध कराना एक मुश्किल काम होगा। इसलिए राज्य सरकारों को हमारे स्कूलों में व्यावसायिक विषयों के प्रशिक्षकों को भर्ती करने के लिए बड़ा अभियान चलाने की आवश्यकता होगी।

महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों के मौजूदा स्तर के आधार पर शोध के लिए सहायता राशि के वितरण पर काफी भेदभाव अनुभव हो सकता है। संभव है कि अधिकांश राशि पहले से स्थापित संस्थानों के हिस्से चली जाए और कम सुविधा वाले महाविद्यालयों और शैक्षणिक संस्थानों को खुद को बेहतर करने का मौका ही न मिले। इससे गुणवत्ता के मानक पर वे और निचली पायदान पर खिसक सकते हैं।

अमल संबंधी चुनौतियों के बावजूद एनईपी 2020 युवा पीढ़ी के उज्ज्वल भविष्य और शिक्षा प्रणाली में उल्लेखनीय बदलाव की आशा लेकर आयी है। आवश्यकता है तो बस उपयुक्त कार्यान्वयन और विभिन्न सरकारी एजेंसियों, राज्य सरकारों, नीति निमार्ताओं, निजी क्षेत्रों, शिक्षाविदों और सामाजिक कार्यकर्ताओं को अपना बहुमूल्य योगदान देकर एनईपी 2020 की सफलता सुनिश्चित करने में भरपूर प्रयास करना चाहिए।

रिसर्च प्रोजेक्ट अनिवार्य

परा-स्नातक की अवधि एक से दो साल रखी गई है जिसमें अनुसंधान संबंधी एक निश्चित स्तर की क्षमताओं के साथ एमए की पूर्ण डिग्री प्राप्त करने के लिए बेहतर विशेषज्ञता और अनुसंधान पर ध्यान केंद्रित किया गया है जिससे उच्च शिक्षा की सभी प्रणालियों में रिसर्च एंड एनालिसिस दृष्टिकोण विकसित करने में मदद मिलेगी। एमफिल डिग्री खत्म कर दी गई है, क्योंकि छात्रों में स्नातक और परा-स्नातक पाठ्यक्रमों के दौरान प्रारंभिक शोध क्षमताएँ विकसित होने लगेंगी।

पीएचडी अनिवार्य

एनईपी-2020 लागू होने के बाद सहायक प्रोफेसर बनने के लिए अब पीएचडी डिग्री अनिवार्य कर दी गई है जो पहले नहीं थी। किसी भी तीन प्रकार के उच्च शिक्षा संस्थानों से नेट या एसएलईटी में पास होना भी अनिवार्य है। ये मानक ऊँची शिक्षा उपलब्ध कराने के माहौल को बेहतर करेंगे और नई पीढ़ी के छात्रों को सुयोग्य शिक्षक और शोध क्षेत्रों में कुशल मार्गदर्शक प्रदान करेंगे।

विदेशी विश्वविद्यालय अब भारत में

नई एनईपी-2020 के अनुसार, शीर्ष पायदान के

100 विश्वविद्यालयों को भारत में सीधे कार्य करने की अनुमति दी जाएगी। यह ज्यादा बेहतर और सुयोग्य शिक्षकों और प्रतिभाशाली छात्रों को आकर्षित करने के लिए एक स्वस्थ प्रतिस्पर्धी माहौल को प्रोत्साहित करेगा, जो हमारी शिक्षा प्रणाली के स्तर को बेहतर बनाएगा। पीएचडी कार्यक्रम के पाठ्यक्रम में अनुसंधान पद्धति, आवश्यक पाठ्यक्रम के विकास जैसे पहलू भी शामिल होंगे।

विषय चुनने की आजादी

कॉलेज में प्रवेश से पूर्व स्कूल स्तर के लिए बड़े सार्थक परिवर्तन किए गए हैं। इसमें छात्र को 12वीं के स्तर पर अपनी रुचि का विषय चुनने की स्वतंत्रता दी गई है। जबकि वर्तमान प्रणाली में ये विकल्प नहीं हैं। संशोधित एनईपी-2020 में छात्र इंटरमीडिएट स्तर पर विज्ञान के एक विषय के साथ मानविकी, इतिहास, दर्शन या वाणिज्य से कोई भी दूसरा विषय भी चुन सकता है। इससे छात्र को कॉलेज, डिग्री या स्नातक और एमए में किसी भी विषय को चुनने की अतिरिक्त स्वतंत्रता मिलेगी।

अर्जित अंकों का हस्तांतरण

एनईपी लागू होने के बाद छात्र चार वर्षीय डिग्री प्रोग्राम शुरू कर सकते हैं। अगर दो साल बाद उन्हें विषय दिलचस्प नहीं लगता तो वे उसे छोड़ अन्य विषय चुन पढ़ाई जारी रख सकते हैं, साथ ही पहले विषय में हासिल अंकों को बाद में चुने विषय के परीक्षा-अंकों में जोड़कर डिग्री हासिल कर कर सकते हैं। अगर वे दो साल ही पढ़ाई करते हैं तो उन्हें एडवांस डिप्लोमा मिलेगा; अगर वे तीन वर्ष का पाठ्यक्रम पूरा करते हैं तो उन्हें डिग्री मिलेगी। चार वर्ष का प्रोजेक्ट रिसर्च प्रशिक्षण पूरा होने पर उन्हें स्नातक की पूर्ण डिग्री प्रदान की जाएगी।

रिसर्च प्रोजेक्ट अनिवार्य

इसी तरह परा-स्नातक की अवधि एक से दो साल रखी गई है जिसमें अनुसंधान संबंधी एक निश्चित स्तर की क्षमताओं के साथ एमए की पूर्ण डिग्री प्राप्त करने के लिए बेहतर विशेषज्ञता और अनुसंधान पर ध्यान केंद्रित किया गया है जिससे उच्च शिक्षा की सभी प्रणालियों में रिसर्च एंड एनालिसिस दृष्टिकोण विकसित करने में मदद मिलेगी।

राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन का गठन

सभी विषयों और पाठ्यक्रमों में प्रतिस्पर्धी, नवाचार और समाधान से जुड़े अनुसंधान प्रस्तावों को निधि मुहैया कराने के लिए विभिन्न वित्त पोषण एजेंसियों के बजाय एक राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन का गठन किया जाएगा।

वरिष्ठ या सेवानिवृत्त शिक्षकों को छोटी या लंबी अवधि के लिए फिर से नियुक्त किया जाएगा जो अनुसंधान से जुड़े नवाचार के लिए मार्गदर्शन और पेशेवर सहायता प्रदान करने में मदद करेंगे। उच्च शिक्षा में इन सभी सुविधाओं को उपलब्ध कराने के लिए एक राष्ट्रीय परामर्श मिशन की स्थापना की जाएगी।

एनईपी-2020 में मिडिल स्कूल स्तर पर व्यावसायिक प्रशिक्षण को भी शामिल किया गया है। इस कदम से विविध रुचियों वाले उन छात्रों की कौशल क्षमता के विकास के अवसर उपलब्ध होंगे जिनके पास वह विशेषता या क्षमता मौजूद तो थी, पर उनके लिए स्कूल स्तर पर कोई सुविधा उपलब्ध नहीं थी। साथ ही अन्य व्यावसायिक क्षेत्रों जैसे बढ़ई, कुम्हार, लैंडस्केप, बागवानी और अन्य संबंधित तकनीकी विषयों पर भी स्कूल स्तर पर प्रशिक्षण मुहैया कराया जाएगा। स्कूली पाठ्यक्रम में इसका समावेश निश्चित रूप से छात्रों की वास्तविक रुचि को जल्दी पहचानने में मदद करेगा और उसी के अनुसार उनके जीवन का मार्गदर्शन करेगा।

लेखक स्वतंत्र लेखक व पर्यावरणविद् है।
मो.9671708624

राष्ट्रीय शिक्षा नीति : परखें अपना ज्ञान

सुनील कुमार

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के किस स्टेज में 3 से 8 साल तक के बच्चों को सम्मिलित किया गया है?

उत्तरः फाउंडेशन स्टेज

2. नई शिक्षा नीति के अनुसार अब पहली से पाँचवीं कक्षा तक की शिक्षा किस भाषा में अनिवार्य कर दी गई है?

उत्तरः मातृभाषा

3. मानव संसाधन विकास मंत्रालय का नाम बदल कर क्या कर दिया गया है?

उत्तरः शिक्षा मंत्रालय

4. किस कक्षा के बाद से ही वोकेशनल कोर्स शुरू किये जाएँगे, जिसमें इच्छुक विद्यार्थी इंटर्नशिप कर सकें ?

उत्तरः छठी कक्षा

5. संगीत और कला को बढ़ावा देने के लिए इन्हें किन कक्षाओं के पाठ्यक्रम में शामिल किया जाएगा?

उत्तरः सभी

6. ई-पाठ्यक्रम को बढ़ावा देने के लिए कौन सा पोर्टल विकसित किया जा रहा है?

उत्तरः राष्ट्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी फोरम

7. किस वर्ष तक शिक्षण के लिए न्यूनतम डिग्री योग्यता चार वर्षीय एकीकृत बीएड होने जा रही है?

उत्तरः 2030 तक

8. नई शिक्षा नीति के तहत एमए के बाद की जाने वाली किस डिग्री को समाप्त कर दिया गया है?

उत्तरः एमफिल

9. स्वतंत्र भारत के इतिहास में अब तक कितनी बार शिक्षा नीतियाँ आ चुकी हैं?

उत्तरः तीन बार

10. 1986 में जो शिक्षा नीति लागू की गई थी, उसमें बदलाव कब किया गया था?

उत्तरः 1992 में

11. नई शिक्षा नीति के अनुसार अब पीएचडी करने के लिए क्या अनिवार्य कर दिया गया है?

उत्तरः 4 साल की स्नातक डिग्री

12. भारत में पहली राष्ट्रीय शिक्षा नीति की घोषणा किस वर्ष की गई थी?

उत्तरः 1968 में

13. नीति के अनुसार उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात कितना प्रतिशत बढ़ाया जाएगा?

उत्तरः 50%

14. भारत में दूसरी राष्ट्रीय शिक्षा नीति की घोषणा किस वर्ष की गई थी?

उत्तरः 1986 में

15. भारत में नई शिक्षा नीति-2020 की घोषणा कितने वर्षों के बाद की गई है?

उत्तरः 34 वर्ष

16. नीति के अनुसार कक्षा 1 से 2 तक के विद्यार्थियों को प्रतिदिन कितने घंटे का गृह-कार्य निर्धारित किया गया है?

उत्तरः कोई गृह-कार्य नहीं दिया जायेगा

17. नीति की मसौदा समिति के अध्यक्ष कौन हैं?

उत्तरः डॉ कृष्णास्वामी कस्तूरीरंगन

18. नीति के अनुसार कक्षा 1 से 10 तक बस्ते का वजन विद्यार्थियों के वजन का कितने प्रतिशत होना चाहिए?

उत्तरः 10%

19. राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 को कैबिनेट की मंजूरी कब मिली?

उत्तरः 29 जुलाई, 2020

20. राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 को किस शिक्षा नीति की जगह पर लागू किया गया है?

उत्तरः राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986

21. नीति में कितनी आयु वर्ग तक के बच्चों को शिक्षा अधिकार अधिनियम-2009 के अन्तर्गत रखा गया है?

उत्तरः 3-18 साल के आयु वर्ग को

22. पाँचवीं कक्षा तक की शिक्षा किस भाषा में होगी?

उत्तरः मातृभाषा, स्थानीय भाषा या क्षेत्रीय भाषा

23. नीति का लक्ष्य किस वर्ष तक 03-18 आयु वर्ग के प्रत्येक बच्चे को गुणवत्तापूर्ण व समावेशी शिक्षा प्रदान करना है?

उत्तरः वर्ष 2030 तक

24. किस वर्ष तक स्कूली शिक्षा में 100% ग्रॉस एनरोलमेंट रेशो यानी जीईआर के साथ माध्यमिक स्तर तक 'सभी के लिए शिक्षा' का लक्ष्य रखा गया है?

उत्तरः वर्ष 2030 तक

25. शिक्षा पर, सकल घरेलू उत्पाद का कितने प्रतिशत खर्च किया जाएगा?

उत्तरः 6%

26. मेडिकल और लॉ एजुकेशन को छोड़कर समस्त उच्च शिक्षा के लिए एकल निकाय के रूप में, किस आयोग का गठन किया जाएगा ?

उत्तरः Higher Education Commission of India

27. स्कूल पाठ्यक्रम के 10+2 पैटर्न के स्थान पर अब कौन सा पैटर्न होगा?

उत्तरः 5+3+3+4 पैटर्न

28. वोकेशनल कोर्स किस कक्षा से शुरू किए जाएँगे?

उत्तरः कक्षा 6 से

29. देश में शोध और अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए किस संगठन की स्थापना की जाएगी?

उत्तरः नेशनल रिसर्च फाउंडेशन

30. राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुसार बच्चे के मस्तिष्क का 85 प्रतिशत विकास किस अवस्था से पूर्व हो जाता है?

उत्तरः 6 वर्ष की अवस्था से पूर्व

31. नीति में किस वर्ष तक नेशनल मिशन के माध्यम से फाउंडेशन लर्निंग एंड न्यूमैरिक्स स्किल्स को बनाए रखने का लक्ष्य रखा गया है?

उत्तरः वर्ष 2025

32. राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अंतर्गत किस निकाय की स्थापना की जायेगी जो छात्रों के प्रदर्शन का आकलन करेगा?

उत्तरः परख (PARAKH)

33. किस राष्ट्रीय शिक्षा नीति में 1992 में संशोधन किया गया था?

उत्तरः द्वितीय शिक्षा नीति

34. नीति के अंतर्गत स्कूली शिक्षा को कितने स्तर पर बाँटा गया है?

उत्तरः तीन स्तर पर

35. नीति किसकी अध्यक्षता में तैयार की गई है?

उत्तरः के. कस्तूरीरंगन

36. नीति में प्रौद्योगिकी के उपयोग पर विचारों के मुक्त आदान-प्रदान को मंच प्रदान करने के लिए किस की स्थापना की जाएगी?

उत्तरः नेशनल एजुकेशन टेक्नोलॉजी फोरम

37. किस स्टेज में 8 से 11 साल तक के बच्चों को सम्मिलित किया गया है?

उत्तरः प्रिपरेटरी स्टेज

38. किस स्टेज में 11 से 14 साल तक के बच्चों को सम्मिलित किया गया है?

उत्तरः मिडल स्टेज

39. किस स्टेज में 14 से 18 साल तक के बच्चों को सम्मिलित किया गया है?

उत्तरः सेकेंडरी स्टेज

40. कक्षा 3 से 5 तक के विद्यार्थियों को प्रतिदिन कुल कितने घंटे का गृह-कार्य निर्धारित किया गया है?

उत्तरः 2 घंटे

हिंदी प्राध्यापक
राआसंवमा विद्यालय इस्माइलाबाद
कुरुक्षेत्र, हरियाणा

टिक्कर ताल की वादियों में एडवेंचर गतिविधियाँ

डॉ. ओमप्रकाश कादयान

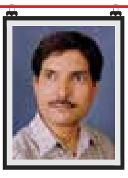

हरियाणा के मैदानी भागों में रहने वाले बहुत से लोगों को ये नहीं पता कि हरियाणा के मोरनी क्षेत्र में ऊँचे-ऊँचे पहाड़, गहरे जंगल हैं तथा उनमें कुछ झरने, उनमें सैकड़ों प्रकार के रंग-बिरंगे पक्षी, बड़ी संख्या में मोर, बहुत से तेंदुए, हिरण, बारहसिंगे, जंगली मुर्गे, जंगली बकरे, सियार, लोमड़ी तथा अन्य ढेर सारे जंगली जानवर भी वास करते हैं। कम पानी की ही सही कई छोटी-बड़ी नदियाँ, नाले हैं। पहाड़, जंगल, घाटियाँ, सीढ़ीदार-खेत ऐसे हैं कि हमें हिमाचल के पहाड़ों-सा एहसास होता है। इसके साथ बहुत ही कम लोगों को ये पता नहीं कि हरियाणा के ऊँचे पहाड़ों में कई खूबसूरत झीलें हैं, जहाँ पहुँचकर पर्यटक अपने को धन्य समझते हैं तथा पर्वतीय सौंदर्य व झीलों के आकर्षण का पूरा लुत्फ उठाते हैं। इन्हीं झीलों में से दो झीलें पर्यटकों का ध्यान अधिक खींचती हैं वे हैं मोरनी क्षेत्र को दो ताल, जिन्हें

टिक्कर ताल भी कहा जाता है। एक झील तो केवल खेती-बाड़ी व लोगों की प्यास बुझाने के काम आती है, दूसरी बड़ी झील पर पर्यटन विभाग ने पर्यटकों की सुविधा के लिए कई इमारतें बनाई हुई हैं। यहाँ हर रोज पर्यटक आते हैं। शनिवार-रविवार को संख्या अधिक होती है।

हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग अनेक ऐसी योजनाएँ बनाता है जिससे हरियाणा के सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले प्रतिभाशाली छात्र-छात्राएँ हरियाणा व देश को जानें। वे अपने स्कूल, घर, गाँव से बाहर निकलकर पुस्तकों के बाहर का ज्ञान भी प्राप्त करें या जो किताबों में पढ़ते आए हैं वो अपनी आँखों से देखें। प्रकृति व देश की संस्कृति को जानें। एडवेंचर टूर इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए आयोजित किए जाते हैं। अब की बार कक्षा 9 से 12वीं के विद्यार्थियों के लिए एडवेंचर कैंप के लिए मोरनी क्षेत्र चुना गया ताकि हरियाणा के मैदानी भागों में रहने वाले विद्यार्थी हरियाणा में स्थित खूबसूरत, ऊँचे पहाड़ों को देख सकें, वो हरियाणा के इन क्षेत्रों से भी परिचित हो सकें। हरियाणा भर से चुने गए ग्यारह-सौ प्रतिभावान विद्यार्थियों का कैंप मल्लाह, मोरनी व टिक्कर-ताल में लगाया गया। टिक्कर ताल में ग्यारह जिलों के 550 विद्यार्थियों के चार

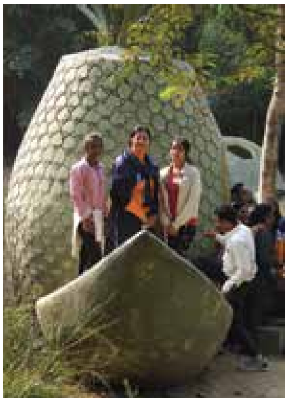

स्थानों पर कैंप लगाये गए। शिक्षा विभाग द्वारा भेजा पत्र मुझे मिला जिसमें कोऑर्डिनेटर के रूप में मेरी ड्यूटी टिक्कर ताल लगाई गई थी। मुझे नई जगह देखने तथा फोटोग्राफी के सुनहरे अवसर दिखाई दिए। बैग तैयार करके मैं फतेहाबाद के बच्चों के साथ टूर पर निकल लिया। करीब छह घंटे के सफर के बाद ज़ीरकपुर-कालका रोड से हमारी बस दाईं ओर मुड़ गई चंडीमंदिर मोड़ से। उससे पहले एक अन्य रास्ता भी जाता है, किंतु वहाँ अधिक चढ़ाई व ज्यादा मोड़ हैं। बच्चों को चक्कर व उल्टियों का खतरा अधिक होता है। वैसे ये रास्ता अधिक खूबसूरत है। घने-हरे जंगल, सीढ़ीदार खेत, लहलहाती फसलों का सौंदर्य। हम अब चंडीमंदिर मोड़ से जा रहे थे। यहाँ कई किलोमीटर का रास्ता मैदानी भाग जैसा है। वह अलग बात है कि दाईं ओर पहाड़, बाईं ओर घग्गर नदी का सौंदर्य मन को भाता है। हालांकि इस नदी में बारिश के दिनों को छोड़कर पानी अधिक नहीं होता।

बस में बैठे बच्चे नए-नए दृश्यों को उत्सुकता व कौतूहल से देख रहे थे। करीब एक घंटे के सफर के बाद हम टिक्कर ताल पहुँचे। वहाँ पहुँचकर बच्चों ने खाना खाया तथा उन्हें टेंट अलॉट किए गए। लड़कों को झील के किनारे लगे टेंट दिए तथा लड़कियों को टूरिज्म द्वारा बनाया बड़ा हॉल। कुछ बच्चों को मोरनी हिल्स रिजॉर्ट तथा कुछ को एंजलिन रिजॉर्ट में ठहराया गया। ये दोनों ही साइट अच्छी हैं। दिव्यांग बच्चों के ठहरने में खास हिदायतें रखी गईं ताकि उनको किसी तरह की कोई दिक्कत न आए। सूर्यास्त से पूर्व सभी बच्चों को आवश्यकतानुसार कंबल, स्लीपिंग बैग, गद्दे आदि दे दिए गए। हमने बच्चों के साथ आए सभी शिक्षकों को इकट्ठा कर कुछ जरूरी बातें व जानकारियाँ साँझा कीं। सभी बच्चों को कैंप के नियम समझाए गए तथा कैंप के उद्देश्यों व फायदों पर प्रकाश डाला।

अगले दिन से बच्चों के लिए एडवेंचर गतिविधियाँ होनी थी। सुबह जल्दी उठने के लिए खा-पीकर जल्द सो गए। मेरे रहने की व्यवस्था टिक्कर ताल से करीब एक किलोमीटर आगे एंजलिन रिजॉर्ट में थी। सभी बच्चों के सोने के बाद हम दो आदमी सैर करने की लालसा में सड़क-सड़क पैदल हो लिए। घोर अँधेरा था। रात को दस बजे थे। मोबाइल की लाइट जला कर पैदल जा तो रहे थे, थोड़ा डर भी था जंगली जानवरों का। रात को घूमते हुए यहाँ कई बार तेंदुआ या अन्य जंगली जानवर मिलने का भय रहता है। बारहसिंगा का डर ये रहता है कि वह लाइट देखकर वाहन पर भी टक्कर मार देता है। तेंदुए इंसानों पर तो आक्रमण नहीं करते फिर भी जानवर का क्या भरोसा। पूरे मोरनी इलाके में तेंदुए घूमते रहते हैं। कुछ देर पहले ही एक पुलिस वाले ने हमें बताया था कि रात को गश्त लगाते समय हमें कई बार तेंदुए मिल चुके हैं किंतु वे अपना रास्ता बदल लेते हैं। वे तो यहाँ के जंगली जानवर तथा भेड़ बकरियों, गाय के बछड़ों को उठा ले जाते हैं। काले सूअर, गीदड़, लोमड़ी, जंगली बकरा, हिरण, चीतल आदि घूमते नज़र आ जाते हैं। भालू इस इलाके में लंबे समय से नहीं देखा गया। माना जाता है कि भालू अब इस इलाके में नहीं हैं। 12-13 मिनट में हम अपने ठिकाने पहुँच गए। सर्दी के कारण हम गर्म पानी पीकर सो गए। सुबह 5 बजे जंगली मुर्गों की बाँग सुनाई दी। एक के बाद एक आवाजों से लग रहा था कि यहाँ काफी संख्या में जंगली मुर्गे हैं। मैं करीब 5:30 बजे बिस्तर से उठा। थोड़ा इधर-उधर टहला, पानी पिया, फिर चाय पी। पूर्व में उजाला होता दिखाई दिया। अँधेरा छँट रहा था। सूरज की स्वर्णिम किरणों ने पहले पहाड़ों की चोटियों पर अपना डेरा डाला, फिर शनैः -शनैः दूसरे हिस्सों पर। पहाड़ी जंगल अब जाग रहे थे। सैकड़ों तरह के हजारों पक्षियों का कलरव वातावरण में गूँजता हुआ सजीव धरा का प्रमाण दे रहा था। रंग-बिरंगे पक्षी किलोल करने लगे। मैंने अपना कैमरा उठाया। कुछ अच्छे चित्र खींचे। कुछ पक्षी पहली बार देख रहा था। यहाँ से एक किलोमीटर दूर स्थित झील का सुंदर नजारा दिख रहा था। झील के उस ओर पहाड़ों के पीछे से अभी चंद्रमा झाँक रहा था। पूर्व में उदय होता सूर्य, पश्चिम में अस्त होने की तैयारी में चंद्रमा सुंदर नजारा प्रस्तुत कर रहा था। झील के किनारे सरसों के खेत मन को भा रहे थे। धूप निकलते ही हमारे कमरे की झोपड़ीनुमा छत पर बिल्ली के चार बच्चे धूप सेंकने आ गए। हम तैयार होकर टिक्कर--ताल की ओर चले। आज बच्चों का माँ काली टैम्पल ट्रैक था। जंगलों से गुज़रते हुए, पहाड़ की चढ़ाई से आगे बढ़ते हुए ये ट्रैक नए अनुभव दे गया। एक दिन ट्रैक ल्हासा वाटरफॉल, एक दिन दो लेकव्यू ट्रैक तथा एक दिन बाबा रामदेव ट्रैक पर बच्चे भेजे गए। यहाँ बाबा रामदेव ने जड़ी बूटियों के लिए काफी जमीन ली हुई है। तीसरे दिन बच्चों को भूत बंगला भी दिखाया गया। ये बच्चों के मनोरंजन की अच्छी जगह है। यहाँ बच्चों ने खूब मस्ती की। साथ-साथ बच्चों की एडवेंचर गतिविधियाँ भी चलती रहीं तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी।

विद्यार्थियों की कल्पनाओं को पंख देने के लिए झील के किनारे ही सभी को पैरासेलिंग भी करवाई गई। बच्चों ने आसमान में उड़ कर नीचे के सुंदर व्यू देखे। सबने अपनी-अपनी कल्पनाएँ की होंगी। पक्षियों की तरह खुले आसमान में उड़ना एक सुखद व यादगार अनुभव होता है। दिन-भर बच्चे अधिक व्यस्त और मस्त रहे। दूसरी ओर सभी बच्चों के लिए नौका विहार भी थी। बच्चों ने नौका विहार में खूब मजे किए। चारों ओर हरी घास व

जंगलों से ढके, हरे-भरे ऊँचे पहाड़ों के मध्य एक सुंदर झील। किनारे पर खड़ी बहुत सी नौकाएँ। कुछ बच्चों को लेकर झील के तल पर उतरी नौकाएँ। झील के किनारे एक तरफ सीढ़ीदार खेत तथा उनमें लहलाती पीले रंग की सरसों। एक तरफ पैरासेलिंग व पैरा मोटर की उड़ान, झील के किनारे लगे रंग-बिरंगे टेंट, झील पर उड़ते पंछी, इधर-उधर टहलते बच्चे व बाहर से आए कुछ पर्यटक, एक तरफ बना टूरिज्म का रिजॉर्ट, धीमे-धीमे चलती सुहानी हवा, गुनगुनी व सुहानी धूप, नीला आसमान, कितना सुंदर नजारा था। इसी व्यस्तता, मस्ती, आनंद, मनोरंजन में शाम हो गई। नौका विहार अभी चल रही थी, क्योंकि कुछ बच्चे मल्लाह व मोरनी नेचर कैंप से भी आए हुए थे। पहाड़ों के शिखरों से सूरज शनैः-शनैः रसातल में जाने की तैयारी कर चुका था। आसमान का रंग बदल रहा था। सूरज का 'तेज' लाल, संतरिया, पीले रंगों में तबदील हो रहा था। झील के पानी का रंग भी लालिमा में परिवर्तित होने लगा। जैसे किसी चित्रकार ने चित्र बनाते समय लाल-संतरीय रंग से सनी ब्रश झील के पानी में डुबो दी हो। ऐसा भी महसूस हो रहा था कि सूरज का रंग किरणों के माध्यम से झील के जल में घुल रहा हो। रंग बदले हुए, लालिमा लिए झील की स्वर्णिम देह पर 15-20 नौकाएँ एक साथ तैर रही थीं। उन नौकाओं में बैठे बच्चों की उमंगों के इंद्रधनुष खिल रहे थे। नौकाएँ भी बच्चे ही चला रहे थे। कोई इधर तो कोई उधर। झील पर उड़ते हुए पक्षी, पानी पर तैरती सूरज की परछाई, सुंदर मंजर प्रस्तुत कर रही थी। सूरज धीरे-धीरे पर्वत-शिखरों से ओझल हो गया जैसे कोई पंछी रात को सोने के लिए अपने घोंसले में जाकर छिप गया हो। सूरज अपने साथ ही रंगों की पोटली भी समेट कर ले गया। इसलिए जो रंग आसमान में, बादलों में, पहाड़ों पर, हमारे चारों ओर फैले पड़े थे वो सब रंग सिमट गए तथा एक ही रंग बचा-काला। यानी हर ओर अँधेरे का साम्राज्य स्थापित हो रहा था। नौकाओं में बैठे झील पर तैर रहे सभी बच्चे सूर्यास्त से पहले ही सुरक्षित बुला लिए थे। सारे दृश्य अँधेरे के आगोश में जा रहे थे। आसमान में सुंदर, चमकीले तारे टिमटिमाने लगे। पहाड़ों पर प्रदूषण न होने की वजह से रात को तारे अधिक चमकीले दिखाई देते हैं। चाँद भी नहाया-धोया लगता है। कुछ देर बाद सभी रात के भोजन के लिए मोरनी हिल्स रिजॉर्ट चले गए। यहाँ खाने-पीने की व्यवस्था अच्छी थी। साफ-सफाई भी अच्छे तरीके से की जा रही थी। कार्यक्रम अधिकारी रामकुमार व्यवस्था देखने तथा बच्चों से मिलने और उन्हें संबोधन करने के लिए बार-बार कैंप में आते रहे ताकि किसी को किसी तरह की कोई परेशानी न हो।

इस एडवेंचर कैंप का समापन बड़े धूमधाम से पंचकूला के इंद्रधनुष ऑडिटोरियम में 18 दिसंबर को किया गया। मल्लाह, मोरनी नेचर कैंप तथा टिक्कर ताल के सभी ग्यारह सौ विद्यार्थियों व शिक्षकों को बसों के माध्यम से पंचकूला लाया गया। बड़े स्तर के इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि हरियाणा के शिक्षा मंत्री कँवरपाल गुर्जर थे। इनके साथ शिक्षा विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. महावीर सिंह, मौलिक शिक्षा विभाग के निदेशक डॉ. अंशज सिंह, हरियाणा माध्यमिक शिक्षा विभाग के महानिदेशक डॉ. जे. गणेशन, अतिरिक्त निदेशक संवर्तक सिंह, सहायक निदेशक नन्दकिशोर वर्मा, कार्यक्रम अधिकारी रामकुमार, संजय सिंह, अजय कुमार, डॉ. प्रदीप राठौर, प्राचार्य अनिल दलाल, विजेंद्र धनखड़, भीम सिंह, नरेंद्र बल्हारा, जसवीर कौर आदि अधिकारी तथा अन्य गणमान्य लोग मौजूद थे। इंद्रधनुष ऑडिटोरियम में सम्मान समारोह आरंभ होने से पूर्व शिक्षा मंत्री व अधिकारियों ने फोटो प्रदर्शनी का अवलोकन किया। हरियाणा शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित एडवेंचर गतिविधियों व पर्यटन स्थलों, नदी-नाले, घाटियों, वादियों, ग्लेशियरों, यूनम पीक फतेह, फ्रेंडशिप पीक फतेह से संबंधित मेरे द्वारा खींचे 125 छायाचित्रों की प्रदर्शनी में शिक्षा मंत्री ने खास रुचि ली। उसके बाद सुपर-हंड्रेड कार्यक्रम के बच्चों को सम्मानित किया। उसके उपरांत एडवेंचर टूर के बच्चों को 22 शील्डें बाँटी गईं, एक-एक शील्ड हर जिले को दी गई। शिक्षा मंत्री कँवरपाल व डॉ. महावीर सिंह ने हर जिले के चार-चार प्रतिभावान विद्यार्थियों को सम्मानित किया। कुशल मंच-संचालन डॉ. प्रदीप राठौर द्वारा किया गया। अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. महावीर सिंह ने एडवेंचर गतिविधियों, यात्राओं व बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए मंच से जो बोला वह सब को प्रभावित कर गया। उसके बाद सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों, मेहमानों व अतिथियों ने भोजन किया तथा अपनी-अपनी मंजिल की ओर चल पड़े एक नई ऊर्जा व ढेर सारी मधुर स्मृतियों के साथ।

राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
एमपी रोही, हिसार, हरियाणा

नवाचारी शिक्षा की प्रेरणादायी पुस्तक: तोत्तो-चान

अध्यापकों को राह दिखाती विश्व-साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक

अरुण कुमार कैहरबा

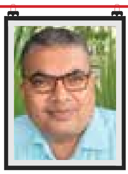

शिक्षा विचारशीलता, कल्पनाशीलता व रचनात्मकता से भरा बहुत शानदार काम है। अध्यापक इस कर्म का केन्द्रीय किरदार है। बच्चों को स्वाभाविक ढंग से आगे बढ़ाना उसका केन्द्रीय लक्ष्य है। अभिभावकों और समुदाय के सहयोग के बिना यह संभव नहीं है। सरकार की नीतियाँ शिक्षा को प्रभावित करती हैं। ऐतिहासिक रूप से देखने पर विभिन्न देशों में कितने ही लोगों ने शिक्षा को नई दिशा दी है। अनेक लोगों ने अपने काम में डूब कर पूरे समर्पण भाव से काम किया है। उन लोगों ने बच्चों को प्रेरणा व वातावरण प्रदान किया और अपने काम की अमिट छाप छोड़ी। विपरीत परिस्थितियों में काम करके ऐसे अध्यापकों व शिक्षाशास्त्रियों ने जो रास्ता तैयार किया है, उस रास्ते पर आगे बढ़ना और उस रास्ते को नई परिस्थितियों के अनुकूल आगे बढ़ाना आज के समय की चुनौती है।

दूसरे विश्व युद्ध की तरफ बढ़ रही दुनिया के दौर में जापान में सोसाकु कोबायाशी ने वैकल्पिक स्कूल खोल कर नवाचारी शिक्षा का मार्ग प्रशस्त किया। 1945 में उनका स्कूल युद्ध की भेंट चढ़ गया। तोमोए नाम के उनके स्कूल को भी आज याद करने वाला कोई नहीं होता यदि स्कूल की छात्रा रही तेत्सुको कुरोयानागी तोत्तो-चान नाम की अपनी संस्मरणात्मक किताब न लिखती। लेखिका तेत्सुको कुरोयानागी दरअसल खुद ही तोत्तो चान है, जो तोमोए में शिक्षा प्राप्त करने के वर्षों बाद अपने स्कूल व स्कूल के संस्थापक व हैडमास्टर को याद करती है। जापानी में लिखी गई यह किताब दुनिया की सर्वाधिक पढ़ी जाने वाली किताबों में से एक है। दुनिया की विभिन्न भाषाओं में इस किताब का अनुवाद किया गया है। एनबीटी द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक का हिन्दी अनुवाद पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा ने किया है। इस किताब में लेखिका तोत्तो चान के पहले स्कूल को याद करती है, जिससे उसे नाकाबिल और शरारती कह कर निकाल दिया गया था। इसका उसकी माँ पर क्या प्रभाव पड़ा होगा, इसकी कल्पना से ही मन सिहर उठता है। आखिर माँ उसे कोबायाशी के स्कूल तोमोए में लेकर गई, जहाँ चंचल स्वभाव की तोत्तो चान को मुख्याध्यापक कोबायाशी द्वारा सहर्ष दाखिल कर लिया गया। रोचक किस्सों और प्रसंगों से भरी पुस्तक में तोत्तो चान के स्कूल के अनुभवों को बहुत ही सरल और सहज भाषा में लिखा गया है।

नन्ही तोत्तो चान बहुत ही चंचल और अस्थिर स्वभाव की लड़की है। उसे उसके माता-पिता के द्वारा स्कूल में दाखिल करवाया गया। स्कूल में तोत्तो चान का कक्षा-कक्ष सड़क के साथ था। वह खिड़की पर खड़ी होकर साजिंदों की प्रतीक्षा करती। साजिंदे दिखाई देने पर वह उन्हें खिड़की पर बुला लेती। सारे बच्चे खिड़की पर खड़े हो जाते। नन्ही तोत्तो साजिंदों को कुछ बजाकर सुनाने के लिए कहती। सारे बच्चे संगीत का नजारा लेते। अध्यापिका यह देखकर परेशान हो जाती। तोत्तो के मन में खुद भी साजिंदा बनने की कामना थी। इसके अलावा उसके स्कूल की अध्यापिका माँ से शिकायत में तोत्तो चान की अन्य आदतों के बारे में बताती हुई कहती है कि तोत्तो कक्षा में कई-कई बार मेज की दराज को खोलती और बंद करती है। जिससे कक्षा का वातावरण खराब होता है। अन्य अनेक शिकायतों के किस्से सुनाते हुए अध्यापिका तोत्तो को स्कूल से निकाल देती है। तोत्तो चान की माँ इसके बारे में बिना उसे बताए दूसरे स्कूल में लेकर जाती है। वह स्कूल अन्य स्कूलों से भिन्न और अनूठा है। स्कूल की कक्षाएँ रेल के डिब्बों में लगती हैं। उस स्कूल का गेट पेड़ों से बना है। यही कोबायाशी द्वारा स्थापित एवं संचालित तोमोए स्कूल है। रेल के डिब्बों में कक्षा लगना नन्ही तोत्तो को बहुत आकर्षित करता है। हालांकि एक स्कूल से निकाली गई तोत्तो को दूसरे स्कूल में दाखिला मिल जाएगा, इसके बारे में माँ आशंकित थीं। लेकिन धैर्यवान और विचारवान शिक्षाविद कोबायाशी तोत्तो का स्वागत करते हैं। अन्य अनेक अध्यापकों की तरह वे खुद बड़े-बड़े भाषण देने वाले नहीं हैं। वे बच्चों को सुनने और समझने में यकीन रखते हैं। वे तोत्तो को अपने मन की बात कहने के लिए कहते हैं तो मन में इच्छाओं, आकांक्षाओं और तरह-तरह के विचारों का तूफान संजोए

नन्ही तोत्तो बोलती ही जाती है। उसे भी नहीं पता चलता कि वह तीन-चार घंटे कितने समय तक बोलती जाती है। कोबायाशी धैर्य के साथ उसे सुनते हैं और उसे अपने स्कूल में दाखिल कर लेते हैं।

तोमोए अन्य स्कूलों से कई मामलों में अलग है। रेल के डिब्बे में लगने वाली कक्षा में किसी भी बच्चे के लिए निर्धारित स्थान नहीं है। कोई भी विद्यार्थी कहीं भी बैठ सकता है। स्कूल का टाइम टेबल भी लचीला है। जिस विद्यार्थी को जो विषय अच्छा लगे, पहले उसे पढ़ सकता है। अध्यापिका का काम बच्चों का मार्गदर्शन करना है। कोई भी दिक्कत महसूस करने पर अध्यापिका पूरी तन्मयता से उसे समझाती। पढ़ने के बाद दोपहर का भोजन सभी बच्चे इकट्ठे लेते हैं। भोजन में पौष्टिकता का मुख्याध्यापक विशेष ध्यान रखते। भोजन में विविधता के लिए 'कुछ पहाड़ से और कुछ समुद्र से' की मुख्याध्यापक खुद जाँच करते हैं। वे टिफिन देखते हैं और जिस टिफिन में कोई कमी है, उसे पूरी करने के लिए कोबायाशी की पत्नी खाना तैयार करती है और टिफन में डालती जाती है। मिलकर गीत गाना और आभार जताते हुए भोजन करना हर रोज की दिनचर्या है। यदि सभी ने समय से अपना काम कर लिया तो दोपहर के बाद सैर पर जाना और प्राकृतिक दृश्यों के माध्यम से विद्यार्थियों को सीखने का मौका मिलता।

स्कूल के परिसर में अनुशासन की बजाय आज़ादी का माहौल है। यह वातावरण विद्यार्थियों को जिम्मेदार बनाता है। जब तोत्तो चान का प्रिय बटवा शौचालय के गड्ढ़े में गिर जाता है तो तोत्तो गड्ढ़े से गंदगी निकाल कर बटवा ढूंढ़ती है और वह खुद अपने अनुभव से सीखती है। पुस्तक में इसी प्रकार के कितने ही प्रसंग आते हैं, जब तोत्तो चान को स्कूल में आज़ादी के साथ अपने अनुभव से सीखने के मौके मिलते हैं। स्कूल का परिसर, शिक्षण पद्धति, क्रियाएँ बच्चों को सोचने को मजबूर करती हैं। स्कूल में गर्मियों की छुट्टियों में लगने वाला कैंप बच्चों के सीखने के लिए अनेक अनुभव देता है। बच्चों द्वारा कच्चा राशन ले जाकर खुले में खाना बनाने और खाने के अनुभव भी शानदार हैं। जब स्कूल में नया रेल का डिब्बा आता है तो बच्चों में जिज्ञासा होती है, उसे आता हुआ देखने की। तो मुख्याध्यापक अभिभावकों से अनुमति लेकर रात को स्कूल में ठहरने की व्यवस्था करते हैं। तालाब में बच्चों का मिलकर नहाने, गर्म सोते की यात्रा और भूत बनने व उनका बहादुरी से सामना करने सहित अनेक प्रकार के अनुभव बच्चों के लिए अविस्मरणीय बन जाते हैं।

स्कूल में बच्चों की विविधता और व्यक्तिगत भिन्नताओं को पूरा सम्मान मिलता है। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की गरिमा और सुविधा का ध्यान रखा जाता है। चलने-फिरने में दिक्कत महसूस करने वाले पोलियो ग्रस्त विद्यार्थी यासुकी-चान के प्रति तोत्तो चान की संवेदनशीलता की पराकाष्ठा पुस्तक के 'अपूर्व अनुभव' नाम के अंश में देखने को मिलती है। जब वह यासुकी चान का अपने पेड़ पर स्वागत करती है। तोत्तो-चान की अथक मेहनत से जब यासुकी चान पेड़ पर चढ़ता है तो यह उसके जीवन का अनूठा अनुभव होता है। वह अन्य बच्चों की तरह ही पेड़ पर बैठ कर दुनिया देखने को महसूस करता है। यासुकी चान से तोत्तो चान को भी टेलीविजन के बारे में जानकारी मिलती है। दोनों में मित्रता और अपनेपन का यह प्रसंग पाठकों को अंदर तक झकझोर देता है। भिन्नताओं के बावजूद विद्यार्थियों का एक दूसरे से सीखना शिक्षा का मर्म समझा जाता है।

स्कूल में हर विद्यार्थी का स्वागत किया जाता है। छोटे कद-काठी के ताकाहाशी के प्रति कोबायाशी की गहरी संवेदनाएँ तब देखने को मिलती हैं, जब तोमोए के खेलों के आयोजन में वे ऐसे खेल डिजाइन करते हैं, जिनमें ताकाहाशी अनेक इनाम जीतता है। तोत्तो चान ने मुख्याध्यापक को कभी गुस्सा होते हुए नहीं देखा था। लेकिन तब उसके आश्चर्य की सीमा नहीं रहती, जब उसे पता चलता है कि मुख्याध्यापक गुस्सा हैं। वह जाकर देखती है तो पता चलता है कि मुख्याध्यापक अध्यापक के प्रति गुस्सा हैं, क्योंकि उन्होंने तोकोहाशी से जो व्यवहार किया है उससे उसका हौसला गिर सकता है। तोमोए और उसके दूरदर्शी शिक्षाशास्त्री मुख्याध्यापक के लिए हर विद्यार्थी पूरी अहमियत रखता है। हर विद्यार्थी का उत्साहवर्धन और अपनी गति से सीखने के लिए तैयार करना उनका ध्येय है।

किताब बाल मन की झाँकी है। नन्ही तोत्तो-चान के जरिये हमें पता चलता है कि बच्चे चीजों को किस तरह से देखते हैं। हर बच्चा विलक्षण है। सहज-स्वाभाविक वातावरण में बच्चों के मन में बड़ा होकर क्या-क्या बनने के ख्याल आते हैं। इन्हें हमारा समाज कैसे देखता है। एक ही चीज को हर बच्चा अलग-अलग ढंग से देखता है। हर एक बड़े हुए महिला-पुरुष भी पहले बच्चे थे। लेकिन बड़प्पन के चक्कर में बालपन को वे भूल जाते हैं। दुनिया पर बच्चों की बजाय बड़ों का वर्चस्व है। तोत्तो चान की दुनिया में सबसे अच्छी बात यह है कि उसके माता-पिता बहुत संवेदनशील हैं। पहली बार उसे जिस स्कूल में दाखिल करवाया जाता है, वहाँ पर तोत्तो चान को अपनी तरह से स्वतंत्रता नहीं मिलती है। इसलिए उसकी चंचलता और प्रश्नानुकूलता को भी गलत ढंग से देखा जाता है। लेकिन तोमोए में फिर उसे बहुत शानदार वातावरण मिलता है। किताब को पढ़ कर हमें पता चलता है कि बड़ों की दुनिया को छोटी लगने वाली चीज़ें भी बच्चों के लिए बड़ी होती हैं। नन्हें चूजे और रॉकी के प्रति तोत्तो चान का स्नेह हमें भाव-विभोर कर देता है। पालतू रॉकी खेलते-खेलते तोत्तो का एक कान काट लेता है और तोत्तो को इस बात का खतरा है कि बताने पर रॉकी को मारा जाएगा।

तोत्तो-चान युद्ध की विभीषिका और वीभत्सता को भी हमारे सामने लेकर आती है। द्वितीय विश्व युद्ध में जापान पर आ रहे संकट के कारण पता नहीं कब किसके पास सेना का बुलावा आ जाएगा। इसका उस पर उसके परिवार पर क्या असर होता है। और आखिर में तोमोए जैसा स्कूल भी युद्ध की भेंट चढ़ जाता है। तेत्सुको कुरोयानागी ने किताब के जरिये अपने समय का दस्तावेजीकरण करके भी बड़ा काम किया है। किताब की सबसे बड़ी बात यह है कि किताब बच्चों, अभिभावकों व शिक्षकों के साथ-साथ हर वर्ग के लोगों के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। संभवतः हर तरह का काम करने वाले व्यक्ति किताब को पढ़ कर इसका विशेषण अपने तरीके से करेंगे। बड़ों को अपना बचपन याद आ जाएगा। यदि उन्होंने तोमोए जैसे स्कूल में शिक्षा पाई है तो उन्हें अपने पर गर्व भी होगा। लेकिन यदि उन्होंने शिक्षा के नाम पर परिवार व स्कूल में क्रूरता का सामना किया है तो फिर उन्हें इस बात का अफसोस भी होगा। किताब को पढ़ कर हमें अपने खुद का बचपन और अपने आस-पास के बच्चे दिखाई देने लगते हैं और संवेदनशीलता जागती है।

शिक्षकों के लिए तो किताब और अधिक महत्त्वपूर्ण है। अपने काम को समझने के लिए किताब के जरिये शिक्षकों को अन्तर्दृष्टि मिलेगी। शैक्षिक प्रक्रियाओं में खुद की भागीदारी और भूमिका की आलोचना करने का अवसर मिलेगा। एक बेहतर शिक्षक निर्माण का रास्ता तैयार होगा। ऐसी किताबें शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम का भी हिस्सा बननी चाहिएं। लेकिन हमारे आसपास शिक्षक प्रशिक्षण कोर्स में विषय-वस्तु निर्धारित की जाती है और फिर उसे पढ़ने और पढ़ाने के घिसे-पिटे तरीके ज्यादा अपनाए जाते हैं।

तोत्तो-चान बच्चों को कैसी लगती है। इसका अनुभव लेखक को छठी कक्षा में पढ़ने वाले 11 वर्षीय सार्थक के साथ किताब का सामूहिक पाठ करने पर हुआ। किताब का पाठ करने में कुछ दिन लगे। हर रोज निर्धारित समय पर किताब को पढ़ने की उत्सुकता लगातार बढ़ती गई। समय से पहले ही सार्थक किताब पढ़ना शुरू करने की हठ करता। पुस्तक पूरी पढ़ने के बाद जब किताब में सबसे अच्छी बात या प्रसंग के बारे में पूछा गया तो उसने कहा कि पूरी ही किताब शानदार और रोमांचक है। सबसे अच्छा तोमोए स्कूल लगा, जहाँ पर अपनी तरह से पढ़ने -सीखने की बच्चों को छूट है। वहाँ पर कोई डर नहीं है। बच्चे खेल कर, बातें करके, घूम कर, किताबें पढ़कर भी सीखते हैं। काश! कि हर स्कूल तोमोए जैसा ही हो। उसने आगे कहा कि स्कूल के मुख्याध्यापक कोबायाशी उन्हें सबसे अधिक पसंद आए। वे ऐसे मुख्याध्यापक हैं, जिनसे कोई विद्यार्थी डरता नहीं है। मुख्याध्यापक भी किसी को डराते नहीं हैं। सार्थक ने कहा कि जब तोत्तो चान का बटवा शौचालय के गड्ढ़े में गिर जाता है और तोत्तो चान उस गड्ढ़े से गंदगी निकालने लगती है। यह देखकर भी मुख्याध्यापक कोबायाशी उसे डाँटते नहीं। बस इतना ही कहते हैं कि बाद में ये सारी गंदगी गड्ढ़े में डाल देना। तोमोए हमारे सपनों का स्कूल है।

हिन्दी प्राध्यापक
रामॅासंवमा विद्यालय ब्याना
जिला-करनाल, हरियाणा

अनेक उपलब्धियाँ जुड़ी हैं सोनीपत के सिसाना स्कूल के नाम

पूनम राणा

कहते हैं कि-'कुछ कर गुजरने के लिए मौसम नहीं मन चाहिए, साधन सभी जुट जाएँगे संकल्प का धन चाहिए।' एक संकल्पवान व दृढ़ शक्ति वाले व्यक्ति के लिए इस दुनिया का कोई भी कार्य असंभव नहीं है। जब प्राचार्य श्री सुरेश चन्द्र जी ने पदभार सँभाला था उस समय स्कूल की हालत बहुत खराब थी। कमरे खंडहर अवस्था में थे, खेल के मैदान व पार्क जैसी कोई सुविधा नहीं थी। शौचालय बुरी हालत में थे, सभी हालातों का जायजा लेने के बाद उन्होंने स्कूल स्टाफ के साथ मीटिंग कर विस्तृत योजना तैयार की और शीघ्र ही स्टाफ सदस्यों, पंचायत व ग्रामवासियों के सहयोग से स्कूल के कायाकल्प का कार्य शुरू किया गया। स्कूल में कार्यरत श्री कृष्ण कुमार एलए ने विशेष भूमिका निभाते हुए इस कार्य की शुरुआत की। प्राचार्य श्री सुरेश चन्द्र की कर्मठ व ईमानदार छवि के कारण पंचायत व ग्रामवासियों ने उनका सहयोग किया और सभी के सहयोग से 35 लाख चन्दा इकट्ठा हुआ। स्कूल के नवनिर्माण का कार्य शुरू हुआ इसके अतिरिक्त समाजसेवी ने विद्यालय में तीन कमरों के निर्माण का बीड़ा उठाया। विद्यालय के प्रवेश द्वार के निर्माण समाजसेवी श्री भूपेन्द्र ठेकेदार ने करवाना शुरू किया। सबसे पहले विद्यालय में कक्षा-कक्षों का निर्माण कार्य शुरू किया गया। गेट के दाएँ ओर प्राचार्य कार्यालय का निर्माण करवाया गया। प्राचार्य कार्यालय के साथ लिपिक कक्ष, मिडिल हेड कक्ष व शौचालय का निर्माण करवाया गया। स्कूल के मुख्य द्वार से लेकर कक्षाओं में जाने के लिए रास्तों का निर्माण करवाया गया। बरामदों को शिक्षाप्रद विचारों व चित्रों के द्वारा सजाया गया। प्रत्येक कक्षा व बरामदों में डस्टबीन रखवाए गए व सभी कमरों में पंखे लगाए गए, दो पार्कों का निर्माण करवाया गया व विद्यालय में हॉल व स्मार्ट कक्ष का निर्माण भी करवाया गया। इंटरनेट कनेक्टिविटी की सुविधा के लिए विद्यालय मे वाई-फाई लगवाया गया। इन प्रयासों से सोनीपत जिले से 24 किलोमीटर दूर ग्रामीण इलाके में स्थित राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सिसाना आज बेटियों के सर्वांगीण विकास का केन्द्र बन चुका है।

एक व्यक्ति के जीवन में विद्यालय और शिक्षा बहुत जरूरी है और यदि विद्यालय का माहौल विद्यार्थियों के लिए अनुकूल हो तो विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास संभव हो पाता है। विद्यालय मुखिया के कुशल नेतृत्व चलते स्कूल में सुविधाओं के साथ-साथ पठन स्तर में भी सुधार हुआ

जिसके परिणामस्वरूप स्कूल में प्रत्येक वर्ष छात्राओं की संख्या बढ़ रही है।

पढ़ाई के साथ-साथ खेलों के बढ़ावा देने के लिए खेल के मैदान तैयार किए गए। स्कूल में कबड्डी, खो-खो, बेडमिंटन के मैदान तैयार किए गए। छात्राओं की प्रतिभा निखारने के लिए यहाँ समय-समय पर सांस्कृतिक, वाद-विवाद प्रतियोगिता चित्रकारी, भाषण, निबंध, संगीत, नृत्य व खेल कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। छात्राओं में नेतृत्व की भावना को विकसित करने के लिए स्कूल की सभी छात्राओं को चार सदनों में विभाजित किया जाता है। हर हफ्ते एक सदन को विद्यालय की कमान सौंपी जाती है। सदन की छात्राएँ पूरे सप्ताह विद्यालय में अनुशासन कायम करती हैं, प्रार्थना सभा व जॉयफुल सेटरडे के कार्यक्रम निर्धारित करती हैं, इसके अतिरिक्त स्कूल में स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस व एनएसएस की गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। छात्राओं के अच्छे प्रदर्शन के लिए पुरस्कार दिए जाते हैं जिनसे उनका हौसला बढ़ता है। यह स्कूल आज जिला स्तर पर अपनी अलग पहचान बना चुका है। इस स्कूल को खंड व जिला स्तर पर विभिन्न पुरस्कारों से नवाजा गया है। इस विद्यालय की सफलता के पीछे यहाँ के प्राचार्य, मेहनती व कर्मठ स्टाफ सदस्य, जनभागीदारी व पंचायत का सहयोग रहा।

पंचायत व ग्रामवासियों की भागीदारी-

यह सच है कि समाज के सहयोग के बिना किसी भी स्कूल का विकास संभव नहीं। ग्रामवासियों ने विद्यालय में नए कमरे बनवाए। एनएसएस कैंप के दौरान आए हुए मुख्यअतिथियों ने दो पार्कों को तैयार करने में दान देकर सहयोग किया। स्कूल के मुख्य द्वार का निर्माण समाजसेवी श्री भूपेन्द्र ठेकेदार ने करवाया। स्कूल के प्रार्थना सभा के स्थान को पंचायत ने पक्का करवाया। रिटायर्ड इंस्पेक्टर श्री राजेन्द्र दहिया जी प्रत्येक वर्ष सभी

छात्राओं को जर्सी व जूते वितरित करते हैं। पूर्व सरपंच श्री धर्मबीर जी बोर्ड परीक्षाओं में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली छात्राओं को स्मृति चिह्न व इक्कीस सौ रुपये से सम्मानित करते हैं। खाप प्रधान श्री सुरेन्द्र दहिया जी ने हॉल के निर्माण में दो लाख रुपये दान किए। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय पर्वों पर छात्राओं को नकद राशि से सम्मानित करते रहते हैं। पूर्व सरपंच श्री कृष्ण दहिया जी ने प्राचार्य कार्यालय व छात्राओं के लिए शौचालय का निर्माण करवाया।

विद्यालय की कुछ उपलब्धियाँ-

» विद्यालय 2018 में खंड स्तर पर सौंदर्यकरण पुरस्कार जीत चुका है।
» शिवानी पुत्री श्री फतेह सिंह ने गीता जयंती निबंध प्रतियोगिता में राज्य स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया।
» एससीआरटी गुरुग्राम द्वारा आयोजित रोल प्ले कार्यक्रम में जिला स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त कर, राज्य स्तर पर अच्छा प्रदर्शन किया।
» राष्ट्रीय स्तर एडवेंचर कैम्प पचमंढ़ी में भागीदारी,
» 2020 में छात्रा दीपिका खंड स्तर पर टॉपर (कॉमर्स) रही
» गीता जयंती कार्यक्रम में श्लोकोच्चारण में भागीदारी
» विद्यालय की कई अध्यापिकाएँ ले चुकी हैं टीचर अवार्ड

सांस्कृतिक क्षेत्र मे अव्वल रहती हैं यहाँ की छात्राएँ-

किसी भी प्रदेश की सभ्यता व संस्कृति वहाँ की पहचान व धरोहर होती हैं और सांस्कृतिक गतिविधियाँ विद्यार्थियों की प्रतिभा निखारने का काम करती हैं। इस स्कूल की छात्राएँ सांस्कृतिक गतिविधियों में खंड स्तर से लेकर राज्य स्तर तक अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा चुकी हैं।

» कला उत्सव 2018 में नृत्य की टीम जिला स्तर पर प्रथम
» कल्चरल फेस्ट में ब्लॉक स्तर पर प्रथम व जिला स्तर पर नृत्य टीम तृतीय स्थान पर रही।
» समूह गान प्रतियोगिता में जिला स्तर पर दूसरा स्थान प्राप्त किया।
» श्लोकोच्चारण में जिला स्तर पर प्रथम
» संवाद में जिला स्तर पर दूसरा स्थान
» स्पेल बी प्रतियोगिता में जिला स्तर पर प्रथम
» साँझी प्रतियोगिता में जिला स्तर पर दूसरा स्थान प्राप्त किया।
» रोल प्ले प्रतियोगिता में जिला स्तर पर पहला स्थान प्राप्त किया
» रोल प्ले प्रतियोगिता में नाटक की टीम ने जिला स्तर पर दूसरा स्थान प्राप्त किया।
» एकल नृत्य कल्चरल फेस्ट में जिला स्तर पर तृतीय स्थान प्राप्त किया।

एडवेंचर गतिविधियों का हिस्सा बन चुकी हैं यहाँ की छात्राएँ-

इस स्कूल की छात्राएँ प्राध्यापिका पूनम राणा के नेतृत्व में पचमढ़ी (मध्यप्रदेश) मनाली (हिमाचल प्रदेश) व मल्लाह व मोरनी हिल्स (पंचकूला) के एडवेंचर कैंपों में भाग ले चुकी हैं।

इन एडवेंचर कैम्प का हिस्सा रह चुकी छात्रा बिन्दु ने पर्वतारोही बनने का फैसला किया है और वह

पर्वतारोही प्रशिक्षण कार्यक्रम में आवेदन कर चुकी है। उनके इस फैसले में परिवार व शिक्षक सहयोग दे रहे हैं।

समाज सेवा से छात्राओं का जुड़ाव-

एनएसएस व रेडक्रॉस विद्यार्थियों में सामाजिक व नैतिक मूल्यों का विकास करती हैं और इन यूनिट्स का हिस्सा बनकर यहाँ की छात्राएँ समाज सेवा से जुड़ रही हैं। स्कूल की छात्राएँ स्वच्छता अभियान, जागरुकता रैली, पौधारोपण व अन्य जागरुकता अभियान चला रही हैं। एनएसएस यूनिट्स की स्वयंसेविकाएँ स्कूल व गाँव के सार्वजनिक स्थलों पर लगभग पाँच हजार पौधे लगा चुकी हैं व गौशाला, बस स्टैंड, शिव मंदिर, जल-घर व चौपालों में स्वच्छता अभियान चला चुकी हैं। इसके अतिरिक्त स्वयंसेविकाएँ समय-समय पर ग्रामवासियों को जागरुकता रैलियों के माध्यम से विभिन्न विषयों पर जागरुक करती रहती हैं। स्कूल की एनएसएस यूनिट खंड स्तर पर परेड में भी भाग लेती है। कोरोना काल में स्वयंसेविकाओं ने एक हजार मास्क तैयार किए व जरुरतमंदों में वितरित किए।

शैक्षणिक भ्रमणों का आयोजन-

विद्यार्थी जीवन में शैक्षणिक भ्रमणों का विशेष महत्त्व होता है। ये शैक्षणिक, मनोरजंक व ज्ञानवर्धक यात्राएँ विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में योगदान देती हैं। इसलिए स्कूल की छात्राओं के लिए इन भ्रमणों का आयोजन किया जाता है। इन भ्रमणों के तहत यहाँ की छात्राएँ जयपुर, आगरा, मथुरा, वृन्दावन, फतेहपुर सीकरी, कुरुक्षेत्र, अमृतसर व बाघा बार्डर जा चुकी हैं।

विद्यालय की कई अध्यापिकाएँ हो चुकी हैं सम्मानित-

- श्रीमती ममता पीआरटी 'स्टार टीचर ऑफ ब्लॉक' से सम्मानित हो चुकी है।
- श्रीमती पूनम राणा पीजीटी अंग्रेजी खंड स्तर पर प्रशस्ति-पत्र प्राप्त कर चुकी हैं।
- श्रीमती आशा रानी संस्कृत-अध्यापिका खंड स्तर पर सम्मानित हो चुकी हैं।
- श्रीमती सीमा पीआरटी ऑनलाइन शिक्षा के लिए सम्मानित हो चुकी हैं।
- प्राचार्य श्री सुरेश चन्द्र खंड स्तर पर प्रशस्ति-पत्र प्राप्त कर चुके हैं।

विद्यालय सुधार में शिक्षकों का सहयोग-

पंचायत व जनप्रतिनिधियों के साथ-साथ स्कूल के शिक्षक भी विद्यालय के विकास के लिए दान करते हैं। वे स्कूल को अव्वल बनाने के लिए प्रयासरत हैं। श्रीमती पूनम राणा ने छात्राओं के लिए हरियाणवी पारम्परिक वेशभूषा की व्यवस्था की। श्रीमती निशा ने वाटर कूलर व छात्राओं में जर्सियाँ वितरित कीं। श्रीमती लक्ष्मी पीटीआई ने हॉल में पंखों के लिए ग्यारह हजार रुपयों से सहयोग किया। श्री अनिल कुमार क्लर्क भी छात्राओं के लिए सहयोग राशि देते रहते हैं। श्री सुरेन्द्र सिंह पीजीटी ने खेल के मैदान में मिट्टी डलवाई। स्कूल के नवनिर्माण में सभी शिक्षकों ने मिलकर 1,51,000 रुपये दान में दिए। श्रीमती पूनम हुड्डा पीजीटी कॉमर्स छात्राओं को पुस्तकें वितरित करती हैं।

ऑनलाइन शिक्षा में भी आगे-

कोरोना काल में पाठ्यक्रम को पूरा कराने के लिए ऑनलाइन कक्षाएँ ही मुख्य जरिया बनी हुई हैं। वास्तव में यह सभी के लिए चुनौतीपूर्ण स्थिति थी और सवाल यह था कि विद्यार्थियों को ई-लर्निंग से कैसे जोड़ा जाए। इसके लिए सबसे पहले सभी कक्षाओं के लिए वाट्सएप ग्रुप बनाए गए। सभी शिक्षकों ने इस ग्रुप्स के माध्यम से ऑनलाइन कक्षाएँ शुरू कीं। ऑनलाइन कक्षाओं के लिए गूगल मीट व जूम एप्प जरिया बनीं। इसके अतिरिक्त शिक्षकों ने यू-ट्यूब चैनल बनाए, गूगल फार्म से छात्राओं के लिए प्रश्न-पत्र तैयार किए। ऑनलाइन कक्षाओं की वजह से टीचर्स के साथ-साथ विद्यार्थी भी तकनीकी तौर पर निपुण हो रहे हैं। इन कक्षाओं की वजह से बच्चों में पढ़ाई की आदत नहीं छूटी। स्मार्ट कक्ष के जरिये सीधे ऑनलाइन पढ़ाया जाता है। शिक्षक पीपीटी के जरिए भी कक्षाएँ लेते हैं व छात्राओं की शंकाओं का समाधान करते हैं।

समुदाय व शिक्षकों के सामूहिक प्रयासों से स्कूल ने विभिन्न उपलब्धियाँ हासिल की हैं। स्कूल के विकास के लिए समस्त स्टाफ सक्रिय रहता है व एक मजबूत टीम के रूप में छात्राओं के सर्वांगीण विकास के लिए प्रयास कर रहे। पूरी टीम की एकता व सामूहिकता बेमिसाल है। स्कूल का अच्छा परीक्षा परिणाम, सांस्कृतिक व खेल कार्यक्रमों में बेहतर प्रदर्शन, संस्कारों से परिपूर्ण अनुशासानात्मक वातावरण इस बात का परिचायक है कि यह विद्यालय प्रगति की ओर अग्रसर है।

पीटीजी अंग्रेज़ी
राकवमा विद्यालय, सिसाना
जिला-सोनीपत, हरियाणा

खेल-खेल में विज्ञान

दर्शन लाल बवेजा

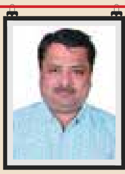

आदरणीय अध्यापक साथियो व प्यारे बच्चो, लीजिए प्रस्तुत हैं खेल-खेल में विज्ञान शृंखला के अंतर्गत कुछ नई विज्ञान कक्षा-कक्ष गतिविधियाँ। विद्यार्थियों की इच्छा थी कि उनको रसायन विज्ञान संबंधित गतिविधियाँ भी करवाई जाएँ। तो उनके लिए इन रोचक व नवाचारी पाठ्यक्रम आधारित गतिविधियों को शामिल किया गया है।

1. प्याज की झिल्ली की अस्थाई स्लाइड बनाना व अवलोकन-

प्याज की झिल्ली की रंगीन अस्थाई स्लाइड बनाकर सूक्ष्मदर्शीय प्रेक्षण द्वारा कोशिका की संरचना का अध्ययन करना विद्यार्थियों के लिए एक अद्भुद अनुभव रहा। जैसे ईंटों से दीवार बनती है ठीक वैसे ही एक-एक कोशिका मिल कर प्याज की झिल्ली की संरचना बनाती है। प्याज की झिल्ली की कोशिकाएँ एक समान होती हैं। छोटी-छोटी संरचनाएँ ही शल्क कंद प्याज की मूलभूत इकाई होती है। प्याज एक बहुकोशिकीय पौधा है। अन्य पौधों की कोशिकाओं की तरह, प्याज के छिलके की कोशिका में एक कोशिका भित्ति, कोशिका झिल्ली, कोशिका द्रव्य, एक बड़ी रिक्तिका और एक नाभिक होता है। केंद्रक कोशिका द्रव्य की परिधि में स्थित होता है और रिक्तिका केंद्र में स्थित होती है। बड़ी रिक्तिकाओं और कोशिका भित्ति की उपस्थिति इस बात की पुष्टि करती है कि प्याज के छिलके की कोशिकाएँ पादप कोशिकाएँ होती हैं।

हमने प्याज का एक छोटा टुकड़ा लिया और चिमटी का उपयोग करके, झिल्ली को नीचे की तरफ (खुरदरी तरफ) से छील लिया। उसमें से छोटा सा चौरस टुकड़ा काट लिया। स्लाइड को धोकर, सूखा कर उस पर एक बूँद पानी की डाली। उस पर झिल्ली का कटा हुआ धुला हुआ टुकड़ा रख कर ब्रश की सहायता से बिछा दिया। झिल्ली का टुकड़ा काँच की स्लाइड पर चिपक गया। निडिल की सहायता से हवा के बुलबुलों को भी निकाल दिया। सब काम विद्यार्थियों ने खुद किया। अब बारी थी स्लाइड (झिल्ली) को रंगने की। इसके लिए अभिरंजक द्रव का प्रयोग किया, जो कि मिथाईलीन ब्लू, सेफ्रेनिन हो सकता है। इस प्रकार विद्यार्थियों ने अपने द्वारा तैयार अस्थाई स्लाइड का कम्पाउंड माइक्रोस्कोप द्वारा अवलोकन किया। पाठ्य-पुस्तक में दिए गए चित्र से अपनी स्लाइड के दृश्य का मिलान किया व फोटो भी लिए। वह दिन उनके लिए आनन्द भरा रहा। एक विद्यार्थी ने घर पर भी यह स्लाइड कांच के टुकड़े पर बनाई। स्लाइड के लिए रंजक के रूप में उसने नीले जैल बालपोइंट पेन की इंक का प्रयोग किया था। उसका प्रयास शून्य लागत वाला व सराहनीय रहा।

2. सोडियम धातु नृत्य (फन विद केमिस्ट्री)-

विद्यार्थी परखनली में सोडियम धातु के टुकड़े का नृत्य देखना चाहते थे, लेकिन उन्हें यह नहीं पता था यह कैसे होता है? विद्यार्थियों को बताया गया कि सोडियम धातु का टुकड़ा जल के साथ अभिक्रिया करके सोडियम हाइड्रॉक्साइड और हाइड्रोजन गैस व बड़ी मात्रा में ऊष्मा भी देता है। इस अभिक्रिया की प्रति अत्यधिक उष्माक्षेपी है। इसको दिखाने के लिए उन्हें यह सोडियम डांस गतिविधि करवाई गई।

इसके लिए एक बड़ी परखनली को आयरन स्टैंड में कस लिया। उसमें थोड़ा सा पानी डाला। फिनोफ्थलीन सूचक की 2-3 बूंदें डालीं। उसके बाद उसमें थोड़ा सा केरोसिन ऑयल डाला। मिट्टी का तेल यानी केरोसिन ऑयल पानी के ऊपर रहता है। अब सोडियम धातु के गेहूँ के दाने जितने बड़े टुकड़े को चाकू से काट कर परखनली में डाल दिया। गुरुत्व बल के कारण सोडियम का टुकड़ा परखनली की तली तक जाएगा, जहाँ पर पानी है। वहाँ उपस्थित पानी के साथ वह टुकड़ा तीव्र अभिक्रिया करेगा। उष्माक्षेपी होने के कारण उत्पन्न उष्मीय ऊर्जा के कारण वह टुकड़ा गति प्राप्त करके ऊपर की तरफ उठेगा और वहाँ वह मिट्टी के तेल में आ जाएगा। मिट्टी के तेल के साथ सोडियम धातु की कोई रिएक्शन नहीं होती है। अतः वह फिर से नीचे जाएगा और जल से अभिक्रिया दोहरा कर फिर से ऊपर जाएगा। इस प्रकार सोडियम का टुकड़ा काफी देर तक ऊपर से नीचे नृत्य करता रहता

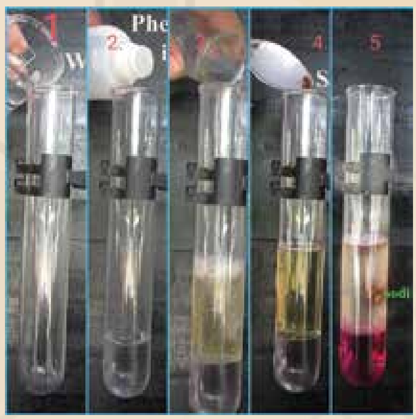

है। इस अभिक्रिया में क्षारीय द्रव सोडियम हाइड्रोक्साइड उत्पाद के रूप में बनने के कारण फिनोफथलीन सूचक के कारण नीचे उपस्थित पानी का रंग गुलाबी भी हो जाता है जो और भी रोमांच पैदा करता है। पूरी प्रक्रिया में चट-चट की ध्वनि भी सुनाई देगी। बच्चे बोले कि देखो डांस के लिए डीजे भी बज रहा है। यह पूरी गतिविधि बच्चों के लिए बहुत ही आनंददायी व ज्ञानवर्धक साबित हुई।

3. पेपर फोल्डिंग से भौतिक परिवर्तन सीखना मजेदार गतिविधि-

सातवीं कक्षा के बच्चे विज्ञान गतिविधियाँ अपने हाथों से करने के लिए काफी उत्साहित रहते हैं। वे हर पाठ में दी गयी गतिविधियों को स्वयं करने का प्रयास करते हैं। भौतिक व रासायनिक परिवर्तन पाठ के अंतर्गत कागज को मोड़ना एक भौतिक परिवर्तन है। कागज सेल्यूलोज

अणुओं से बना होता है। कागज को मोड़ने से सेल्यूलोज की संरचना में कोई परिवर्तन नहीं होता। इसी इशारे का प्रयोग करते हुए उन्होंने कागज से बहुत-सी कलाकृतियों को बनाया व उनका आनन्द लिया। इस प्रक्रिया में जो उन्हें बनाना आता था, उन्होंने बनाया। उन्हें यह बताया गया कि पेपर फोल्डिंग से कुछ-कुछ बनाना ओरिगेमी कहलाता है व ओरिगेमी कागज में भौतिक परिवर्तन का ही एक उदाहरण है। बच्चों ने जहाज, किश्ती, फिरकी, फूल, बेल, लड़ाकू जेट, पटाखा, गेंद, दिनरात, फुदकता मेंढक, चिड़िया व टोपी आदि बना कर भौतिक परिवर्तन को सीखा।

4.वायु में भार होता है-

यह वह गतिविधि है जिसको बच्चों ने खुद तैयार किया और व्याख्या मैंने बच्चों के साथ मिलकर तैयार की। प्रयुक्त सामग्री की व्यवस्था भी बच्चों ने खुद की जो उनकी गतिविधि करने के प्रति उनकी संजीदगी को प्रकट करती है।

बच्चों को बताया गया कि अब हम ये देखने की कोशिश करेंगे कि वायु में द्रव्यमान होता है और वह स्थान घेरती है। इस प्रयोग में, जब बच्चे गुब्बारे फुलाते हैं तो

हवा गुब्बारे के अंदर प्रवेश कर रही होती है और गुब्बारों का विस्तार करती है। इससे पता चलता है कि हवा जगह घेरती है। जो अंततः साबित करती है कि उसका द्रव्यमान है। अब साबित करना है कि हवा में भार होता है।

जब बच्चों ने गुब्बारों को धागों के साथ पैमाने (लकड़ी की फट्टी) पर बाँधा और उनमें से एक गुब्बारे को पंचर किया तो संतुलन फूले हुए गुब्बारे की तरफ झुक जाता है। यानी फुलाए हुए गुब्बारे से जुड़ा हुआ हिस्सा नीचे की तरफ होगा, और बिना फूला वाला हिस्सा ऊपर की ओर जाएगा। जब हम गुब्बारे को फुलाते हैं, तो गुब्बारे के अंदर की हवा उच्च दबाव में होती है। गुब्बारे के अंदर हवा की मात्रा गुब्बारे के अंदर उपलब्ध जगह की एक निश्चित मात्रा के भीतर संपीड़ित (कम्प्रेस) भी होती है। बच्चों को समझ आ गया कि प्रत्येक वह वस्तु जिसमे द्रव्यमान होगा उसका भार भी होगा।

5. हाइड्रोजन गैस बनाना व उसकी जांच-

एक खाली कॉंच की बोतल में जिंक के टुकड़े और हाइड्रोक्लोरिक अम्ल (तनु) की अभिक्रिया से हाइड्रोजन गैस बनाई गई। धातुएँ अम्ल से क्रिया करके हाइड्रोजन गैस उत्पन्न करती हैं। शुरुआती थोड़ी देर जो अभिक्रिया चलती रहेगी उस दौरान बोतल की खाली जगह में जो हवा थी वह बाहर निकल जाती है। उसके पश्चात बोतल के मुँह पर एक गुब्बारा लगा दिया। बोतल के अंदर बनने वाली हाइड्रोजन गैस गुब्बारे में भर गई व वह फूल गया। गुब्बारे को बोतल पर चढ़ाने से पहले दो-तीन बार मुँह से फुला कर रवाँ कर लेते हैं जिससे गुब्बारा मुलायम हो जाता है। गैस के भर जाने के बाद गुब्बारे को अलग करके गाँठ लगा लेते हैं। एक जलती हुई माचिस की तीली को गुब्बारे के पास लाए तो वह पॉप ध्वनि के साथ फटता है व आग जैसी चमक भी दिखाई देती है। इस प्रकार की आवाज के साथ जलना हाइड्रोजन गैस का गुण है। इस प्रकार विद्यार्थियों ने अध्यापक की सहायता से हाइड्रोजन गैस बनाई व उसकी जाँच की।

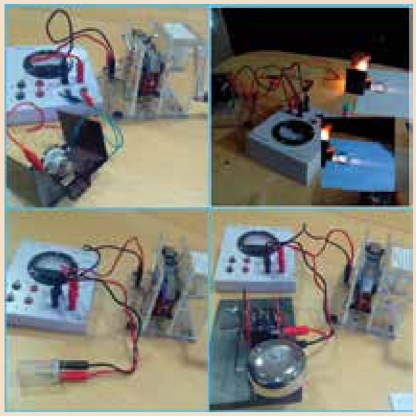

6. सैकंडरी साइंस किट की गतिविधियाँ-

हरियाणा के सभी विद्यालयों में उपलब्ध कराई गई अपर प्राइमरी व सेकेंडरी विज्ञान किट्स जो विज्ञान विंग, एनसीईआरटी द्वारा डिजाइन की गई है बहुत-सी आसान व ज्ञानवर्धक विज्ञान गतिविधियाँ समेटे हुए है। उसमें एक जनरेटर सेट दिया गया है जिसको हाथ से घुमाने पर विद्युत उत्पादन हो जाता है उसके साथ करंट चेंजर को लगाकर और विभिन्न अन्य दिए गए उपकरणों को जोड़कर हम विद्युत का उष्मीय प्रभाव, विद्युत-धारा का चुंबकीय प्रभाव, विद्युत परिपथ बनाना, उत्तल व अवतल लेंस/ उत्तल, अवतल व समतल दर्पण द्वारा प्रकाश के अपवर्तन, परावर्तन संबंधित गतिविधियाँ कर सकते हैं। संलग्न चित्र में इन गतिविधियों को करने के लिए इन्हें जोड़ने का अरेंजमेंट दिखाया गया है। सभी अध्यापक साथी इन विज्ञान किट्स का भरपूर प्रयोग करें। आगामी अंकों में हर माह एक गतिविधि इन साइंस किट्स की भी शामिल की जाएगी।

अच्छा, अध्यापक साथियो व प्यारे विद्यार्थियो, अगले अंक में फिर मिलते हैं नई-नई व कम लागत की विज्ञान-गतिविधियों के साथ।

ईएसएचएम सह विज्ञान संचारक
राउवि शादीपुर, खंड जगाधरी
जिला-यमुनानगर, हरियाणा

प्यारे बच्चो!

'बाल सारथी' आपका अपना पन्ना है। हम चाहते हैं कि इसमें आपकी रचनाओं को स्थान दिया जाए। आपने कोई मौलिक कविता, कहानी या अन्य विधा की रचना लिखी हो तो अपने अध्यापक की सहायता से हमें ई-मेल या डाक द्वारा भेजें। आपकी रचनाओं को प्रकाशित करके हमें प्रसन्नता मिलेगी।

'बाल सारथी' आपको कैसा लगा, जरूर लिखना। अगले अंक में ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन की सामग्री लेकर फिर आपसे मिलूँगी।

- आपकी यामिका दीदी

सौरमंडल को जानें

1. हमारा सौरमंडल किस आकाशगंगा में स्थित है?
2. टाइटन किस ग्रह का उपग्रह है?
3. सौरमंडल का सबसे बड़ा उपग्रह कौन सा है?
4. किस ग्रह को लेटा हुआ ग्रह कहते हैं?
5. किस ग्रह के चारों ओर वलय होते हैं?
6. सूर्य के सबसे दूर स्थित ग्रह कौन सा है?
7. नीला ग्रह किसे कहा जाता है?
8. सौरमंडल का सबसे गर्म ग्रह किसे कहा जाता है?
9. सूर्य के सबसे निकट ग्रह कौन सा है?
10. किस ग्रह को भोर का तारा तथा शाम का तारा कहा जाता है?

उत्तर- 1.मंदाकिनी 2.शनि 3.गेनीमेड 4.अरुण 5.शनि 6.वरुण 7.पृथ्वी 8.शुक्र 9.बुध 10.शुक्र

अमित शर्मा, भौतिक विज्ञान प्रवक्ता
रावमावि सरावां
जिला- यमुनानगर
हरियाणा

पहेलियाँ

1) इक पंछी जो उड़ न पाए,
तीन हैं जिसके पेट।
बैरी देख गर भाग न पाए ,
वह तो जाता लेट।

(2) रंग है मेरा हल्का भूरा,
कीटों को मैं खाती ।
20 मार्च को याद करें सब ,
बोलो क्या कहलाती ।

(3) शाकाहारी इक पंछी,
चोंच है जिसकी लाल ।
हरी मिर्च जिसको अति भाए
तुरत उसे लो पाल ।

(4) फर-फर-फर-फर उड़ता जाऊँ ,
लोगों की चिट्ठी पहुँचाऊँ।
मै पंछी हूँ एक निराला,
चार अक्षर से बनने वाला ।

उत्तर 1- शुतुरमुर्ग 2-गौरय्या 3-तोता 4-कबूतर

डॉ. कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव
राव गंज कालपी, जालौन
उत्तर प्रदेश

सब मिल हँसते-गाते

बिटिया रस्सी कूद रही है,
गेंद खेलता रिमझिम ।
गुनगुन कैरम खेल रहा है,
माही बैठा गुमसुम।
गुल्लो टीवी देखे जिसमें,
नाच रहा है भालू।
उधर वैष्णवी भून-भून कर,
खुश हो खाती आलू।
अंश किताबों में उलझा है,
पढ़ता अपना पाठ।
गरमागरम पकौड़े खाता,
खूब ओम के ठाठ।
आसी अपने लैपटॉप में,
लगी हुई चुपचाप।
और शिवांगी बना रही है,
चटनी आलू चाप।
तितली के सँग खेल दौड़ती,
उधर नैंसी प्यारी।
ऋषभ सींचते फव्वारे से,
हरी-भरी फुलवारी।
है संयुक्त परिवार हमारा,
खुशियाँ खूब मनाते।
हर दिन उत्सव जैसा होता,
सब मिल हँसते गाते।

श्याम सुन्दर श्रीवास्तव कोमल
व्याख्याता- हिन्दी
अशोक उमा विद्यालय, लहार
भिण्ड, मप्र

लालच बुरी बला

एक बार एक गरीब बुढ़िया ने अपनी सुन्दर व मनोहर पुत्री को धूप में सूख रहे चावलों की पक्षियों से रखवाली करने को कहा। वह रखवाली के लिए बैठी ही थी कि एक सुनहरे पंखों वाला विचित्र कौआ वहाँ आया और चावल खाने लगा। चावल खाते-खाते कौआ उस लड़की की ओर देख कर हँस रहा था। बालिका बोली कि हम बहुत गरीब हैं। हमारे चावल मत खाओ। इतना सुनकर कौआ कहने लगा कि तुम सूर्य निकलने से पहले मेरे घर पर आ जाना। गाँव से निकलकर एक पीपल के वृक्ष के ऊपर मेरा घर है। मैं तुम्हें इन चावलों के पैसे दे दूँगा।

लड़की अगली सुबह वहाँ पहुँचती है, तो पीपल के वृक्ष के ऊपर उस कौए के सोने से बने महल को देखकर हैरान हो जाती है और बहुत खुश होती है। कौए ने सोने की खिड़की से झाँककर उसे देखा और कहा कि बताओ बालिका तुम सोने, चाँदी, ताँबे में से किस धातु से बनी सीढ़ी से ऊपर आओगी? बालिका ने कहा कि मैं तो ताँबे की सीढ़ी से ही ऊपर आ जाऊँगी। लेकिन कौए ने उस बालिका के लिए सोने की सीढ़ी उतारी और उस सीढ़ी से वह ऊपर आई। कौए ने कहा कि ये तीन पेटियाँ हैं, इनमें से तुम्हारे चावलों के मूल्य की जो तुम्हें लगती है, उस पेटी को ले लो। तब बालिका ने सबसे छोटी पेटी उठाई। घर जाकर जब उसने पेटी को खोला, तो वह बालिका उस पेटी में बहुत बहुमूल्य हीरे जवाहरात और धन देखकर हैरान हो जाती है। उस दिन से वह धनवान हो गई।

उसी गाँव में एक दूसरी लोभी बुढ़िया भी रहती थी और उसे जब इन सभी बातों का पता चला, तो उसने भी अपनी बेटी को वैसा ही करने को कहा। फिर जब कौए ने कहा कि बताओ तुम कैसी सीढ़ी से ऊपर आओगी तो उस लड़की ने कहा कि मैं बहुत धनी हूँ और मुझे तो सोने की सीढ़ी से ही ऊपर आना है लेकिन कौए ने उसके लिए तांबे की सीढ़ी उतारी। बाद में उस कौए ने उसे तीन पेटियाँ दीं और कहा कि इनमें से जो भी पेटी लेना चाहो वो ले लो। लेकिन उस लालची लड़की ने तो सबसे बड़ी पेटी उठाई। फिर जब वह घर जाती है और जा कर पेटी खोलती है तो एक बहुत ही भयंकर काला साँप निकलता है। इस प्रकार से उस लोभी बुढ़िया को लोभ का फल मिल जाता है।

नीलम देवी
प्रवक्ता संस्कृत
स्वतन्त्रता सेनानी चौधरी जगराम रावमा विद्यालय, गिगनाऊ
खंड-लोहारु, जिला-भिवानी, हरियाणा

आया वसंत

आया लुटाता प्यार वसंत।
लाया खुशियाँ अपार वसंत।

खेतों में सरसों है पीली।
कहीं हरी है धरा छबीली।
टेसू सुर्ख खिले मुस्काते,
धरती लगती बड़ी रँगीली।

अमराई में आम्र पुष्प के,
लगाता है अंबार वसंत।
लाया खुशियाँ अपार वसंत।

झूम रहीं हैं नन्ही कलियाँ।
सुरभित हैं सारी ही बगियाँ।
सुमनों का संसार देखकर,
उड़ान भरते मधुप तितलियाँ।

नव पल्लव से धरती माँ का,
करता नवल श्रृंगार वसंत।
लाया खुशियाँ अपार वसंत।

मौसम हो जाता है ताजा।
गीत सुनाते कोयल राजा।
चिड़िया मैना कहती नाचें,
वन में बजा खुशी का बाजा।

आओ मिलकर मौज मनाएँ,
आया गजब त्योहार वसंत।
लाया खुशियाँ अपार वसंत।

उदय मेघवाल 'उदय'
मधुसूदन स्कूल के पास, कमधज नगर,
निम्बाहेड़ा, जिला- चित्तौड़गढ़, राजस्थान-
312601

कार्यक्रम

नौनिहालों को सुरक्षित माहौल देने की कवायद

सत्यपाल सिंह

हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद पंचकूला के तत्त्वावधान में स्कूल स्तर पर विद्यार्थियों की सुरक्षा एवं बचाव पर आधारित ओरियंटेशन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन 4 से 6 जनवरी 2022 तक किया गया जिसमें प्रदेश के प्रत्येक जिले से एक बीआरपी व एक अन्य अध्यापक को प्रशिक्षित किया गया। पंचकूला के 'शिक्षा सदन' में आयोजित इस कार्यक्रम में विभाग के विशेषज्ञों के अलावा अन्य विभागों से भी विषय-विशेषज्ञों को आमंत्रित किया गया था। इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य विद्यालय आने वाले विद्यार्थियों की सेफ्टी एंड सिक्योरिटी से था, जिसमें अनेक बिंदुओं पर चर्चा की गई।

जो विद्यार्थी विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने आते हैं, उनकी सेफ्टी एंड सिक्योरिटी शिक्षा विभाग, विद्यालय प्रबंधन एवं समाज सभी का कर्तव्य बनता है। उस विषय के प्रति हम सभी सजग रहें, ये सभी बातें प्रशिक्षण कार्यक्रम में सिखाई गईं। इसमें आपदा प्रबंधन, सुरक्षा की दृष्टि से डिजाइन ऑफ स्कूल बिल्डिंग, सड़क-सुरक्षा, प्राथमिक चिकित्सा एवं उपचार, सामाजिक और भावनात्मक अधिगम, पॉक्सो-एक्ट, ड्रग्स, नशा, साइबर बुलिंग, साइबर क्राइम, संक्रामक रोगों के लक्षण एवं बचाव, मिड-डे मील बनाते समय विद्यार्थियों की सुरक्षा, विद्यार्थियों की सुरक्षा में एसएमसी सदस्यों का योगदान एवं भूमिका, जेजे एक्ट, कोविड-19 से सुरक्षा, साइबर अपराध, बाल मजदूरी रोकथाम, ड्रॉपआउट विद्यार्थी कारण एवं समाधान, मनोविज्ञान एवं सामाजिक परिस्थितियाँ आदि विषयों पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इस प्रशिक्षण को प्राप्त करके सभी मास्टर ट्रेनरों ने अपने-अपने जिलों में जिले के सभी क्लस्टर से एक-एक एबीआरसी व एक अध्यापक को ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षण दिया। वर्तमान में ये प्रशिक्षित मास्टर ट्रेनर अपने-अपने क्लस्टर के अधीन आने वाले सभी विद्यालयों के अध्यापकों को ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षित कर रहे हैं ताकि इस प्रशिक्षण का लाभ विद्यार्थियों एवं उनके अभिभावकों व समाज के लोगों तक पहुँच पाए तथा वे अपने अधिकारों, सुरक्षा, सावधानी एवं बचाव के प्रति जागरूक हो पाएँ। हरियाणा प्रदेश के सभी अध्यापक इस प्रशिक्षण कार्यक्रम को बहुत ही रुचि एवं गंभीरता से ले रहे हैं। इस कार्यक्रम की मॉनिटरिंग शिक्षा विभाग के सेफ्टी एंड सिक्योरिटी संबंधित कोऑर्डिनेटर मोनिका शर्मा, राजवंत कौर व देवेंद्र सिंह के अतिरिक्त अन्य अधिकारी एवं विषय-विशेषज्ञ भी कर रहे हैं। ये सभी अधिकारी क्लस्टर स्तर पर दी जा रही ऑनलाइन ट्रेनिंग में प्रशिक्षण प्राप्तकर्ता अध्यापकों के साथ वार्तालाप करके ट्रेनिंग के बारे में फीडबैक ले रहे हैं। सभी अध्यापक ट्रेनिंग से संबंधित अपने-अपने विचार व सुझाव अधिकारियों से साझा कर रहे हैं। यह शिक्षा विभाग की बहुत ही शानदार पहल है, जिसके अंतर्गत विद्यालय एवं घर पर हमारे देश के भविष्य निर्माता विद्यार्थियों का जीवन खुशहाल एवं दुर्घटनामुक्त बनेगा तथा वे अपने अधिकारों एवम कर्तव्यों को भी जान पाएँगे।

इस कार्यक्रम के बारे में डीपीसी अंबाला सुधीर कालड़ा ने बताया कि यह प्रशिक्षण बेहद जरूरी व उपयोगी है। विद्यालयों में विद्यार्थियों को भयमुक्त और सुरक्षित वातावरण देना सबकी सामूहिक जिम्मेदारी है। उन्होंने बताया कि जिले के सभी अध्यापकों का न केवल ऑनलाइन शिक्षण, ऑउट ऑफ स्कूल बच्चों की शिक्षा और परीक्षा भय जैसे विषयों पर उन्मुखीकरण किया जाएगा, बल्कि पॉक्सो-एक्ट, जुवेनाइल जस्टिस एक्ट, विद्यार्थियों की सुरक्षा में पुलिस की भूमिका, आपदा प्रबंधन और बदलते परिवेश में कोरोना व अन्य बीमारियों से बचाव बारे भी प्रशिक्षण दिया जाएगा। पूरी ट्रेनिंग के दौरान सभी अध्यापकों, बीआरपी एवं एबीआरसी ने बड़े ही उत्साहपूर्ण तरीके से भाग लिया।

मौलिक मुख्याध्यापक, राकवमा विद्यालय डहीना
जिला- रेवाड़ी, हरियाणा

हिंदी प्राध्यापक चावला ने तैयार की डिजिटल ई-व्याकरण

अतिरिक्त निदेशक सम्वर्तक सिंह ने किया विमोचन

राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय,क्योड़क, ज़िला कैथल में कार्यरत हिन्दी प्राध्यापक डॉ. विजय कुमार चावला ने इन्फोग्राफिक और इंटरेक्टिव तकनीक से हिन्दी डिजिटल ई-व्याकरण तैयार की है, जिसका विमोचन बीते दिनों विभाग के अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन) सम्वर्तक सिंह ने किया।

डॉ. चावला ने इस ई-व्याकरण के बारे में 'शिक्षा सारथी' को जानकारी देते हुए बताया कि विद्यार्थी सम्बंधित विषय पर जैसे ही क्लिक करेंगे, वे उस विषय की पठन सामग्री पर पहुँच जाएँगे। विद्यार्थी परीक्षा के दिनों में इन्फोग्राफिक माइंड मैप का प्रयोग करते हुए विषय को विज्युअली रिवाइज भी कर पाएँगे। हिन्दी की ई-व्याकरण जो इन्फोग्राफिक, इटरस्टिंग और इंटरेक्टिव तकनीक से तैयार की गई है, में क्यूआर कोड को स्कैन करते ही तथा दिए हुए लिंक को क्लिक करते ही विद्यार्थी विषय को रिवाइज करने के बाद खेल-खेल में अपना स्वयं का आकलन भी कर पाएँगे।

इस डिजिटल ई-व्याकरण में हिन्दी व्याकरण के सभी पहलुओं यथा- वर्ण, शब्द, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, अव्यय, उपसर्ग, प्रत्यय, पदबंध, वाक्य, संधि,समास, रस, शब्द-शक्ति, काव्य-गुण, छंद, कारक, वाच्य, अलंकार, उपसर्ग-प्रत्यय, विराम-चिह्न आदि पर इन्फोग्राफिक, इटरस्टिंग और इंटरेक्टिव तकनीक से माइंड मैप तैयार किए हैं, जो बच्चों के लिए परीक्षा की पुनरावृत्ति में बहुत सहायक होंगे।

माननीय शिक्षामंत्री कँवरपाल ने अपने सन्देश में कहा कि डॉ. विजय कुमार चावला द्वारा आईसीटी तकनीक व उसके उपकरणों का सफल प्रयोग करते हुए हिन्दी व्याकरण को जिस तरह इन्फोग्राफिक मैपिंग के ज़रिए,क्विज़ लिंक व अन्य लिंक के ज़रिए प्रस्तुत करने का निर्णय लिया गया है, वह निःसंदेह एक प्रशंसनीय कार्य है। इस इंटरैक्टिव ई-लर्निंग सीरीज़ का प्रयोग करते हुए बच्चे अध्ययन करते हुए अंत में खेल-खेल में प्रत्येक विषय का आकलन लिंक ओपन करते ही कर पाएँगे।

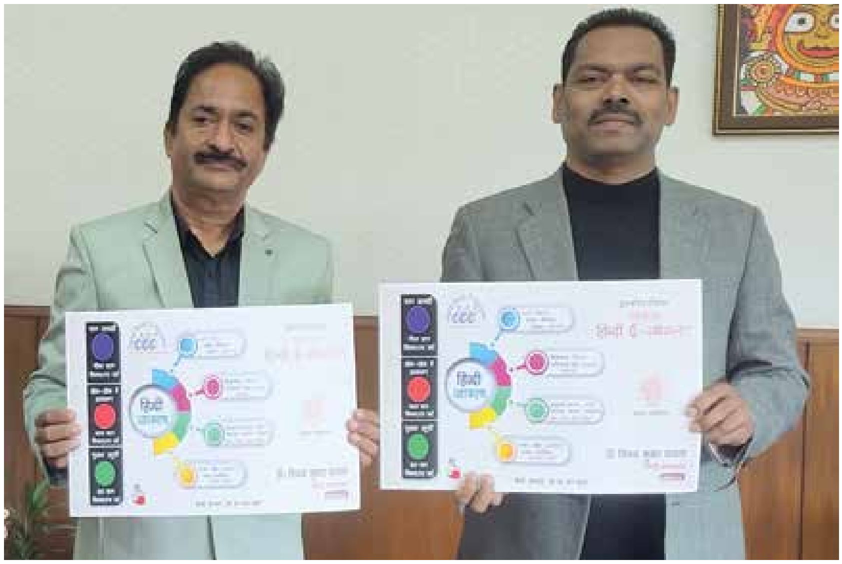

माध्यमिक शिक्षा विभाग के महानिदेशक डॉ. जे. गणेशन ने व्याकरण के लिए दिये गये अपने संदेश में कहा है किआज के डिजिटल युग में पुस्तकों का डिजिटल और स्मार्ट होना बहुत ज़रूरी हो गया है। इस सामयिक माँग की पूर्ति हेतु लेखक द्वारा आईसीटी तकनीक का प्रयोग करते हुए हिन्दी व्याकरण के विभिन्न पहलुओं को जिस तरह इन्फोग्राफिक और इंटरेक्टिव तकनीक से तैयार करने का निर्णय लिया है,वह निःसंदेह एक काबिले तारीफ़ कार्य है। अतिरिक्त निदेशक सम्वर्तक सिंह ने लेखक के इस नवाचारी प्रयास की तारीफ़ करते हुए कहा कि हिन्दी डिजिटल ई-व्याकरण सभी के लिए सुलभ एवं निःशुल्क शैक्षिक संसाधन है।

लेखक ने इस ई-व्याकरण के बारे में 'शिक्षा सारथी' को बताया कि इसमें हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के पाठ्यक्रम का पूरा ध्यान रखा गया है। इसके अतिरिक्त यह प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तथा विद्यार्थियों की वार्षिक परीक्षा के लिए बहुत लाभकारी सिद्ध होगी। इस ई-व्याकरण को सुव्यवस्थित एवं सुनियोजित रूप में सचित्र प्रस्तुत करने की भी कोशिश की गई है। इसे बच्चे अपने मोबाइल, लैपटॉप, कंप्यूटर, लैंग्वेज लैब, टैब तथा स्मार्ट वर्चुअल क्लासरूम आदि के माध्यम से प्रयोग कर सकते हैं और अपने व्याकरण का ज्ञान बढ़ा सकते हैं। हिन्दी डिजिटल ई-व्याकरण के विमोचन के समय शिक्षा विभाग की उप निदेशक इंद्रा बेनीवाल, डॉ. विजय चावला हिन्दी प्राध्यापक तथा डॉ. नीलू चावला मौजूद रहे।

-शिक्षा सारथी डेस्क

विलक्षण प्रतिभा का धनी है आनंद

हरियाणा के राजकीय विद्यालयों में प्रतिभा की कोई कमी नहीं है। इन विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्र-छात्राएँ शिक्षा के क्षेत्र में जहाँ अग्रणी हैं, वहीं कला के क्षेत्र में भी पीछे नहीं हैं। इसी क्रम में आज हम आप को स्वतंत्रता सेनानी चौधरी जगराम राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय गिगनाऊ, खंड लोहारू, जिला भिवानी के बारहवीं कक्षा के प्रतिभाशाली छात्र आनन्द नेहरा की कलात्मक अभिरुचि एवं उसके पेंटिंग के प्रति समर्पण भाव की बात करेंगे। आप यह जानकर आश्चर्य व्यक्त करेंगे कि इस बाल कलाकार में कला का कितना अथाह भंडार है।

सच पूछो तो झुप्पा कलाँ निवासी आनंद नेहरा, कला के क्षेत्र में पूर्ण समर्पित छात्र है। वह चित्रकला एवं स्कैच बनाने में माहिर है। वह द्विआयामी व त्रिआयामी सहित सभी प्रकार की पेंटिंग बनाकर सभी को मंत्रमुग्ध कर देता है। आनंद के हाथों में सचमुच जादुई कलाकारी है।

वह अपनी पेंटिंग में ब्लू बॉल पैन, पैंसिल और कलर पैंसिल का ही प्रयोग करता है। जब वह पेंटिंग बनाता है, तो उसके बनाए चित्र ऐसे लगते हैं कि मानो ये अभी बोल उठेंगे। उसकी पेंटिंग और स्कैच में केवल कला का ही प्रदर्शन नहीं है, अपितु उसके द्वारा बनाई गई पेंटिंग्स में समाज की कुरीतियों के प्रति उसका भाव, प्रकृति के प्रति उसका लगाव और सामाजिक प्रेरणा के संदेश भी छिपे हुए हैं। अपनी तूलिका के माध्यम से जब वह चित्रकारी करता है तो लगता है, मानो माँ सरस्वती उसे आशीर्वाद दे रही हो।

कला के प्रति इसी समर्पण भाव के कारण आनंद नेहरा ने विद्यालय स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक कला प्रतिस्पर्धाओं में अपनी इस विधा से अपने विद्यालय एवं अपने माता-पिता का नाम रोशन किया है। इसी क्रम में उसे अनेक पुरस्कार एवं सम्मान भी मिल चुके हैं।

इस वर्ष शिक्षा विभाग हरियाणा द्वारा आयोजित राज्यस्तरीय एडवेंचर कैंप टिक्कर ताल (पंचकूला) के समापन समारोह में कार्यक्रम अधिकारी श्री रामकुमार एवं उनकी टीम ने आनंद की कलाकृतियों को देखकर उसे भविष्य का कलाकार बताया और उसकी पीठ थपथपाई।

इस वर्ष 2021-22 में अंतरराष्ट्रीय गीता-महोत्सव कार्यक्रम में भी आनंद नेहरा का प्रदर्शन सराहनीय रहा और जिला शिक्षा अधिकारी भिवानी श्री अजीत सिंह जी ने स्वयं अपने हाथों से उसे सम्मानित किया। हरियाणा सरकार के प्रोत्साहन कार्यक्रम लीगल लिटरेसी में भी इस वर्ष 2021-22 में आनंद ने पेंटिंग स्पर्धा में, अपने जिले भिवानी में दूसरा स्थान प्राप्त किया। हरियाणा के गुरुग्राम में आयोजित ऑनलाइन पेंटिंग प्रतियोगिता में भी आनंद राष्ट्रीय स्तर पर तीसरे स्थान पर रहा।

विद्यालय की प्राचार्या, श्रीमती विजय प्रभा के शब्दों में- आनंद में कला के प्रति इतना समर्पण-भाव देखकर मैं अभिभूत हूँ। मेरा हमेशा से यही मानना है कि ग्रामीण अंचल में प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है, जरूरत है तो केवल उन्हें तराशने की। हम हरियाणा-सरकार द्वारा आयोजित प्रत्येक कार्यक्रम में विद्यालय के छात्रों को उनकी रुचि के अनुरूप भाग लेने के लिए प्रेरित करते हैं। आनंद बहुत प्रतिभावान छात्र है, यदि उसे सही मार्गदर्शन व संसाधन उपलब्ध हों तो वह कला के क्षेत्र में अपना नाम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अवश्य रोशन करेगा।

आनंद की कला के साथ-साथ शिक्षा में भी गहरी रुचि है। वह बड़ा होकर एक प्रशासनिक अधिकारी बनना चाहता है। स्वयं आनंद के शब्दों में मुझे बचपन से ही रंगों के प्रति लगाव रहा है और प्राथमिक स्तर से ही मैं अपनी कक्षा में चित्रकला प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पाता था। जब भी मैं किसी प्राकृतिक दृश्य को देखता हूँ, तो उसका चित्रण मेरे मस्तिष्क में चित्रित हो जाता है। उसे अपनी तूलिका के माध्यम से कैनवास पर उतार कर ही मेरे मन को संतुष्टि मिलती है।

सचमुच ही कला को समर्पित, ऐसे छात्र अपने देश के भविष्य निर्माता होते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि इनकी प्रतिभाओं को पहचान कर इनका सही मार्गदर्शन किया जाए। तभी इनकी कला का सही सदुपयोग हो पाएगा, अन्यथा ये मूर्धन्य कलाकार गर्दिश में कहीं खो जाएँगे।

नीलम देवी, प्रवक्ता संस्कृत,
स्वतंत्रता सेनानी चौ. जगराम रावमावमा
विद्यालय गिगनाऊ
खंड-लोहारु, जिला- भिवानी, हरियाणा

बनाये रखें सकारात्मकता

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज के बिना मनुष्य की और मनुष्य के बिना समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती। ये दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। परन्तु आज कोरोना महामारी ने चारों ओर भय का वातावरण बना दिया है जिससे कहीं न कहीं सामाजिकता दरकने लगी है। कोरोना की पहली लहर ने मानसिक तौर पर दूसरी लहर ने मृत्यु के आँकड़ों के रूप में और अब तीसरी लहर ने फिर से मानव-मस्तिष्क को झकझोर कर रख दिया है।

इस महामारी के दौर में शिक्षा विभाग हरियाणा द्वारा अनेकानेक प्रयासों, एजुसैट प्रसारण समय-समय पर आयोजित ऑनलाइन क्विज, परीक्षाओं आदि अनेकानेक माध्यमों से बच्चों से किसी न किसी रूप में जुड़कर उनका मनोबल बनाए रखने में कड़ी मेहनत की है। सभी अध्यापकों ने अपनी-अपनी कक्षा के बच्चों से मोबाइल के माध्यम व्यक्तिगत रूप से जुड़कर उनका मनोबल बढ़ाने का भी सराहनीय प्रयास किया है। अपितु मैं तो व्यक्तिगत तौर पर यह मानती हूँ कि सभी अध्यापकों ने शिक्षा विभाग की योजनाओं और बच्चों के बीच में एक बहुत मज़बूत कड़ी का काम किया है।

आज़ादी का अमृत महोत्सव के अन्तर्गत अनेकानेक गतिविधियों कहानी लेखन, कविता लेखन, चित्र बनाना पोस्टकार्ड बनाना के माध्यम से अभिव्यक्ति के अवसर दिए, जिससे बच्चे तकनीकी रूप से और भी सक्षम हो पाए, क्योंकि लगभग एक डेढ़ वर्ष से बच्चे मोबाइल के माध्यम से अनेकानेक प्रतियोगिताओं में भाग लेकर तकनीक को भी जान पाए। कुछ समय विद्यालय में आकर कक्षा में बैठकर पढ़ने का भी आनंद लिया और ऑनलाइन अनेकानेक माध्यमों से अपना पाठ्यक्रम भी पूरा किया।

जैसा कि आप जानते हैं कि मनुष्य की सबसे अच्छी मित्र पुस्तकें ही होती हैं। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए कक्षा 1-8 में पढ़ने वाले बच्चों हेतु जनवरी 2022 से सौ दिवसीय रीडिंग अभियान शुरू किया गया है। जिसमें अनेकानेक गतिविधियों को सम्मिलित करते हुए कक्षावार साप्ताहिक कैलेंडर तैयार किया गया है। जिसमें बच्चे शिक्षक, माता-पिता, साथियों भाई-बहनों या परिवार के अन्य सदस्यों की मदद से रीडिंग कर सकते है। प्रत्येक गतिविधि के लिए एक सप्ताह निर्धारित किया गया है।

राज्य के समस्त जिलों में इससे संबंधित दिशा निर्देश भेज दिए गए हैं। पठन अभियान में सभी बच्चों अभिभावकों, अध्यापकों को शामिल होना चाहिए। सभी के सहयोग से इस कार्यक्रम को सफल बनाया जा सकता है। स्कूल के सभी बच्चे एक गतिविधि को पूरे सप्ताह अपने माता-पिता, भाई बहनों, मित्रों व परिवार के अन्य सदस्यों की सहायता से करेंगे जिससे वं उनके अनुभवों से बहुत कुछ सीख सकते हैं।

मैं तो यही कहना चाहूँगी कि परिस्थितियाँ कैसी भी हों, अपने जीवन में सकारात्मकता को बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए। स्वयं को मजबूत करते हुए हर हाल में खुश रहने का प्रयास करना चाहिए जो कि कठिन तो है परन्तु असंभव नहीं।

सीमा वधवा
कनिष्ठ विशेषज्ञ
एससीईआरटी हरियाणा, गुरुग्राम, हरियाणा

2022

फरवरी माह
के त्यौहार व विशेष दिवस

1 फरवरी- भारतीय तटरक्षक दिवस
2 फरवरी- विश्व आर्द्र भूमि दिवस
4 फरवरी- विश्व कैंसर दिवस
5 फरवरी- बसंत पंचमी, सर छोटू राम जयंती
12 फरवरी- राष्ट्रीय उत्पादकता दिवस
13 फरवरी- भारत कोकिला सरोजिनी नायडू जयंती
16 फरवरी- गुरु रविदास जयंती
19 फरवरी- छत्रपति शिवाजी जयंती
20 फरवरी- विश्व सामाजिक न्याय दिवस
21 फरवरी- अन्तरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस
22 फरवरी- विश्व चिंतन दिवस
24 फरवरी- केंद्रीय उत्पाद शुल्क दिवस
26 फरवरी- महर्षि दयानंद सरस्वती जयंती
28 फरवरी- राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

'शिक्षा सारथी' का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।
मेल भेजने का पता-
shikshasaarthi@gmail.com

Art & Craft

Essential for Overall development of children

Dr. Himanshu Garg

Creativity goes hand in hand with imagination! Creativity is something that needs to be unleashed, explored, and expressed. Kids are filled with joy and wonder. Their imagination is endless and it is the responsibility of parents and educators to motivate and support them. With a little bit of direction and motivation, children can achieve anything they want. Art is the perfect tool to help them channelise their energy and efforts towards something that can help build a lot of character.

Recently, I have conducted a one week art & craft virtual workshop for the students of Govt. P. G. College, Jind. The experience of that workshop was really amazing. The students were so curious to learn something new. They have learnt 17 types of Innovative art & crafts in the workshop including Golden Tree, Christmas Tree, Pot Painting, Glass Painting, Candle Making & Candle Decoration, Festival Banner, Flower making etc. I noticed the Students used to join the class 15 minutes before, attended whole sessions so attentively and did not want to miss even the last minute class. Some of them wanted to learn for their pleasure and some wanted to become financially independent. They also shared their creativity during the class. Really glad to see their interest, charm & dedication in this area. Glimpses of that workshop are shared with you all here.

As a professor, mother and Art & Craft trainer, I personally experienced the benefits of doing Art & Craft. Did you know that arts and crafts are essential for the overall development of kids? Yes, it's absolutely true. The most important thing is the recognition of arts and crafts and the many benefits it can have for all of us!

By introducing arts and crafts to the kids and involving them in such activities in schools, we will invest in building their cognitive, physical, and social development. Let's know the benefits of doing Art & Craft in Early

Childhood Education. The benefits are divided into various categories

Physical Benefits

Development of fine motor skills and coordination

To do Arts and crafts, the kids usually require to use both hands. Arts and crafts activities consist of moving fingers and hands which in return will help them in developing fine motor skills and coordination. Kids enjoy the activities to the fullest. Arts and crafts for kids help them develop faster and become more skilled in other activities such as tying their shoes, dressing, and many more.

Enhances dexterity

From drawing dots and lines, cutting with scissors, to even simply tearing a piece of paper are all quite demanding tasks in terms of dexterity. Arts and crafts activities can enhance the children's dexterity and agility. With the enhancement of fine motor skills and much practice, a child's manual dexterity, artistic skills, and speed will also increase.

Improvement of hand-eye coordination

Engaging in activities related to arts and crafts from a very young age leads to a tremendous improvement in hand-eye coordination. It will help kids in spacing out words or forming letters.

Social Benefits

Helps in socializing

Arts and crafts for kids create a common space for all the juniors who have similar interests. Most of them love creating things with their hands and are also interested in seeing what other kids have created. Age doesn't affect creativity. The only thing that matters is how innovative they are. Children are curious by nature, they will approach another one to see what the other has drawn by all means with great interest. Participating with other students in art & craft classes, gives children a chance to interact with others while sharing common interests. The process of arts and crafts also strengthens parent-child bonding. Hence Crafts help them socialize a lot.

Learn to appreciate art and culture

Experience in design, art & crafts enable them to reflect critically on their own work and those by others. They learn to act and think like designers and artists, working intelligently and creatively. Through arts and craft, kids learn to value and appreciate artifacts and images across cultures and times. They also learn about the preservation of heritage through art. Art and Craft both reflect and shape our history, and contribute to the culture, creativity and wealth of our nation.

Sharpens skills of decision making

A child will learn to make correct and effective decisions by facing and solving artistic challenges. This helps to develop a problem-solving attitude, which in turn, will help them in the future.

Improves Confidence and Self-Esteem

Art can improve confidence and self-esteem in a multitude of ways. For one, children will gain confidence in expressing themselves through the medium of art. Being able to channel thoughts and feelings into their artwork will, in turn, help them feel more confident in communicating how they are feeling. Moreover, art involves peer assessment and feedback. Receiving positive or constructive feedback can only boost self-esteem and allow children to recognise their own strengths and accomplishments.

Cognitive Benefits

Enhances memory and visual learning - A child learns about new colors and shapes through arts and crafts as well as gains familiarity with various figures and patterns. Activities like learning guitar, jewelry making, etc. need visualization and memorization of complex designs in mind.

Self-Expression and Managing Feelings

As with all creative pursuits, arts and crafts activities are a fantastic creative outlet. Through art, children can express themselves freely, and sometimes without realising! Subconsciously, children will be expressing their inner thoughts and feelings through their artwork. Art is a great way for children to reflect and manage their emotions. The process of turning a thought into a tangible piece of art is a brilliant way of allowing us to manage our internal thoughts and feelings, moulding them into something real. Moreover, art and creative pursuits are proven to have a positive impact on mental health and wellbeing.

Arts and crafts help them express their viewpoints

Children have a sharp mindset to

absorb what they see and learn new things every day. They may look for different, more visual aspects to express their emotions and thoughts because of their shy nature. Arts and crafts for kids are the safest environment where they can shape in any way they want by using any materials they like. This is exactly where dear parents, you will be getting a better insight into how your kid would be feeling or what they would be thinking by encouraging them to participate in arts and crafts activities.

Organizational Skills

Children use a number of tools during art and craft. They learn to manage and organize all the things properly to do all the activities. Being organized is, of course, a fantastic quality to have and can make everyday life that tiny bit easier.

Arts and crafts for kids improve their vocabulary

Arts and crafts for kids allow them to expand their vocabulary. Through these activities, they will learn the names of different tools, shapes, measurements and become aware of different patterns, shades of colors, and figures. With Art & Crafts, Students can improve reading and related word recognition skills.

Craft for kids brings out their creativity and productivity all at the same time

Creativity and Imagination are interrelated. Arts and crafts for kids are a great way for them to turn that endless imagination into something more productive and creative. Be it materials, colors, shapes, or activities, children can choose just anything they like. This allows them to explore different options and pick the most enjoyable activity as per their interest. This way, they might even discover a fun hobby that can later become a lucrative career.

Art and craft for kids encourage neural connections

Art is an activity that can employ all the senses—sight, sound, touch, smell, and taste—depending on the activity. Children's brain synapses fire away as they experiment and create by squishing paint between their fingers, mixing colors & materials, or drawing from imagination or what they see in front of them.

Arts and crafts not only help in the above traits but also in boosting academic performance. Above all these are activities filled with lots of fun for children. Experts say- it is "the most important" way to help them "grow" and "develop" for children aged 3 – 8. It's important for them to practice it both at school as well as at home. Art and crafts for kids and for adults are equally important. Art & Craft has vast benefits so in this article we will focus on the benefits for early childhood only. Whether it's painting, drawing or sewing, Art and crafts play an important role in our lives. Creativity underpins key skills such as problem solving, thinking outside of the box is a key skill and can help to overcome a range of problems and challenges.

Dear Parents & Teachers, Art & Craft will ensure our kids grow up well-rounded. We never know, it might be the path to a career later in life. Even if it isn't, who knows, your child might be the next Picasso? Please make sure that your children spend time with the innovative ideas and access to the art & craft for sometime daily.

Keep crafting and stay happy!

Assistant Professor
Govt. College for Women, Jind
himanshujind@yahoo.com

Life through the Eyes of a Mathematician

Narita

Mathematics is in every aspect of our lives; from a mother child relationship to a person's every needs. The emotional distance between a mother-child can be minimised, i.e. there exist a Delta>0 for which we have Epsilon>0. A mother always tends to a child, who is a limit to her.

Every person has ∞ desires to fulfil despite knowing the fact that ∞ in not a real number. Human being generally behave like a modules function as they react positively or negatively according to the circumstances or people around them; whenever a person in looking forward to a positive outcome from a situation he takes the positive values otherwise he chooses to remain indifferent by taking the negative values.

Friends are like limitless functions separately but together they become a constant function. Students resemble 'unlike terms' of algebra, that is, until the lunch break. The cafeteria then becomes the limit point of enjoyment as there exist a lot of points in that interval of time.

A group of friends is like an integral domain because of the absence of zero divisors which implies there exists two friends such that (1st friend*2nd friend) =0 as their case for each other makes them an identity together.

Teachers are synonymous with integration as they increase the capabilities of a constant student with their knowledge and magnify a student's with their knowledge and magnify a student's capabilities.

The most important lesson Mathematics teaches us is the will to never give up as every problem has a solution.

PGT Mathematics
GMSSS Garhi Bolni
Rewari

Practices and Challenges for ICT in Education

Teacher's Perspective

"If we teach today as we taught yesterday, we rob our children of tomorrow." quoted by famous educationalist John Dewey. Days are gone when teacher used to make students read and write languages and understand some basic concept. Currently, our super-intelligent young generation needs to be taught to learn, unlearn and then relearn be things. As far as role of Information and Communication Technology (ICT) in education is concerned, it is not only about the use of technology but also about sharing knowledge and information and communicating effectively. ICT helps in building learning communities and creating a healthy learning environment in schools. Rapid development in Information and Communication Technologies (ICT) provides many digital resources including Digital Learning Materials (DLM) and Learning Management System (LMS). ICT helps in E-learning, that is learning program making use of an information network viz. the internet, an intranet (LAN) or extranet (WAN) for course delivery, interaction with learners and facilitation of content that may be offered offline and online.

ICT Practices

Information and Communication Technology (ICT) is the field of interest for experimentalists that have played a pivotal role in educational practices. ICT deals with generation, collection and distribution and administration of technological resources (Sukanta Sarkar, 2012). It is related to hardware, software and media for processing and transmission. It finds diverse applications in defense industry, transportation, trade and management, health, education, agriculture, remote sensing and entertainment as well. It is based on a learner-centered approach with an effective teaching-learning experience between teacher and learners. There are various ICT tools viz. television, mobile phone, computer, laptop, tablets and many other hardware and software applications, that enables teachers and learners to engage in class-room activities as well as enables them to access and modify the educational resources (Nicoleta Du□a et al, 2015 & Anamika Pandey et al, 2020). ICT helps to make a teacher's teaching effective and enable students to learn with broad learning retentively.

Digital resources include Digital Learning Modules (DLM) and learning Management Systems (LMS) to use ICT artifacts in teaching-learning process (Said Assar, 2019). DLM includes YouTube video clips, illustrations, simulations, interactive assessment resources and educational animation modules that support the learning of dynamic content by providing direct feedback. Through animation, difficult concepts are visualized to students to make their learning fun oriented. Learning Management System (LMS) is a large scale software package that enables the management and delivery of learning content and resources to students. Through it, learning content may be assessed and administered

anytime and anywhere. Moreover, learners can learn at their pace and can even evaluate their improvement spontaneously. One of the best LMS is MOODLE (Modular Object Oriented Dynamic Learning Environment) that is a software package designed to help educators create quality online courses. It is a system for managing and tracking of the involvement of learners with the assistance of a database. MOODLE advocates student centered learning by providing a platform that empower learners to construct their knowledge through discussions and enhancing their thinking skills.

Blended Learning

Blended Learning is a model that embraces technology, teacher pedagogy and learners. It is the novel concept that covers the advantages of offline classroom teaching and ICT supported both offline and online learning. It intersects the spheres of offline and online teaching with computer assisted learning. It includes group discussion, peer group interaction, exchange of ideas, online assessment, webinars, virtual classrooms and virtual laboratories as well(Lalima et al, 2017).Blended learning frames teaching learning process that incorporates both face to face teaching with incorporation of ICT.

Challenges for ICT- Teacher's Perspective

In my personal experience, ICT has revolutionized the field of education and is at its zenith particularly, in the pandemic time. It has made the assess to education easier, yet from teacher's perspective, there are some challenges that need to be taken care of by educational planners and administrators for successful implementation of technology in education.

Lack of Knowledge of ICT

From a teacher's perspective, a major issue in implementation of ICT in education is the insufficient knowledge and experience of ICT in teaching contexts. As we can never make bricks without straw, teachers without adequate knowledge of technology cannot implement ICT in their lessons. Many teachers have low software competencies and they don't have any idea about how to blend ICT tools with pedagogical knowledge to support student learning. Administrators and planners themselves may not be fully competent in the use of technology, with vast understanding of technical, financial, and social dimensions of ICT.

Non-availability of Technical Support

Sometimes technical support is not available in time and a teacher who wants to use technology find themselves handicapped in the absence of technical help. Teachers sometimes may also face problems related to access and user-friendliness of the e-content.

Non-availability of E-content in Hindi Language

One of the barriers in utilization of available E-content is that available E-content is in English language that fulfills only English medium schools. The government schools in Haryana are mostly Hindi medium schools where e-content in Hindi language is required.

Non-availability of Infrastructure

There may be lack of infrastructural facilities to teachers that hinders the use of ICT in teaching. The teacher sometimes feels the inadequacy of digital boards, computer systems, uninterrupted power supply and functioning laboratories with proper ventilation as well, which sometimes blocks their dynamism.

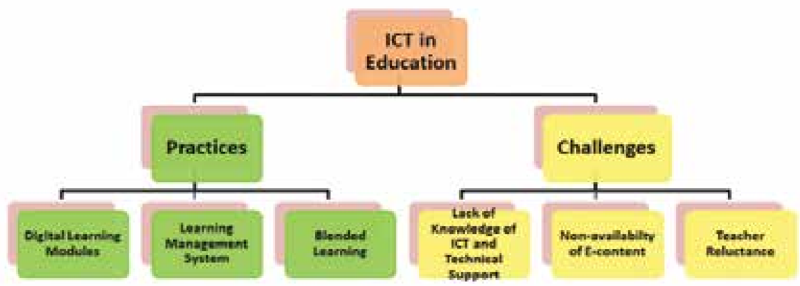

Teacher Reluctance

Teacher reluctance is also a serious concern as sometimes teachers are not willing in their own interest to implement technology in their traditional teaching as this seems a little inconvenient to adopt a change in their teaching strategies. Teacher's hard mindedness is also a big choke point for the free flow of ICT in the educational system. They may feel a little insecure due to the assumption that technology will replace their need in future. A planner and administrator can only plan the things and administer at the level of implementation, but it is the ultimate liability of the teacher to adopt innovation.

Recommendations and Conclusions

From the teacher's viewpoint, here are some recommendations that can be employed to increase the employment of ICT in teaching-learning process that will be beneficiary for our education system (Divya Bansal, 2016, Jo Shan Fu, 2013).

Capacity Building Programmes

Since quality education is the prime goal of every nation, there must be focus on training teachers to achieve mastery in introducing creative and innovative pedagogical approach. Promoting ICT infrastructure and creating institutional networks will definitely improve the standard of education. At present, E-Content development programmes need to be accelerated. There is dire need of the original educational E-content (radio lectures, You-tube content, Interactive website-content) developers in educational institutions as it takes a lot of time and toil. For all these script writers, programmers, website-developers, content authors are in high demand. There should be a separate educational body for E-content development to meet the requirement. Intellectual property rights protection is also a big challenge that needs to be taken care of. Teacher's problems are related with access and user-friendliness of the content which need to be resolved by programmers and content developers. Technical support must be there for proper installation and execution of technical software and hardware equipment. Maintenance of ICT devices is also a big issue that requires a technical staff support system.

Community Collaboration

Non-availability of rooms and buildings with proper electricity, air and ventilation must be resolved by community collaboration. Apart from Grant-in-aids from government, donations from local bodies (municipal committees, panchayats), donations from individuals (politicians or celebrities) belonging to particular areas, fund-raising campaigns can also resolve the concerns related to infrastructure availability.

Teacher Encouragement

Encouragement connects ability with willingness to work and it improves the performance of an individual. Best-practices of the teachers using ICT in their pedagogy must be recognized. In my personnel view, trend-setter teachers must be motivated either by appreciation certificates, awards and fringe benefits as well.

Conclusively, there are many factors that force us to depart from traditional teaching-learning methodology and adopt novel ICT in education. Haryana state has done extraordinary work towards implementation of ICT in education and is also committed to follow the same practices in future. As there is always a scope for improvement, some more efforts viz, enough budget allocation for ICT purposes, monitoring of proper utilization of budget allocated for ICT tools, better infrastructure/facilities, more teacher-training programmes, motivation to teachers implementing ICT tools in their teaching can add more shine to the efforts of the Department of School Education,

Haryana to achieve the goal of "quality education for all and always".

Acknowledgements: Support from DIET, Mattershyam, Hisar and NIEPA, New Delhi is gratefully acknowledged.

References

1. Anamika Pandey, Arun Kumar Pandey, ICT in Teaching and learning: An Indian Scene, Journal of Critical Reviews,Volume 7, Issue 9, (2020) 861-865.
2. Divya Bansal, Benefits of ICT in Education, Bhartiyam International Journal of Education & Research, Volume 5, Issue II, (2016) 1-8.
3. Jo Shan Fu, ICT in Education: A Critical Literature Review and Its Implications, International Journal of Education and Development using Information and Communication Technology(IJEDICT), Vol. 9, Issue 1, (2013) 112-125.
4. Lalima, Kiran Lata Dangwal, Blended Learning: An Innovative Approach, Universal Journal of Educational Research 5(1): 129-136, 2017, DOI: 10.13189/ujer.2017.050116.
5. Nicoleta Duta , Oscar Martínez-Rivera, Between theory and practice: the importance of ICT in Higher Education as a tool for collaborative learning, Procedia-Social and Behavioral Sciences, Volume 180 (2015) 1466 – 1473.
6 Saïd Assar, Information and Communications Technology (ICT) and Education. International Encyclopedia of the Social & Behavioral Sciences, Elsevier, (2015) 66 – 71
7. Sukanta Sarkar, The Role of Information and Communication Technology (ICT) in Higher Education for the 21st Century, The Science ProbeVolume 1 No. 1 (2012) 30-40.

Rajender Sharma
Assistant Professor, Mathematics
DIET Mattershyam, Hisar,
Haryana

To Thee I Salute, O Holy Sun

To thee I invoke!
O, Holy sun!
We are serious not making fun,
As long as thou glow,
High up in the sky above,
Saplings with no nature's freak,
Else they become pale 'n' weak,
While in the clouds you sneak,
So lovely is thy hide 'n' seek
When blows a cool breeze,
We fear lest we may freeze.
Is there some technical glitch?
When thy warmth doesn't us reach.
No one dare twist thy wrist;
Who the hell! The clouds or mist.
Really, with thy beams so warm and cozy,
We feel sleepy and dozy.
Colours to things though you imparts
To flowers, and different arts,
Yet the people with nature malignant,
Give the credit to some pigment;
That is the way the world goes,
To have forgotten rainbows.
Tell me some sacred pulpit,
Wherefrom I could touch thy feet,
As a newly enrolled recruit,
To thee I bow O, Phoebus!
To thee I salute,
To thee O,Holy Sun!
To thee I salute!

Virender Singh
HM
GHS Girawar , Rohtak

Guru Ravidas : A Great Inspiration for Students

Babita Yadav

"Prabhuji Tum Chandan Hum Pani"......, the composer of this famous devotional song, Guru Ravidas was one of the greatest saint - poets of the bhakti movement. He was born on the full moon day of Indian month of Magh in the 15th century in Varanasi in a lower caste family engaged in leather work. His Jayanti is celebrated every year on Magh Purnima with great zeal and devotion. A sea of devotees from different parts of the country visit his temple in Varanasi to worship, recite prayers and take a holy dip in the Ganga on this day.

Guru Ravidas lived in an era of cruelty, corruption, caste discrimination and ignorance. Most of his younger life was spent in the company of sufi saints and sadhus. He became a great humanist, socio - religious reformer and poet who laid great emphasis on social unity and equality.

In his verses and songs, he has written about God, nature, guru and universe. He believed in the worship of Sagun, the God with form and attributes but later he moved towards the worship of the Nirgun, the God without form and attributes. He wrote his verses in the language of the common folk so as to make it communicable to all. Meerabai, the devotee of Lord Krishna, considered him as her guru. In one of his verses, he says that humanity is being eaten by the disease called caste. The same creator has made all human beings with the same clay. He wrote a verse on Hindu-Muslim unity and said that the temple and mosque are one and there is no dispute between Ram and Rahman. He has described that God is one though called by different names as Rama, Krishna or Kareem and all religions are nothing but different ways to reach one supreme power of the universe. This shows that he was a great advocate of secularism. In his famous verse, he says that a man does not become superior by taking birth in an upper section of the society but by his thoughts, virtues and doings. His works have a universal appeal. That is why; his works are included in many Holy Scriptures. Panchvani text of the Dadupanthi tradition in Hinduism includes various poems of Ravidas. So significant was the impact of his preaching that his 40 devotional songs have been included in the Shri Guru

Granth Sahib by the fifth Sikh Guru Shri Arjun Dev ji. He gave a lesson to the society by uttering the famous words "Man changa to kathotimei Ganga" while expressing his inability to take a holy dip in the Ganga River. These words mean that if the heart is pure then Ganga River will be in your earthen pot. He was against caste discrimination and sufferings prevalent in the society at that time. So he envisioned an ideal society where people will live in harmony without any kind of discrimination. He named it as 'Begampura' - a place with no pain, no taxes, no terror, no worry, no suffering and where everyone will be free to visit any place without any ban. A detailed description of this society is given in the Guru Granth Sahib.

Guru Ravidas is followed and worshipped by people of all religions. A new religion in his name called Ravidassia religion has been formed in the 21st century to promote unity and class equality.

Students should get inspiration from his life and follow his preaching to work for humanity and peace and form a just society where every person is equal in dignity. As said by Guru Ravidas in one of his verses that success comes from focusing on one task at a time and not by taking many tasks in one go, the students should set a single goal and work on it with full devotion to achieve success. He has proved by his intellect that a person becomes great by his 'karmas' or good doings irrespective of his class, caste or religion. A person can never be called inferior by taking birth in a lower caste.

His preaching served as a guiding force in eradicating the ill practices prevalent in the society of medieval times and is of great significance even in the present scenario.

PGT English
G.S.S.S Rewari, Haryana

The Mountain Temple

Wrapped in a blanket of pristine, pure snow,
The temple lit with earthen lamps glows.
As I sit alone on the wintry, cold mountainside,
I hear the bells from the valley chime in rhyme.
The crisp, cold air carries the sound with clarity.
In my lonely soul I feel a rare, sacred sanctity.

Fir forests around laden with fresh powder snow,
As if in reverence bend their boughs and bow.
I fold my frozen hands to pray as icy winds blow.
As the evening 'aarti' tintinnabulation in a crescendo grows,
Darkness falls & the sky twinkles with stars the night sprinkles,
Yet the distant bells reassure me with their gentle tinkle.

Dr. Deviyani Singh
deviyanisingh@gmail.com

Teacher Trainings

A Value AdditionLearning While You Teach

Smt. Rupam Jha

Every professional needs to upgrade their skill sets from time to time. This is done to keep up with the times. Teachers too fall in this category and ought to enhance their skills for better planning and organization.

Helping educators through the method of constant learning, in turn making them better learners. Broadening of outlook is important and these trainings make this possible. Collateral benefit includes a knowledge brush up, a refresher, an invigorative mind opener. This infuses enhanced enthusiasm while imparting of learning outcomes.

Teacher trainings take the organization closer to its goal that is academic success as well as overall personality development of the child.

Technological advancement is dynamic and so is the instructional mode. Curriculum modifications may be there too. This is especially true is current times, like for example the syllabus being cut. Also those proficient in ICT were well versed in conducting online classes. So teacher trainings can adapt as per the need of the hour.

Peer group interaction too takes place and an exchange of notes means sharing of valuable experience among practitioner. A planned approach to professional growth and development is what teacher trainings are all about.

Imbibing the approach to constant learning and upgrading one's skills is the very idea of professional development. Teacher trainings do just that, they add to the already existing knowledge bank, maybe giving it a new twist.

There is a saying about learning being a lifelong process and the more you learn the more you grow. Hence trainings become important as it enables you to keep the zest for learning alive.

A pre- service teacher training program may be very good but can never prepare an individual for a lifetime of classroom interaction. A lot of administrative tasks too are carried out by the teaching community so in –service trainings are a preparation for all that as they allow for peer group interaction. In inset teacher trainings, professionals can be taught the usage of Action Research to improve their own practices.

Teachers have to take on leadership tasks and also the role of counselors and trainings make them better equipped for such tasks. Poor performance in exams can be dealt with in trainings as can the demands of other aspects of the job. Exchange of notes of how to deal with the reticent learner can teach the practitioner ways to make every child learn.

Today, trainings are the need of the hour. In an ever changing scenario, what with new methodology being introduced regularly and online classes or hybrid classes being the need of

the hour, trainings make the educators more adaptable to change.

A teacher currently working in a recognized school is eligible for in-service teacher trainings. Motivation is one psychological factor that allows for giving one's best shot and that is enhanced during trainings. It is the attitude of teachers that undergoes a change when a catalyst such as training is induced. Their mind-set changes and they become more effective.

In any organization, change is constant. So in order to be able to face new challenges, administrators must device strategic trainings so that professionalism may incur among teachers. The ability to handle teenage problems, the issues of the impressionable age maybe some of the issues which a teacher as a counselor has to handle. Trainings can incorporate such matters so as to enable the teacher to address such issues professionally.

Capacity building programs attended by a professional can add brownie points in a self assessment Performa. These days Refresher courses are available for teachers, and maybe done Online. Workshops too are organized in the Offline mode where learning by doing is done. Presentations done by

participants are part of training programs, making the training interactive. Just passive listening will not arouse the interest of the participants. Interactive sessions are the practice and norm.

Teacher trainings are short- term education modules, focusing on a specific area but the idea is always to enhance learning outcomes by way of better curriculum impartation. On this platform teachers learn to come down to the level of the students. This is very important as it helps teachers to connect with students. Maybe empathize is not the right word but definitely, the relation between the teacher and taught improves. The equation between them must be correct and teacher trainings are facilitators for the same.

Teachers bring into practice, what they learn during trainings, with immediate effect. Even in the duration of the training, teachers have first hand experiences to share and ideas to contribute.

Subject Expert
SCERT Haryana, Gurugram

Compendium of Academic Courses After +2

INTERIOR DESIGNING

Introduction

The course consists of developing concepts, spaces, research and managing projects. Interior designing is the art of designing interior furniture, furnishings, design patterns, colour combinations to meet the demand of customized solutions.

Courses

1. Diploma in Interior Design.
2. Bachelor of Design (B. Des) Interior Design
3. Bachelor of Science (B. Sc) Interior Design
4. Bachelor of Interior Design (BID)
5. Master of Science (M. Sc) Interior Design
6. Master of Science (M. Sc) Interior Design & Resource Management

Eligibility

10+2. Some colleges / universities select students based on their performance in aptitude test. The candidate's skills in Mathematics, science, drawing skills, etc. are tested.

Institutes/Universities

1. School of Interior Design, CEPT, Ahmedabad, Gujarat. Design Discipline, PDPM IIITDM Jabalpur, Madhya Pradesh.
2. Utkal University of Culture, Bhubaneswar, Odisha.
3. SNDT Women's University, Mumbai, Maharashtra
4. Meera Bai Institute of Technology, New Delhi.

LIBERAL STUDIES

Introduction

Liberal studies involves the multidisciplinary study of subjects ranging from Humanities to, Sciences, Social Sciences and Arts. The aim of the course is to develop critical thinking.

Courses

1. BA/BSC Liberal Arts
2. MA Liberal Studies
3. Doctor in Liberal Studies

Eligibility

10+2 or equivalent examination

Institutes/Universities

1. PDP University, Gandhinagar
2. University of Delhi
3. Jawaharlal Lal Nehru University, Delhi

LIBRARY SCIENCES

Introduction

Library Science course is the study of managing, maintaining and preserving records and information. Information of various types is sourced and classified for users with the help of record management preserved and disseminated with the help of technology.

Courses

1. Certificate Course in Library Science.
2. Diploma in Library Science.
3. Bachelor of Lib & Info Science (BLISc)
4. Bachelor of Library science (BLSc)
5. Masters in Lib & Info Science (BLISc)
6. Masters in Library science (BLSc)

Eligibility

10+2 (any stream) for Certificate & Diploma Courses

Institutes /Universities

1. Jai Narain Vyas University
2. University Of Rajasthan, Rajasthan
3. Nalanda Open University, Patna, Bihar.
4. Medical Library Association of India (MLAI),
5. AIIMS, New Delhi offers a diploma course in Medical Librarianship.
6. Bachelor of Library & Information sciences
7. U.P. RajarshiTandon Open University, Allahabad, U.P.
8. YashwantraoChavan Maharashtra Open University, Nashik, Maharashtra. Kota Open University, Kota, Rajasthan.
9. Indira Gandhi National Open University, New Delhi (http://www.ignou.ac.in)
10. Dr.B.R. Ambedkar Open University, Telangana

MONTESSORI TEACHING

Introduction

This course is meant for teaching in nursery schools/ playschools/ preschools/ kindergartens on doing early childhood education/nursery teacher training course or Montessori teacher training course. After doing these training courses, there are avenues for becoming entrepreneur in this field of education by setting up schools.

Courses

1. Indian Montessori Training Course (IMTC)
2. The Online Montessori Training Course (OMTC)
3. Nursery Teacher Training - N.T.T.
4. Nursery Primary Teacher Training - N.P.T.T.
5. Primary Teacher Training - P.T.T.

Montessori Training Institutes

1. Indian Montessori Centre, Chennai, Bangalore
2. All India Institute of Child Care and Education, New Delhi

Eligibility

Should be at least 18 years of age Passed in 10th

Accreditation/Recognition

The Association Montessori International (AMI) and American Montessori Society (AMS) accredit training centres throughout the world and offer internationally recognised AMI Diploma Courses. In India, not all are

accredited to AMI but are recognized by Department of Education.

Online Montessori Training Institutes

1. www.indianmontessoricentre.org
2. www.montessorilive.net
3. www.montessoritraining.net
4. www.montessori-icme.com
5. www.montessori.edu

NUTRITION AND DIETETICS

Introduction

Nutrition and Dietetics is mainly associated with the promotion of good, clean health habits which can help to live a quality life. The focus is to educate, motivate and counsel people for a better work routine and healthy food selection. The study of nutrition involves - understanding of the components of the food, harmful reactions, digestion and body fitness.

Courses

1. Diploma in Dietetics and Public Health Nutrition (DDPHN)
2. BSc (Food & Nutrition)
3. MSc (Food & Nutrition)
4. MSc (Food & Fermentation Technology)
5. MSc – Home Science (Specialization in food science & nutrition)
6. PG Diploma in Food & Nutrition

Eligibility

10+2 examination in any relevant stream

Institutes/Universities

1. National Institute of Nutrition, Hyderabad
2. University of Bombay, Mumbai
3. SNDT Women's University, Mumbai
4. University of Health Science, VijayawadaA P
5. Jawahar Lal Nehru Technological University, Hyderabad
6. Central Food Technology & Research Institute, Mysuru.
7. University of Mysore, Mysore.
8. Tamil Nadu GD Naidu Agricultural University, Coimbatore
9. All India Institute of Hygiene and Public Health, Calcutta
10. Indira Gandhi National Open University, New Delhi (http://www.ignou.ac.in/)

PHYSICAL EDUCATION

Introduction

Physical Education is an interdisciplinary course that covers the physical knowledge of sports, exercises or physical activities. It teaches care, development of body of a person or a group of people through training and management skills.

Courses

1. B. Sc. (P.E., H.E. & S.)
2. B.P. Ed.
3. M.P. Ed.
4. Ph. D.

Eligibility

10+2 in any stream

Institutes/ Universities

1. Allahabad University, Allahabad
2. Andhra University, Visakhapatnam
3. Annamalai University, Chennai
4. Banaras Hindu University, Varanasi
5. College of Physical Education, Pune
6. Indira Gandhi Institute of Physical Education & Sports Sciences, New Delhi
7. JamiaMilliaIslamia University, New Delhi
8. Kurukshetra University, Kurukshetra
9. Lakshmibai National College of Physical Education, Thiruvananthapuram
10. Lakshmibai National University of Physical Education, Gwalior
11. Manipur University, Imphal
12. North Eastern Hill University, Shillong
13. University of Mysore, Mysuru
14. University of Pune, Pune
15. University of Rajasthan, Jaipur
16. Utkal University, Bhubaneswar

I'M DUST

Though I'm trampled daily,
Still I rise from roads gaily.
Made of fine mettle,
In calm, I quietly settle.

Earth's wispy white powder,
Rusty red dust, Mars covers.
Even Planets & Space isn't devoid,
My Cosmic cousins dwell between voids.

I sneak & fit in everywhere,
Dancing on shafts of sun kissed air.
Rich, don't like kids drawing on Chevrolets,
So I stick with those who toil & sweat.

In drawing rooms they find me irritating,
But long have I been lying & waiting.
For flicks of fine feathered plumes,
That swipe me from decorated rooms.

Then in your agitated sneeze,
Dust Devils ride the stormy breeze.
I play hide 'n seek & tease,
And shimmer on old coats' sleeves.

End of days when you're laid to rest,
I will not desert you like the rest.
But we will lay down quietly,
Done with being sprightly.

I'll coat you in a fine cloak of gossamer,
As we finally join together in the nether.
Let the gales gently whisper our name,
Dust unto dust from whence you came.

Dr. Deviyani Singh
deviyanisingh@gmail.com

Amazing Facts

1. **The most popular Twizzler candy flavour is strawberry.**
2. The deepest mine in the world is the East Rand mine, which goes to a depth of about 3,585 metres.
3. Native Indians have been known to paint their doors blue, which they believe keeps the bad spirits out.
4. Before air conditioning was invented, white cotton slipcovers were put on furniture to keep the air cool.
5. It would take about fourteen and half million notes of currency to build a mile high stack.
6. Chinese Crested dogs can get acne.
7. Colgate faced a big obstacle marketing toothpaste in Spanish speaking.countries. Colgate translates into the command "go hang yourself."
8. The cross bow was invented by the Chinese and records of its usage goes back to as far as the Three Kingdom Period (220 a.d.-280 a.d.).
9. It is estimated that by the end of 2000, there has been 142,600 tonnes of gold mined in the world.
10. One-third pound stalk of broccoli contains more vitamin C than 204 apples.
11. The Flintstones cartoon was the first thirty-minute cartoon to be aired during prime time.
12. The abbreviation Xmas for the word Christmas is of Greek origin. Since the word for Christ in the Greek language is Xristos, which starts with the letter "X," they started putting the X in place of Christ and came up with the short form for the word Christmas.
13. China has more English speakers than the United States.
14. The Ancient Greek women made a type of cheek blush by painting their cheeks with herbal pastes which was made out of crushed berries and seeds.
15. Herbert Hoover, who was the 31st president of the United Stated, turned over all the Federal salary checks he received to charity during the 47 years he was in government.
16. Macadamia nuts are not sold in their shells because it takes 300 pounds per square inch of pressure to break the shell.
17. Japan has approximately 200 volcanoes and is home to 10% of the active volcanoes in the world.
18. Before 1928, yo-yos used to be called bandalores in the United States.
19. The only South East Asian country that has never been colonized by a Western Power is Thailand.
20. The shortest war in history was between Zanzibar an England in 1896. Zanzibar surrendered after 38 minutes.
21. Irish Wolfhound dogs have a short lifespan and live about 7-8 years.
22. When Queen Elizabeth I of England died she owned over 3,000 gowns.
23. Female alligators lay about 40 eggs that hatch in 60 - 70 days.
24. The nickname for a Japanese businessmen is "Salarymen."
25. Emus cannot walk backwards.
26. The external tank on space shuttles is not painted. It is the only part of the shuttle that is lost after launch, so it is not necessary to worry about metal corrosion.
27. Thirty percent of all bingo players are under the age of 35.
28. Infants spend more time dreaming than adults do.

https://greatfacts.com/

GK

1. The word bucolic refers to pleasant/positive aspects of: Human mood; Religious authority/duty; Food digestion; or Countryside/life? **Countryside/life**
2. Name the mythological Greek hero King of Salamis, son of Telamon and Periboea, and cleaning product? **Ajax**
3. With blue, yellow, green and orange lines, which nation's busiest metro has stations including Rosemont, Snowdon, Saint-Michel, Monk, and McGill? **Canada**
4. Brownian motion is what sort of movement: Random; Infinitely straight; Ever-decreasing circles; or Spiraling? **Random**
5. Which of these is not an 'Ivy League' university: Columbia, Cornell, Stanford, Dartmouth College, Harvard, Yale? **Stanford**
6. The tunica intima, or intima, is the inner layer of what in the human body: Arteries/veins; Bones; Muscles; or Hair? **Arteries/veins**
7. Which, if any, of these words is/are spelled incorrectly: Seize; Caffeine; Receive; Deceit; Receipt? **None**
8. Abloy, dimple, skeleton, Zeiss, master, and DND are types of what? **Keys**
9. The Austrian metalworking company Kraftfahrzeuge Trunkenpolz Mattighofen founded in 1934 is nowadays better known as a manufacturer of what? **Motorcycles**
10. When writing 'a millionth' in decimals (using numbers and a decimal point/dot), how many zeros are between the decimal point and the figure 1? **Five**
11. What two letters do not appear in any symbols of the official list of chemical elements? **J and Q**
12. What emergency service derives its name from Latin meaning 'walking'? **Ambulance**
13. Toothpaste, turtle, oxblood, oilie/oily, ade, and swirly are types of what? **Marbles**
14. What single word does the French 'Clair de lune' mean in English? **Moonlight**
15. What colour/color traditionally is the Michelin Guide for hotels/restaurants? **Red**
16. What is the least densely populated country or dependency in the world? **Greenland**
17. As at July-August 2012 what site boasted the biggest McDonalds outlet in the world with 1500 seats? **London 2012 Olympics**
18. The term 'brogued' technically refers to a shoe with: Perforations; Leather soles; Layered uppers; or Between 8-12 lace-holes? **Perforations**
19. Name the four basic types of human/animal bodily tissue? **Connective, Muscle, Nervous, Epithelial**
20. 'Normal' or Gaussian distribution in a graph is informally called a what shape (two word answer)? **Bell curve**

https://www.businessballs.com/quiz/quiz-113-general-knowledge/

आदरणीय संपादक महोदय,

सादर नमस्कार।

जनवरी माह का अंक पढ़ा। 'शैक्षणिक भ्रमण-आयोजन में सबसे आगे हरियाणा' पढ़कर मन हर्षोल्लास से भर गया। हरियाणा शिक्षा विभाग की अनूठी पहल- शैक्षणिक भ्रमण के बारे में जानकर मन आनन्दित हो गया। अतिरिक्त निदेशक अमृता सिंह जी के लेख 'अगले सत्र में और बढ़ेगा शैक्षणिक भ्रमण का दायरा' पढ़कर तो मेरी खुशी दोगुनी हो गई। 'शैक्षणिक भ्रमण ने बदली बेटियों की सोच' बहुत ही प्रेरणादायक लगा। 'विद्यालय विभाग हरियाणा को सुशासन पुरस्कार' लेख पढ़कर मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। बाल-सारथी व अंग्रेजी की अन्य रचनाएँ भी बहुत ही शिक्षाप्रद थीं। निःसंदेह यह अंक बहुत ही रोचक व ज्ञानवर्धक रहा। शिक्षा सारथी के समस्त संपादक-मंडल को बहुत बहुत बधाई एवं साधुवाद।

कविता
प्राथमिक अध्यापिका
राप्रा विद्यालय सराय अलावर्दी
गुरुग्राम, हरियाणा

आदरणीय संपादक महोदय,

नमस्कार।

'शिक्षा सारथी' का पिछला अंक बहुत अच्छा लगा। विद्यालयों को स्मार्ट क्लासरूम का तोहफा बहुत ही अच्छी शुरुआत है। स्मार्ट शिक्षण मे यह बहुत उपयोगी साबित होगा। इस दौर मे सभी स्कूलों को स्मार्ट और हाईटेक होना अति आवश्यक हो गया है। स्मार्ट क्लास इस समय सभी स्कूलों की माँग बन गई है। गतांक में शैक्षणिक भ्रमणों के बारे में बेहद रोचक जानकारी मिली। ये कार्यक्रम बच्चों के लिए काफी लाभकारी साबित हो रहे हैं। धन्यवाद।

सुदेश सहरावत
प्राथमिक शिक्षक
राकप्रा पाठशाला
शामलो कलां, जींद, हरियाणा

ऋतु बसन्ती

ऋतु बसन्त का दौर, देख छायी हरियाली।
करती कोयल शोर, बौर भी लगती डाली।।
पीले-पीले रंग, सभी मोहित हैं होते।
सरसों का है फूल, खेत में इसको बोते।।

हरा - भरा चहुँ ओर, लगे गेहूँ की बाली।
करते पक्षी शोर, बैठती डाली-डाली।।
खुशियाँ चारों ओर, मोरनी पँख फैलाती।
तोता मैना रोज, बाग में वह इठलाती।।

पुष्पों की मुस्कान, सभी के मन को भाती।
करे बसन्ती शोर, हवायें सर-सर आतीं।।
खिलते फूल पलाश, मनों को लगता प्यारा।
होली बनते रंग, खेलते हैं जग सारा।।

प्रिया देवांगन प्रियू
राजिम, जिला - गरियाबंद
छत्तीसगढ़

RNI NO: HARBIL/2012/52385

POSTAL REGD NO: HR/AB-102/20-22

आया है ऋतुराज

आया है ऋतुराज अब, खिली प्रकृति चहुँ ओर।
धानी चूनर ओढ़कर, धरती हुई विभोर।।
धरती हुई विभोर, संग लेती अँगड़ाई।
हुआ शिशिर का अंत, प्रकृति देखो मुस्काई।।
कहता कवि वागीश, सभी का मन हर्षाया।
खिला-खिला परिवेश, बसंती मौसम आया।।

आया मधु बसन्त ये, हरियाली चहुँ ओर।
नई कोपलें खिल रहीं, विहग मचाएँ शोर।।
विहग मचाएँ शोर, प्रकृति मन सबका हरती।
धानी चूनर ओढ़, सजी दुल्हन-सी धरती।।
हृदय मुदित 'वागीश', बसंती चोला भाया।
भौरें गाएँ गान, मधुर ये बसंत आया।।

बलबीर सिंह वर्मा 'वागीश'
शिक्षक
राप्राप्रा मोहम्मदपुरिया
खण्ड- रानियां, सिरसा, हरियाणा

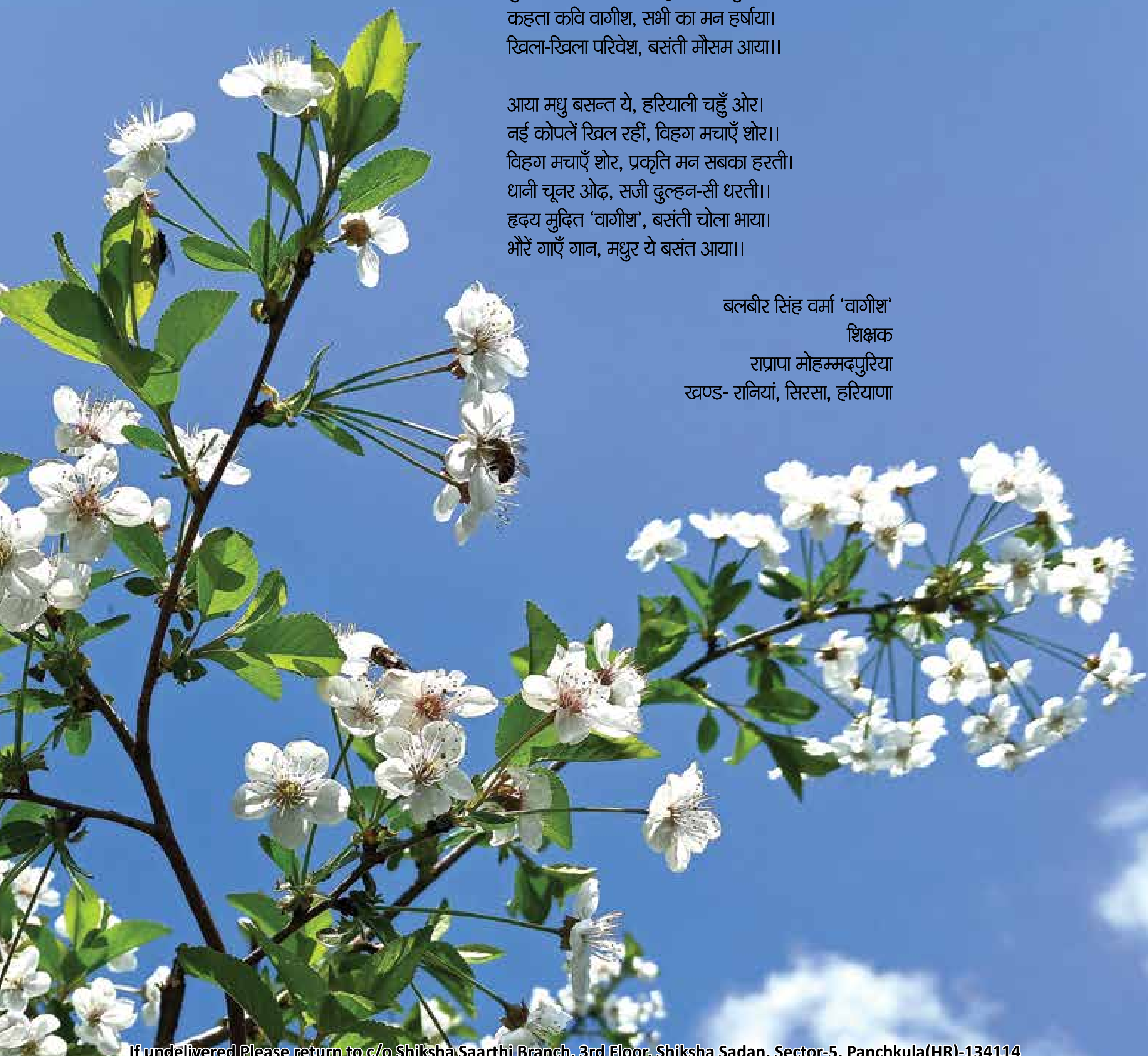

If undelivered Please return to c/o Shiksha Saarthi Branch, 3rd Floor, Shiksha Sadan, Sector-5, Panchkula(HR)-134114